॥ ओ३म् ॥

विजयेश्वर पाकेट जन्त्री

आद्य सम्पादक
स्व. ज्यो. आप्ताभ शर्मा

कार्यालय संस्थापक
स्व. काशीनाथ ज्योतिषी

किं पिबन्ति मम पादरसं मुनयः सुधां विहाय ज्ञातुमिदं बालो हरि स्वपदं मुखे निनाय ॥



विजयेश्वर
गणित सं० 218




॥ ओ३म् ॥

सप्तर्षि सं० 5076

विजयेश्वर
पाकेट
जन्त्री

विक्रमी सं० 2057




ईस्वी सं०
2000-2001



सम्पादक
डॉ० मनमोहन ज्यो०

मूल्य 18/-

प्रकाशक
पुनीत ज्यो०

नोट : इस जन्त्री के तिथि, योग, नक्षत्रादि के समाप्ति काल पुनीत ज्योतिषी द्वारा विकासित कम्प्यूटर प्रोग्राम से किया गया है।

सनातन धर्म में आस्था

और

उच्छृंखल जीवन को तिरस्कृत करने वाले

काश्मीरी पण्ड़ित समुदाय

को

"विजयेश्वर जन्त्री"

सादर समर्पित

शुभ नाम : ______________________ गोत्र : ____________

व्यवसाय : ______________________________

निवास : ______________________________

____

☎/ फैक्स/ पेजर/ ई - मेल / वेब www. :

दृक्सिद्धान्तभास्कर, M.Sc, Ph.D (Nuclear Physics) U.S.A, F.R.A.S (London)
MA सिद्धान्त ज्योतिषाचार्य (बनारस) तीन स्वर्णपदक प्राप्त, सम्पादक
श्री मार्तण्ड पंचांग **डॉ० शक्तिधर शर्मा**
द्वारा प्रेषित विजयेश्वर पाकेट जन्त्री हेतु :-

शुभाशंसा

इक्कीसवीं शताब्दी के शुभारम्भ पर डॉ० मनमोहन ज्योतिषी द्वारा सम्पादित **विजयेश्वर पाकेट जन्त्री** को देखकर अपार हर्ष हुआ। जन्त्री का शुद्ध गणित इसे भारतवर्ष के अन्य पंचांगों के समकक्ष रखता है। ऋषि कश्यप की पावन भूमि में प्रचलित तथा पनपी धार्मिक परम्पराओं एवम् पंचांगों की सारी उपयोगी सामग्री का इसमें अनुपम संकलन है । धर्मनिष्ट काश्मीरी समुदाय विशेषकर युवा पीढ़ी के लिए यह उपयोगी सिद्ध होगी। इस उपक्रम की सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएं हैं।

शक्तिधर शर्मा

दिनांक :- 17 जनवरी 2000

(डॉ० शक्तिधर शर्मा)
सम्पादक
श्री मार्तण्ड पंचांग

विषय सूची

विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय,
बोहड़ी, द्वारा प्रकाशित
विजयेश्वर जन्त्री

प्रस्तावना

मनुष्य विस्मरणशील तथा समय परिवर्तनशील है इसी को दृष्टि में रखकर तत्त्ववेत्ता ऋषियों ने ज्योतिष शास्त्र का सृजन किया जिसका एक अंग पंचांग या जन्त्री निर्माण है। जिस प्रकार सनातन धर्म का प्रत्येक पग मनुष्य के अध्यात्म-मार्ग को प्रशस्त करता है उसी प्रकार पंचांग/ जन्त्री भी आध्यात्मिक लक्ष्य की प्राप्ति में प्रेरक एंव सहायक बनता है। पंचांग/जन्त्री मनुष्य का धर्मप्रबुद्ध के साथ ही धर्मानुशासित भी रखता है। अतः उच्छृंखल प्रवृति बनाने वाले इस भौतिक युग में इसकी उपादेयता और भी बढ़ गई है। दैनिक जीवन में इसका प्रयोग मनुष्य को नित्यप्रति सचेत एवं सतर्क रखता है और वह निश्चित समय पर समग्ररूप से कटिबद्ध रहने को उद्यत होता है।

काश्मीर में पंचांग निर्माण कब आरम्भ हुआ, इस विषय में कुछ कहना कठिन है। परन्तु पंचांग अथवा ज्योतिष से जुड़े कुछ विषयों के उल्लेख **नीलमत-पुराण, राजतरगिंणी** आदि प्राचीन ग्रन्थों में मिलते हैं। यहाँ के विद्वान काल आदि का उल्लेख ज्योतिष की परिभाषिक भाषा में करते थे जिसका स्पष्ट संकेत महान् शैवाचार्य **अभिनव गुप्त** के "भैरव स्तोत्र" से मिलता है। सप्तर्षि सम्वत् का प्रचलन भी काश्मीर के बाहर और कहीं नहीं रहा है। राजतरगिंणी में **कल्हण** ने इसे लौकिक सम्वत् की संज्ञा दी है। उपर्युक्त उल्लेखों से यही प्रमाणित होता है कि काश्मीर में पंचांग और उस से सम्बन्धित विषयों का समुचित प्रचलन था। लेखन सामग्री के अभाव में इनका प्रसार मौखिक रूप से भी होता रहा है। ग्रह स्थिति, मुहूर्त आदि का जिज्ञासु किसी भी विज्ञ ज्योतिषी से लाभान्वित होता था । वे उंगलियों या दीवार पर गणित करके तत्काल समुचित योग अथवा

ग्रहस्थिति का वर्णन करते थे। कालान्तर में इस से पंचांग/जन्त्री के गणित में भेद आने लगे जिससे संशय और मतभेदों का उत्पन्न होना स्वभाविक था। इन संशयों तथा अन्तरों को दूर करने के लिए नववर्ष आरम्भ होने से पहले ही..' विचार नाग ' के स्थान पर तर्क-वितर्क और वाद-विवाद द्वारा पंचांग/जन्त्री के गणित को प्रमाणित किया जाता था। यद्यपि पूर्व काल में काश्मीर में कई पंचांग निर्माता रहे हैं लेकिन उन सबमें स्व. **ज्योतिषी केशवभट्ट (रेणावारी)** का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अर्वाचाल काल में विजयेश्वर जन्त्री/पंचांग सब से प्रचलित एवं लोकप्रिय पंचांग रहा है। इस पंचांग का गणित आज से 218 वर्ष पूर्व से होता आया है। आरम्भ में यह ' कूचपत्री ' अथवा ' निचपत्री ' के रूप में शारदा तथा फारसी लिपि में बनती थी जिसे बाद में विजयेश्वर (आधुनिक बिजबिहारा) निवासी स्व. ज्योतिषी आप्ताभ शर्मा ने अपने अनुज स्व. श्री कण्ठशर्मा के सहयोग से पुस्तकाकार देकर प्रवर्तित किया। ज्योतिष तथा पंचांग गणित में इनका योगदान अद्वितीय रहा है पश्चात् ज्यो० आप्ताभ शर्मा के दो सुपुत्रों स्व. ज्यो० काशीनाथ और स्व. प्रेम नाथ शास्त्री इस पंचांग का सम्पादन करते रहे। विस्थापन में भी इन्होंने काश्मीरी पंडित समुदाय की संस्कृति एवं सभ्यता को जीवित रखने वाली इस धार्मिक थाती को संरक्षण देने का पूरा दायित्व निभाया जिस से इस उथल-पुथल में भी हमारे सांस्कृतिक एवं धार्मिक अवशेष अक्षुण्ण रहे । स्व. ज्यो० काशीनाथ जी का जीवन कर्मठ जीवन था। वे गम्भीर परन्तु हास्यमिश्रित प्रकृति के थे और उनमें ज्योतिष और कर्मकाण्ड का मणि कांचन संयोग था। इन्ही के अनुज स्व. प्रेमनाथ शास्त्री वेदान्तदर्शन के ज्ञाजा, प्रतिष्ठित दैवज्ञ एवं कुशल वक्ता थे। कर्म और ज्ञान की इस युगल मूर्ति ने ही अपनी प्रखरप्रतिमा एवं परिश्रम से विजयेश्वर पंचांग/ जन्त्री को न केवल काश्मीरी पंडित समुदाय की धार्मिक संस्कृति का अभिन्न अंग बनाया अपितु अनेक मुसलमान परिवारों में भी लोकप्रिय बना दिया। च्यूंकि सन्तान परम्परा है और परम्परा को अगले तक पहुँचाने में ही मुक्ति है, इसीलिए स्व. ज्यो० काशीनाथ जी के

सुपुत्र डॉ० मनमोहन ज्योतिषी ने बड़े मनोयोग से ' **विजयेश्वर पाकेट जन्त्री** ' का निर्माण करके पितृऋण चुकाने का प्रशंसनीय कार्य किया है। इन्होंने पंचांग सम्बन्धी तिथि, योग, मुहूर्त, ग्रहचाल आदि विवरण नवीन शोधों के आधार पर संशोधित एवं परिवर्द्धित करके अधुनातन रूप में प्रस्तुत किया है। इतना ही नहीं इस जन्त्री का गणित अपने आत्मज चिरंजीवी पुनीत ज्योतिषी द्वारा विकासित कम्प्यूटर प्रोग्राम से करवा कर पितामह तथा प्रपितामह की वंशपरम्परा को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का सराहनीय कर्तव्य निभाया है और युवावर्ग के लिए एक नवीनकार्य क्षेत्र का मार्ग खोल दिया है। इस प्रकार उन्होंने सनातन की विचारधारा को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बोधगम्य और रोचक बनाया है। इस जन्त्री में शुद्ध काश्मीरी परिवेश तथा वात:वरण को ध्यान में रखकर सामाजिक परम्पराओं, रीति रिवाजों तथा लोकाचार के परिप्रेक्ष्य में पर्व-उत्सवों का समावेश है। आर्कषक रूप सज्जा तथा पाकेट साईज़ आकार ने इसे सुविधापूर्वक यत्र-तत्र साथ रखने योग्य बनाया है जिसे यह जन्त्री चलती फिरती वेधशाला (Mobile observatory) जैसी प्रतीत होगी। नई सहस्राब्दी के आरम्भ से लागू होने वाली ' विजयेश्वर पाकेट जन्त्री ' से आम जनता विशेषकर काश्मीरी पण्ड़ित समुदाय कितना लाभ उठा पाता है, इसका निर्णायक समय ही होगा लेकिन विस्थापन से विखराव में भी यह जन्त्री (सामुदायिक) केन्द्र बिन्दु बनेगी - ऐसी आशा की जा सकती है।

दिनांक :- 26 जनवरी 2000

(डॉ० जयकृष्ण शर्मा)
एम.ए.पी.एच.डी
जम्मू तवी

विजयेश्वर पाकेट जन्त्री सम्बन्धित आवश्यक निर्देश

- ➢ इस जन्त्री का गणित जम्मू के अक्षांश 32°-44', उत्तर, रेखांश 74° -54' पूर्व के आधार पर किया गया है। अतः सूर्योदय एवं सूर्यास्त भी इसी अक्षांश अर्थात जम्मू शहर का है।
- ➢ ग्रहचार का आरम्भकाल एवं दिनमान, तिथि, नक्षत्रादि के समाप्तिकाल भारतीय स्टेण्डर्ड समय (I.S.T) अनुसार दिये गये हैं।
- ➢ अन्य पंचांगों और इस जन्त्री में गुरु और शुक्र के आरम्भ एवं अस्तकाल में अन्तर हो सकता है परन्तु जम्मू-काश्मीर के लिए इस जन्त्री में कम्प्यूटर गणित द्वारा दिया गया समय ही गुरु और शुक्र के लिए प्रामाणिक है ।
- ➢ तिथि तथा नक्षत्र के समाप्ति काल देवा/प्रव्युठ के साथ-साथ A.M / P.M से भी संकेतित किये गए हैं।
- ➢ तिथि-क्षय को भी अपने क्रम पर दिखाया गया है ताकि कोई संशय न रहे।
- ➢ पंचांग सम्बन्धी नवीन शोधों को ध्यान में रखते हुए कश्मीरी परिवेश एवं वातावरण के अनुकूल बनाया गया है।
- ➢ यह जन्त्री विशेषतया कश्मीरी पण्डित समुदाय को समर्पित करना हमारा कर्तव्य है और समीक्षा के लिए आप से विनम्र अनुरोध हमारा अधिकार है।

सम्पादक

"सर्वतोमुखी अभ्युदय के लिए नित्य प्रार्थना"

✽ *सूर्योदय से पहले शय्या त्याग कर सर्वप्रथम अपने दाहिने हाथ को देख कर पढ़ें :*

कराग्रे वसति लक्ष्मी कर मध्ये सरस्वती, करमूले तु गोविन्दः प्रभाते कर दर्शनम्।

✽ *स्नान आदि से निवृत्त हो कर महा गायत्री (यज्ञोपवीत) को अभिषेक देते हुए तीन बार पढ़ें :*

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात्।।

✽ *यज्ञोपवीत को गले में फिर से धारण करते हुए पढ़ें :*

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्,

आयुष्यम् अग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीत् बलम् अस्तु तेजः।

✽ *श्री गणेश का ध्यान करते हुए पढ़ें :*

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् प्रसन्न वदनं ध्याये सर्वविघ्नोपशान्तये। अभिप्रीतार्थ सिद्धयर्थं पूजितो यःसुरैर्-अपि सर्वघ्निच्छिदे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः।

।। श्री गणेश प्रार्थना ।।

हेमजा सतुं भजे गणेशं ईशनन्दनम्

एकदन्त वक्रतुण्ड नागयज्ञ सूत्रकम् । रक्तगात्र धूम्रनेत्र शुक्लवस्त्र मण्डितम । कल्पवृक्ष रक्ष भक्त नमोस्तु ते गजाननम् ।।१।। पाशपाणि चक्रपाणि मूषकादि रोहिणम् । अग्निकोटि सूर्य ज्योति वज्र कोटि निर्मलम्

चित्र भाल भक्तिजाल भालचन्द्र शोभितम् । कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तु ते गजाननम् ।।२।। भूतभव्य हव्यकव्य भृगु भार्गवा र्चितम् । दिव्य वह्नि कालजाल लोकपाल वन्दितम् । पूर्णब्रह्म सूर्यवर्ण पूरुषं पुरान्तकम् ।। कल्पवृक्ष रक्ष भक्त नमोस्तु ते गजाननम् ।।३।। विश्ववीर्य विश्व सूर्य विश्वकर्म निर्मलम् । विश्वहर्ता विश्वकर्ता यत्र तत्र पूजितम् । चतुर्मुखं चतुभुजं सेवितुं चतुर्युगम् । कल्पवृक्ष रक्ष भक्त नमोस्तु ते गजाननम् ।।४।। ऋद्धि बुद्धि अष्ट सिद्धि नवनिधान दायकम् । यज्ञ कर्म सर्वधर्म सर्ववर्ण अर्चनम् । पूत धूम्र दुष्ट मुष्ट दायकं विनायकम् । कल्पवृक्ष रक्ष भक्त नमोस्तु ते गजाननम् ।।५।।

❊ अपने गुरुदेव को स्मरण करते हुए पढ़ें :

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु साक्षात् महेश्वरः, गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् , तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन, सर्वदेव सवरूपाय तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

नमामि सद्गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम्, शिरसा योगपीठस्थं धर्मकामार्थ सिद्धये ।।

❊ विद्या की देवी सरस्वति का ध्यान करते हुए पढ़ें :

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता, या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।

या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता, सा मां पातु सरस्वति भगवती निःशेषजाड्यापहा ।।१।।

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगदव्यापिनीं, वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।

हस्ते स्फाटिकमालिकां च दधतीं पद्मासने संस्थितां, वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ।।२।।

सरस्वती महाभागे विद्ये कमललोचने । विद्यारूपे विशालाक्षि विद्यां देहि सरस्वति ।।३।।

❋ *महालक्ष्मी का ध्यान करते हुए पढ़ें :*

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते । शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।१।।

नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयङ्करि । सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।२।।

सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि । मन्त्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।३।।

❋ *माँ जगदम्बा या इष्ट देवी का ध्यान करते हुए पढ़ें*

लीलारब्ध-स्थापित-लुप्ताखिल-लोकां, लोकातीतै-योगिभिर्-अन्तर्-हृदि-मृग्याम् ।
बालादित्य-श्रेणि-समान-द्युति-पुञ्जां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये ।।

आशा-पाश-क्लेश-विनाशं विदधानां, पादाम्भोज-ध्यान-पराणं-पुरुषाणम् ।
ईशीम्-ईशाङ् गार्ध हरां तां तनुमध्यां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये ।।

प्रत्याहार-ध्यान-समाधि-स्थितिभाजां, नित्यं चित्ते निवृत्तिकाष्ठां कलयन्तीम् ।
सत्य-ज्ञान-आनन्दमयीं तां तडित्-आभां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये ।।

चन्द्रापीडा-नन्दितमन्द-स्मितवक्त्रां, चन्द्रापीडा-लंकृत-लोला लकभाराम् ।
इन्द्रोपेन्द्रा-द्यर्चित-पादाम्बुजयुग्मां,गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये ।।

नाना-कारैः शक्ति-कदम्बै-र्भुवनानि, व्याप्य स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेका ।
कल्याणीं तां कल्पलताम्-आनतिभाजां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये ।।

मूलाधारात्-उत्थित-वर्त्ती विधिरन्ध्रं, सौरं-चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताङ्गीम् ।
स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां ताम्-अभिवन्द्यां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये ।।
आदि-क्षन्ताम्-अक्षर मूर्त्या विलसन्तीं, भूते भूते भूत-कदम्बं प्रसवित्रीम् ।
शब्द-ब्रह्मानन्दमयीं ताम्-अभिरामां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये ।।
यस्याः कुक्षौ लीनम्- अखण्डं जगत्-अण्डं, भूयो भूयः प्रादुर्-अभूत-अक्षतमेव।
भर्त्रा सार्धं तां स्फुटिकाद्रौ विहरन्तीं, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये ।।
यस्याम्-एतत्प्रोतम्-अशेषं मणिमाला, सूत्रे यत्-वत् क्वापि चरं चाप्यचरं च ।
ताम्-अध्यात्म-ज्ञानपदव्या-गमनीयां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये ।।
नित्यःसत्यो निष्कल एको जगदीशः, साक्षी यस्याः सर्गविधौ सहरणे च ।
विश्वत्राण-क्रीडन शीलां शिवपत्नीं, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये ।।
प्रातः काले भावविशुद्धिं विदधानो, भक्त्या नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः ।
वाचां सिद्धिं सम्पत्तिम्-उच्चैः शिवभक्तिं, तस्या-वश्यं पर्वत-पुत्री विदधाति ।।

या श्रीः स्वयं सुकृतिनं भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ।।
सर्वमङ्गलमङ्गले शिवे सर्वार्थसाधिके
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तु ते ।।

इन्द्राक्षी

इन्द्राक्षी नाम सा देवी देवतैः समुदाहृता गौरी शाकंभरी देवी दुर्गा-नाम्नीति-विश्रुता ।१। कात्यायनी महादेवी चन्द्रधण्टा महातपः गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ।२। नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिंगला अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रीस्तपस्विनी ।३। मेघश्यामा सहस्राक्षी, विष्णुमाया जलोदरी महोदरी मुक्त-केशी घोररूपा महाबला ।४। आनन्दा-भद्रजा नंदा रोगहंत्री शिवप्रिया शिवदूती कराली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी ।५। इन्द्राणी चन्द्ररूपा च इन्द्र-शक्ति-परायणा महिषासुर-संहर्त्री चामुण्डा गर्भदेवता ।६। वाराही नारसिंही च भीमा भैरव नादिनी श्रुतिः स्मृति-धृति-मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती ।७। आनन्दा विजया पूर्णा मानस्तोकाऽ पराजिता, भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यंबिका शिवा ।8। शिवा भवानी रुद्राणी शंकरार्ध-शरीरिणी, एतै-र्नाम-पदै-र्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता ।९। आयुर् आरोग्यम् ऐश्वर्यंसुख संपत्तिकारकम् क्षयपस्मार-कुष्ठादि-ताप ज्वर-निवारणम् ।१०।

अपराधक्षमास्तोत्र

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतितकथाः ।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं

परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ।।१।।

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया

विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् ।

तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे

कुपुत्रोद जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।।२।।

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः

परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः ।

मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे

कुपुत्रो जायेत् क्वचिदपि कुमाता न भवति ।।३।।

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता

न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।

तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे

कुपुत्रो जायेत् क्वचिदपि कुमाता न भवति ।।४।।

परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया

मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।

इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता

निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ।।५।।

श्वपाको जल्पाको भवति मुधुपाकोपमगिरा

निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः ।

तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं

जनः को जानीते जननि जपविधौ ।।६।।

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो

जटाधरी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः ।

कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं

भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ।।७।।

न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे

न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः ।

अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै

मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ।।८।।

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः

किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः ।

श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे

धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ।।९।।
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ।।१०।।
जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि ।
अपराधपरम्परापरं न हि माता समुपेक्षते सुतम् ।।११।।
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि ।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ।।१२।।

* *भगवान् विष्णु का ध्यान करते हुए पढ़ें :*

विष्णु स्तुति

अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम् ।। श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकी नायकं राम चंद्रं भजे ।। सूरजं शैशवं सत्यभा माधवं, श्रीधरं श्रीपतिं राधिका राधितम् । इन्दिरा मन्दिरम् चेतसा सुन्दरं देवकीनन्दनं नन्दजं संभजे ।। अँगनाम् अँगनाम् अन्तरे माधवो, माधवं माधमं चान्तरे णांगना । सत्यभा कल्पिते मण्डले मध्यगः, सञ्जगौ वेणुना देवकीनन्दनः ।। बालिका बालिका बाललीला लय, संग सन्दर्शित भ्रू लता विभ्रमः । गोपिका गीत दत्ता वदानः स्वयं, संजगौ वेणुना देवकी नन्दनः । जयतु जयुत देवो देवकी नन्दनोयं, जयतु जयतु कृष्णो, वृष्णिवंश प्रदीपः । जयतु जयतु मेघ, श्यामलः कोमलांगो,

जयतु जयतु पृथ्वी भारनाशो मकुन्दः ।।

।। विष्णु प्रार्थना ।।

जय नारायण जय पुरुषोत्तम जय वामन कंसारे, उद्धर मामसुरेशविनाशिन् पतितोहं संसारे । घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं, माम् अनुकम्पय दीनम् अनाथं कुरु भव सागरपारम्, घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ।।१।। जय जय देव जया सुरसूदन जय केशव जय विष्णो, जय लक्ष्मीमुख कमल मधुव्रत जयदशकन्धर जिष्णो । घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ।।२।। यद्यपि सकलम् अहं कलयामि हरे नहि किम् अपि स सत्वम् । तत् अपि न मुञ्चति माम् इदम् अच्युत पुत्रकलत्र ममत्वं । घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ।।३।। पुनर् अपि जननं पुनर् अपि मरणं पुनर् अपि गर्भ निवासम्। सोढुम् अलं पुनर् अस्मिन् माधव माम् उद्धर निजदासम्। घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ।।४।। त्वं जननी जनकः प्रभुर् अच्युत त्वं सुहृत् कुलमित्रम् । त्वं शरणं शरणा गतवत्सल त्वं जलधि विहत्रं । घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ।।५।। जनक सुता पति चरण परायण शंकर मुनिवर गीतं । धारय मनसि कृष्ण पुरुषोतम वारय संसृति भीतिम् । घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं ।।६।।

✾ भगवान् शङ्कर का ध्यान करते हुए पढ़ें :

।। शङ्कर प्रार्थना ।।

प्रणतोस्मि महादेव प्रपन्नोस्मि सदाशिव, निवारय महामृत्युं, नमोस्तु ते ।१। मृत्युंजय महादेव, पाहि मां शरणागतम्, जन्ममृत्यु-जरारोगैः, पीडितं भवबन्धनात् ।२। कर्पूर गौरं करुणावतारं संसार सारं भुजगेंद्रं हारम् । सदा रमन्तं ह्दयारबिन्द, भवं भवानी सहितं नमामि ।३। हर शम्भो महादेव, विश्वोशामरवल्लभ शिव शंकर सर्वात्मन् नीलकण्ठ नमोस्तु ते ।४। तव तत्त्वं न जानामि, कीदृशोसि महेश्वर, यादृशोसि महादेव, तादृशाय नमो नमः ।५। आधीनाम् अगदं दिव्यं व्याधीनां मूलकृन्तनम् उपद्रवाणां दलनं महादेवम् उपास्महे ।६। आत्मा त्वं गिरजा मतिः, परिजनाः प्राणाः शरीरं गृहं, पूजा ते विषयो पभोगरचना, निद्रा समाधिस्थितिः । संचारोऽपि परिक्रमः पशुपते, स्तोत्राणि सर्वा गिरो, यत् यत् कर्म करोमि देव भगवान् तत् तत् तवाराधनम् ।७। नागेन्द्र हाराय त्रिलोचनाय, भस्मांग रागाय महेश्वराय । देवाधि देवाय दिगम्बराय, तस्मै नकाराय नमः शिवाय ।८। मातङ्ग चरमाम्बर भूषणाय, समस्त गीर्वाण गणा र्चिताय, त्रैलोक्य नाथाय पुरान्तकाय, तस्मै मकाराय नमः शिवाय ।९। शिवा मुखाम्भोज विकासनाय, दक्षस्य यज्ञस्य विनाशकाय, चन्द्रार्क विश्वानर लोचनाय, तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ।१०। वशिष्ठ कुम्भोत् भव गौतमादि, मुनीन्द्र वन्द्याय गिरीश्वराय, श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै वकाराय नमः शिवाय ।११। यज्ञ स्वरूपाय जठाधराय, पिनाक हस्ताय सनातनाय, नित्याय शुद्धाय निरंजनाय, तस्मै यकाराय नमः

शिवाय ।१२। वपुष्प्रादुर्भावात् अनुमितम् इदं जन्मनि पुरा । पुरारे नैवाहं क्वचित् अपि भवन्तं प्रणतवान् नमन्मुक्तः सम्प्र त्यतनुर् अहम् अग्रे प्यनतिमान्, महेश क्षन्तव्यं तत् इदम् अपराध द्वयम् अपि ।१३। करचरणकृतं वाक् कायजं कर्मजं वा, श्रवण नयनजं वा, मानसं वाऽ पराधम् । विदितम् अविदितं वा, सर्वम् एतत् क्षमस्व, जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ।१४।

शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं

मनो बुद्ध हंकार चित्तानि नाहं, नच श्रोत्र जिह्वे नच घ्राण नेत्रे ।
नच व्योम भूमि र्न तेजो न वायुः, चिदानन्द रूपा शिवोऽहं शिवोऽहं ।।१।।
नच प्राण संज्ञो न वे पंचवायुः, न वा सप्त धतु र्न वा पंचकोशः ।।
व वाक् पाणिपादं न चोपस्थ पायुः, चिदानन्द रूपा शिवोऽहं शिवोऽहं ।।२।।
नमे द्वेषरागौ न मे लोभ मोहौ, मदो नैव मे नैव मात्सर्य भावः ।
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः, चिदानन्द रूपा शिवोऽहं शिवोऽहं ।।३।।
न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं, न मन्त्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञः ।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भुक्ता, चिदानन्द रूपा शिवोऽहं शिवोऽहं ।।४।।
न मृत्यु र्न शंका न मे जातिभेदः, पिता नैव मे नैवा माता च जन्म ।
न बन्धु र्न मित्रं गुरु नैव शिष्यः, चिदानन्द रूपा शिवोऽहं शिवोऽहं ।।५।।

अहं निर्विकल्पी निराकार रूपो, लघुत्वात् च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम् ।
न चा संगतं नैव मुक्ति र्न मेयः, चिदानन्द रूपा शिवोऽहं शिवोऽहं ।।६।।
शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं, शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं
इति श्रीमत् शङ्कराचार्य विरिचितं निर्वाणषटक् सम्पूर्णम्

शिव चामर स्तुति

ॐ अतिभीषण कटुभाषण यमकिङ्कर पटली, कृत ताडन परिपीडन मरणगम समये ।
उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन्, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ।।१।।
अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपु सञ्चय दलिते, पविकर्कश कटुजल्पित खलगर्हण चलिते ।
शिवया सह ममचेतसि शशिशेखर निवसन्, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ।।२।।
भव भञ्जन सुर रञ्जन खलवञ्चन पुरहन्, दनुजान्तक मदनान्तक रतिजान्तक भगवन् ।
गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन्, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ।।३।।
शक्रशासन कृतशासन कृतशासन चतुराश्रम विषये, कलिविग्रह भवदुर्ग्रह रिपुदुर्बल समये ।
द्विज क्षत्रिय वनिता शिशुदर कम्पित हृदये, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ।।४।।
भवसम्भव विविधामय परिपी डितवपुषं, दयितात्मज ममताभर कलुषी कृत हृदयम् ।
करु मां निजचरणार्चन निरतं भव सततं, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ।।५।।
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम्, शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम् ।।

शिव आरती

जय शिव ओंकारा स्वामी जय शि ओंकारा, ब्रह्मा विष्णु सदा शिव भोलानाथ महेश्वर अर्धगेगौरः, हर हर हर महादेव ।१। एकानन पञ्चानन राजे शिव पञ्चानन साजे, हंसासन गुरुडासन वृषभासन राजे, हर हर हर महादेव ।२। द्विभुज चार चतुर्भुज दशभुज तू सोहै, शिवजी दशभुज तूसो है तीनों एकसुरूपा त्रिभुवन मन मोहै, हर हर हर महादेव ।३। अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी शिवजी रुण्डमाला धारी, चन्दनमृगमद सुलेपन भालेशशि धारी, हर हर हर महादेव ।४। श्वेताम्बर पीताम्बर भस्माम्बर अंगे शिवजी चक्र त्रिशूल धर्ता, युगहर्ता युगकर्ता युग पालन कर्ता, हर हर हर महादेव ।५। करमध्ये करमण्डल चक्रत्रिशूल धर्ता, शिवजी चक्र त्रिशूल धर्ता, युगहर्ता युगकर्ता युग पालन कर्ता, हर हर हर महादेव ।६। तीनों एकसुरूपा अन्तरान्तरसो शिवजी अन्तरान्तरसो मनमांगतफल पावत भवसागर तरसो, हर हर हर महादेव ।७।

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् । तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ।।
आवाहनं न जानामि न जानामि पूजनम् , पूजा भागं न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर ।।
उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः ।।

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति ।

काश्मीर क्षेत्र में प्राचीन-काल से प्रचिलित यात्राएं

उमा भगवती यात्रा, भ्रारि आगन	चैत्र शुक्ल पक्ष	अष्ठमी
शिवा भगवती यात्रा, अक्यनीगाम	चैत्र शुक्ल पक्ष	नवमी
कमला यात्रा, त्राल	वैशाख कृष्ण पक्ष	पंचमी
डुमटबल यात्रा, कुकर नाग	वैशाख शुक्ल पक्ष	एकादशी
कूटी हेर (कुटहार) यात्रा	वैशाख शुक्ल पक्ष	तृतीया
गणपतयार यात्रा, श्रीनगर	वैशाख शुक्ल पक्ष	चतुर्दशी
ज़ीठयॅर यात्रा, श्रीनगर	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	पंचमी
क्षीर भवानी यात्रा, तुलमुल	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	अष्ठमी
खनबिरिन यात्रा, देवसर (कुलगाम)	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	अष्ठमी
मज़ी गाम यात्रा	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	अष्ठमी
लकुट पूर यात्रा	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	अष्टमी
नन्दकेश्वर यात्रा, सीर तथा सुम्बल	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	अष्ठमी

हरिश्वर यात्रा, खुनमुह	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	अष्ठमी
लुक भवन यात्रा, लुकभवन	आषाढ़ शुक्ल पक्ष	द्वादशी
जवाला मुखी यात्रा, खव	श्रावण शुक्ल पक्ष	चतुर्दशी
पांजथ नाग यात्रा	श्रावण शुक्ल पक्ष	पंचमी
शुपयन यात्रा	श्रावण शुक्ल पक्ष	द्वादशी
श्री अमरनाथ यात्रा	श्रावण शुक्ल पक्ष	पूर्णिमा
थजीवारा यात्रा (बूडा अमरनाथ) बिजबिहारा	श्रावण शुक्ल पक्ष	पूर्णिमा
ध्यानेश्वर यात्रा (छोटा अमरनाथ) बांढ़ीपोरा	श्रावण शुक्ल पक्ष	पूर्णिमा
नबदल यात्रा	भाद्र कृष्ण पक्ष	चतुर्थी
मार्तण्ड तीर्थ यात्रा, मार्तण्ड (मट्टन)	भाद्र शुक्ल पक्ष	
गोतमनाग यात्रा	भाद्र शुक्ल पक्ष	एकादशी
विथवुत्र यात्रा, वेरीनाग	भाद्र शुक्ल पक्ष	त्रयोदशी
अन्नतनाग (नागबल) यात्रा	भाद्र शुक्ल पक्ष	चतुर्दशी
हरमुकट गंगा यात्रा	भाद्र शुक्ल पक्ष	अष्टमी
विजयेश्वर यात्रा, बिजबिहारा	आश्विन कृष्ण पक्ष	अमावसी
सोमयार यात्रा	आश्विन कृष्ण पक्ष	अमावसी
विचार नाग यात्रा, विचार नाग	चैत्र कृष्ण पक्ष	अमावसी

काश्मीर के महात्माओं की जयन्तियाँ, श्राद्ध/यज्ञ ।

चण्डीगाम महात्मा यज्ञ	चैत्र शुक्ल पक्ष सप्तमी	11 अप्रेल
उमा भगवती जयन्ती	चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी	12 अप्रेल
शिवा भगवती (अकिनगाम)	चैत्र शुक्ल पक्ष नवमी	12 अप्रेल
स्वामी भोई टोठ जी महाराज	चैत्र शुक्ल पक्ष दशमी	13 अप्रेल
स्वामी कुमार जी जयन्ती, उधमपुर गड़ी	चैत्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	15 अप्रेल
श्री जानकीनाथ साहिब दर जयन्ती	वैशाख कृष्ण पक्ष सप्तमी	26 अप्रेल
श्री महादेव काक भान जयन्ती	वैशाख कृष्ण पक्ष सप्तमी	26 अप्रेल
स्वामी लक्ष्मण जी जयन्ती, महेंद्र नगर, जम्मू	वैशाख कृष्ण पक्ष द्वादशी	1 मई
श्री शकर साहिब यज्ञ, हन्दवारा, भट्टगुंड	वैशाख शुक्ल पक्ष द्वितीया	5 मई
श्री योगिराज धर्मदत्त जी यज्ञ	वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया	6 मई
श्री काक जी यज्ञ (हाँगलगुण्ड) कुक्करनाग	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष द्वितीया	20 मई
स्वा. नन्दकेश्वर यज्ञ (सीर) गोल गुजराल, जम्मू	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अमावसी	2 जून
भगवान् श्री गोपी नाथ जी यज्ञ, बोहड़ी जम्मू	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष द्वितीया	3 जून
श्री सिद्ध बब जयन्ती	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष नवमी	10 जून
महामहेश्वराचार्य अभिनवगुप्त जयन्ती	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष एकादशी	12 जून
श्री मोहनलाल जी जयन्ती (वय्क्रा) बारामुल्ला	आषाढ़ कृष्ण पक्ष तृतीया	20 जून
स्वामी स्वयमानन्द जयन्ती (उमानगरी)	आषाढ़ शुक्ल पक्ष षष्ठी	7 जुलाई

स्वामी आन्द जी (विलगाम)	आषाढ़ शुक्ल पक्ष सप्तमी	8 जुलाई
स्वामी कण्ठ राम जी यज्ञ (कुलगाम)	आषाढ़ शुक्ल पक्ष दशमी	10 जुलाई
स्वामी पुष्कर नाथ यज्ञ	आषाढ़ शुक्ल पक्ष द्वादशी	12 जुलाई
भगवान् श्री गोपीनाथ जी जयन्ती, बोहड़ी जम्मू	आषाढ़ शुक्ल पक्ष द्वादशी	13 जुलाई
स्वामी विद्याधर जी जयन्ती, श्रीनगर	आषाढ़ शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	14 जुलाई
स्वामी लाल जी यज्ञ	श्रावण कृष्ण पक्ष तृतीया	19 जुलाई
श्री ग्रट बब दिवस	श्रावण कृष्ण पक्ष द्वादशी	28 जुलाई
स्वामी रघु नाथ जी ब्रह्मचर्य यज्ञ	श्रावण शुक्ल पक्ष षष्ठी	4 अगस्त
श्री जानकीनाथ साहिब दर यज्ञ	श्रावण शुक्ल पक्ष अष्टमी	6 अगस्त
स्वामी गण काक यज्ञ	श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	14 अगस्त
स्वामी गोविन्द कौल यज्ञ	भाद्र कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	28 अगस्त
स्वामी परमानन्द जी यज्ञ (मार्तण्ड)	भाद्र शुक्ल पक्ष चतुर्थी	2 सितम्बर
माता उमादेवी यज्ञ (उमानगरी) मुट्ठी, जम्मू	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	6 सितम्बर
माता लल्लेश्वरी जयन्ती	भाद्र शुक्ल पक्ष अष्टमी	6 सितम्बर
श्री शकर साहब यज्ञ, मुंशी चक, जम्मू	आश्विन कृष्ण पक्ष प्रतिपदा	14 सितम्बर
स्वामी लक्ष्मण जी यज्ञ	आश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्थी	17 सितम्बर
स्वामी हर काक जयन्ती	आश्विन कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	25 सितम्बर
स्वामी क्राल बब यज्ञ	आश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	26 सितम्बर

स्वामी हरिकृष्ण यज्ञ	आश्विन शुक्ल पक्ष द्वितीया	29 सितम्बर
श्री नन्दलाल साहिब यज्ञ	आश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	10 अक्टूबर
श्री सिद्ध बब यज्ञ	कार्तिक कृष्ण पक्ष द्वितीया	14 अक्टूबर
ज्योतिषी आप्ताभ शर्मा यज्ञ (बिजबिहारा)	कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्थी	16 अक्टूबर
स्वामी व्यदलाल यज्ञ (गुशी)	कार्तिक कृष्ण पक्ष षष्ठी	18 अक्टूबर
श्री महादेव काक जयन्ती (रत्नी पोरा) पुलवामा	कार्तिक कृष्ण पक्ष नवमी	21 अक्टूबर
महामहेश्वराचार्य महताबकाक जी जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष चतुर्थी	31 अक्टूबर
स्वामी गोकुलनाथ जयन्ती, मुंशी चक, जम्मू	कार्तिक शुक्ल पक्ष सप्तमी	3 नवम्बर
श्री महादेव काक यज्ञ	कार्तिक शुक्ल पक्ष अष्टमी	4 नवम्बर
स्वामी आत्माराम यज्ञ (गुसानी गुण्ड)	कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी	7 नवम्बर
स्वामी पुष्करनाथ जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वादशी	8 नवम्बर
चण्डीगाम महात्मा जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	11 नवम्बर
स्वामी काशीनाथ जी यज्ञ (हुगामा)	मार्ग कृष्ण पक्ष पंचमी	15 नवम्बर
स्वामी सर्वानन्द जी यज्ञ (गोतमनाग)	मार्ग कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	23 नवम्बर
माता शारिकाजी यज्ञ, महेन्द्रनगर, जम्मू	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	27 नवम्बर
स्वा. शाम लाल जी हाजीन जयन्ती	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	28 नवम्बर
स्वामी विद्याधार_ जी यज्ञ, श्रीनगर	मार्ग शुक्ल पक्ष तृतीया	28 नवम्बर
स्वामी नन्दलाल मसताना जयन्ती (नुनर वाले)	पौष कृष्ण पक्ष दशमी	19 दिसंबर

महामहेश्वराचार्य श्री राम जयन्ती	पौष कृष्ण पक्ष द्वादशी	22 दिसंबर
श्री अशोकानन्द यज्ञ (नागढ़ण्डी)	पौष कृष्ण पक्ष अमावसी	24 दिसंबर
माता मथुरा देवी यज्ञ (वेरीनाग)	पौष शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	8 जनवरी
श्री आप्ताभ राम जी यज्ञ	माघ कृष्ण पक्ष पंचमी	13 जनवरी
स्वामी राम जी यज्ञ	माघ कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	22 जनवरी
श्री नन्द लाल जी यज्ञ	माघ शुक्ल पक्ष तृतीया	27 जनवरी
माता शारिका जी यज्ञ	फाल्गुन कृष्ण पक्ष तृतीया	10 फरवरी
श्री व्यदलाल जयन्ती (गुशी)	फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्थी	11 फरवरी
स्वामी महताब काक जी यज्ञ	फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वितीया	24 फरवरी
स्वामी शक्ति महाराज जयन्ती, उदयवाला बोड़ी	फाल्गुन शुक्ल पक्ष अष्टमी	3 मार्च
श्री नन्दलाल जी जयन्ती	फाल्गुन शुक्ल पक्ष अष्टमी	3 मार्च
श्री क्राल बब यज्ञ	फाल्गुन शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	9 मार्च
स्वामी हरकाक यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्ष सप्तमी	15 मार्च
श्री किशकाक यज्ञ (वडीपोरा)	चैत्र कृष्ण पक्ष नवमी	17 मार्च
ब्रह्मचार्य श्री अर्जुनदेव यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्ष दशमी	19 मार्च
स्वामी शामलाल जी हाजीन यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्षे चतुर्दशी	23 मार्च
श्री भट्ट जयन्ती	चैत्र कृष्ण पक्षे अमावसी	24 मार्च
स्वामी गाश काक जी यज्ञ (गोतमनाग)	चैत्र कृष्ण पक्षे अमावसी	25 मार्च

व्रतों की सूची विक्रमी सं. 2057 के लिए

पूर्णिमा व्रत

चैत्र	18 अप्रेल	भौमवार
वैशाख	18 मई	गुरुवार
ज्येष्ठ	16 जून	शुक्रवार
हार	16 जुलाई	रविवार
श्रावण	15 अगस्त	भौमवार
भाद्र	13 सितम्बर	बुधवार
असोज	13 अक्टूबर	शुक्रवार
कार्तिक	11 नवम्बर	शनिवार
मगर	11 दिसम्बर	सोमवार
पौष	9 जनवरी	भौमवार
माघ	8 फरवरी	गुरुवार
फाल्गन	9 मार्च	शुक्रवार

अमावस्या व्रत

वैशाख	4 मई	गुरुवार
ज्येष्ठ	2 जून	शुक्रवार
हार	1 जुलाई	शनिवार
श्रावण	31 जुलाई	सोमवार
भाद्र	29 अगस्त	भौमवार
असोज	27 सितम्बर	बुधवार
कार्तिक	27 अक्टूबर	शुक्रवार
मगर	25 नवम्बर	शनिवार
पौष	25 दिसम्बर	सोमवार
माघ	24 जनवरी	बुधवार
फाल्गुन	23 फरवरी	शुक्रवार
चैत्र	25 मार्च	रविवार

आष्टमी व्रत

चैत्र	11 अप्रेल	भौमवार
वैशाख	11 मई	गुरुवार
ज्येष्ठ	9 जून	शुक्रवार
हार	9 जुलाई	रविवार
श्रावण	7 अगस्त	सोमवार
भाद्र	6 सितम्बर	बुधवार
असोज	5 अक्टूबर	गुरुवार
कार्तिक	4 नवम्बर	शनिवार
मगर	4 दिसम्बर	सोमवार
पौष	3 जनवरी	बुधवार
माघ	1 फरवरी	गुरुवार
फाल्गुन	3 मार्च	शनिवार

एकादशी व्रत

चैत्र	14 अप्रेल	शुक्रवार
वैशाख	14 मई	रविवार
ज्येष्ठ	12 जून	सोमवार
हार	12 जुलाई	बुधवार
श्रावण	10 अगस्त	गुरुवार
भाद्र	9 सितम्बर	शनिवार
असोज	9 अक्टूबर	सोमवार
कार्तिक	7 नवम्बर	भौमवार
मगर	7 दिसम्बर	गुरुवार
पौष	6 जनवरी	शनिवार
माघ	7 फरवरी	रविवार
फाल्गुन	6 मार्च	भौमवार

संकट चतुर्थी व्रत

वैशाख	22 अप्रेल	शनिवार
ज्येष्ठ	22 मई	सोमवार
हार	20 जून	भौमवार
श्रावण	20 जुलाई	गुरुवार
भाद्र	18 अगस्त	शुक्रवार
असोज	17 सितम्बर	रविवार
कार्तिक	16 अक्टूवर	सोमवार
मगर	14 नवम्बर	भौमवार
पौष	14 दिसम्बर	गुरुवार
माघ	12 जनवरी	शुक्रवार
फाल्गुन	11 फरवरी	रविवार
चैत्र	12 मार्च	सोमवार

कुमार षष्ठी व्रत

चैत्र	9 अप्रेल	रविवार
वैशाख	8 मई	सोमवार
ज्येष्ठ	7 जून	बुधवार
हार	6 जुलाई	गुरुवार
श्रावण	4 अगस्त	शुक्रवार
भाद्र	3 सितम्बर	रविवार
असोज	3 अक्टूबर	भौमवार
कार्तिक	2 नवम्बर	गुरुवार
मगर	2 दिसम्बर	शनिवार
पौष	31 दिसम्बर	रविवार
माघ	30 जनवरी	भौमवार
फाल्गुन	1 मार्च	गुरुवार

संक्रान्ति व्रत

चैत्र	14 मार्च	भौमवार
वैशाख	13 अप्रेल	गुरूवार
ज्येष्ठ	14 मई	रविवार
हार	14 जून	बुधवार
श्रावण	16 जुलाई	रविवार
भाद्र	16 अगस्त	बुधवार
असोज	16 सितम्बर	शनिवार
कार्तिक	17 अक्टूबर	चन्द्रवार
मगर	16 नवम्बर	बुधवार
पौष	15 दिसम्बर	शुक्रवार
माघ	14 जनवरी 2001	रविवार
फाल्गुन	12 फरवरी	चन्द्रवार
चैत्र	14 मार्च	बुधवार

वि. 2057 के पितृ पक्ष में होगा

प्रतिपदा का श्राद्ध	14 सितम्बर	गुरुवार
द्वितीया का श्राद्ध	15 सितम्बर	शुक्रवार
तृतिया का श्राद्ध	16 सितम्बर	शनिवार
चतुर्थी का श्राद्ध	17 सितम्बर	रविवार
पंचमी का श्राद्ध	18 सितम्बर	सोमवार
षष्ठी का श्राद्ध	19 सितम्बर	भौमवार
सप्तमी का श्राद्ध	20 सितम्बर	बुधवार
अष्ठमी का श्राद्ध	21 सितम्बर	गुरुवार
नवमी का श्राद्ध	21 सितम्बर	गुरुवार
दशमी का श्राद्ध	22 सितम्बर	शुक्रवार
एकादशी का श्राद्ध	23 सितम्बर	शनिवार
द्वादशी का श्राद्ध	24 सितम्बर	रविवार
त्रयोदशी का श्राद्ध	25 सितम्बर	सोमवार
चतुर्दशी का श्राद्ध	26 सितम्बर	भौमवार
अमावसी का श्राद्ध	27 सितम्बर	बुधवार

विक्रमी सम्वत् 2057 में हर शुभ कार्य के लिए

निषेध समय

बृहस्पति अस्त	:–	*27 अप्रेल से 24 मई तक*
शुक्र अस्त	:–	*5 मई से 16 जुलाई तक*
स्यंघ (सिंह में सूर्य)	:–	*16 अगस्त से 16 सितंबर तक*
श्राद्ध (पितृ पक्ष)	:–	*13 सितंबर से 27 सितंबर तक*
पौष (पोह)	:–	*15 दिसम्बर से 13 जनवरी तक*
चैत्र कृष्णपक्ष	:–	*10 मार्च से 25 मार्च तक*

नोटः-(1) ***विजयेश्वर जन्त्री*** का निर्माणाधार जम्मू का रेखांश और अक्षांश है अतः अन्य पंचांगों और इस जन्त्री में गुरु और शुक्र के अस्त काल में अन्तर हो सकता है परन्तु कम्प्यूटर गणित से जम्मू-काश्मीर के लिए गुरु और शुक्र का अस्तकाल उपर्युक्त ही प्रामाणिक है ।

(2) यद्यपि पौष मास हर शुभ काम के लिए निषिद्ध है परन्तु *शिशुर लागुन* के लिए निषिद्ध नही है, इसी तरह स्यंघ में ***शंकु प्रतिष्ठा*** तथा ***पनद्युन*** निषिद्ध नही है।

काश्मीरी पर्व और त्यौहार वि. 2057 के लिये

नवरेह	5 अप्रेल	श्रावण बाह	11 अगस्त	महानवमी	6 अक्टूबर	काव पुनिम	8 फरवरी
ज़ंग त्रय	7 अप्रेल	श्रावण पुनिम	15 अगस्त	दशहरा	7 अक्टूबर	हुर्य ॲठम	15 फरवरी
दुर्गा अष्टमी	11 अप्रेल	चन्दन षष्ठी	20 अगस्त	दीपावली	26 अक्टूबर	हेरथ	20 फरवरी
राम नवमी	12 अप्रेल	जन्म अष्ठमी	22 अगस्त	मुञ्जहर तहर	12 दिसम्बर	शिव चतुर्दशी	21 फरवरी
वेताल षष्ठी	25 अप्रेल	विनायक चोरम	2 सितंबर	क्ष्यचरि-मावस	25 अक्टूबर	डून्य मावस	23 फरवरी
वैशाखी	13 अप्रेल	वराह पंचमी	3 सितंबर	शिशर संक्रान्ति	14 जनवरी	वटुक	23 फरवरी
अच्छिन त्रय	6 मई	गंग ॲठम	6 सितंबर	साहिब सतम	15 जनवरी	परमूज़ुन	
नारद काह	14 मई	व्यथ त्रुवाह	11 सितंबर	निष्कासन दि.	19 जनवरी	तील ॲठम	3 मार्च
गणेश चोदाह	17 मई	अन्नत चोदाह	12 सितंबर	शिव चतुर्दशी	22 जनवरी	होली	9 मार्च
ज़्येठ अठम	9 जून	बलिदान दिवस	14 सितंबर	गौरी तृतीया	27 जनवरी	थाल भरुन	13 मार्च
निर्ज़ला काह	12 जून	काम्बर्य पक्ष	14 सितंबर	त्रिपुरा चोरम	28 जनवरी	सोन्थ	14 मार्च
हार सतम	8 जुलाई	साहिब सतम	20 सितंबर	बसन्त पंचमी	29 जनवरी	चित्र चोदाह	23 मार्च
हार अठम	9 जुलाई	पित्र मावस	27 सितंबर	सूर्य सतम	31 जनवरी	थाल भरुन	25 मार्च
हार नवम	10 जुलाई	नवदुर्गा आरम्भ	28 सितंबर	भीष्म ॲठम	1 फरवरी		
ज्वाला चोदाह	15 जुलाई	दुर्गा अष्टमी	5अक्टूबर	भीमसेन काह	4 फरवरी		

विक्रमी 2057 के ग्रहण

इस वर्ष के कुल पांच ग्रहणों में तीन खण्डग्रास सूर्य ग्रहण और दो खग्रास चन्द्र ग्रहण होंगे, लेकिन इस वर्ष पहली जुलाई, 31 जूलाई और 25 दिसम्बर 2000 ई० के दिन लगने वाले खण्डग्रास सूर्य ग्रहण भारत में कहीं भी दिखाई नहीं देंगे। इनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है ।

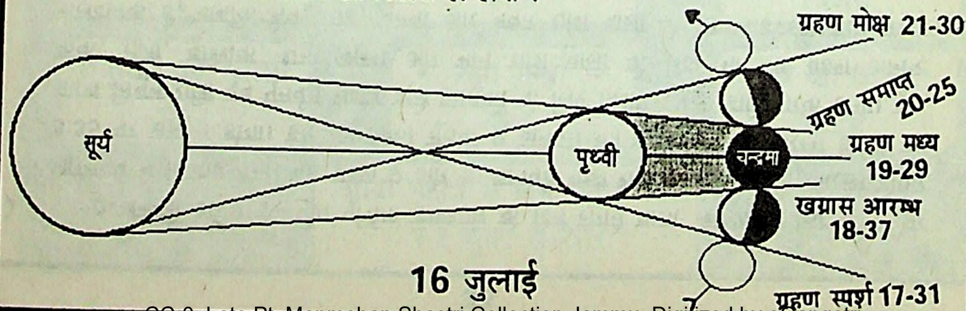
- पहली जुलाई 2000 ई० के *खण्डग्रास सूर्य ग्रहण* (Partial Eclipse of Sun)का स्पर्श काल भारतीय समयानुसार रात्रि 11:42 और मोक्ष उसी रात्रि 2 जुलाई 2:33 पर होगा । यह ग्रहण प्रशांत महासागर के दक्षिण-पूर्वी भाग, चिल्ली, अरजण्टीना के भागों, कोलम्बिया तथा दक्षिण अमरीका के दक्षिण-पशिचमी भाग में दिखाई देगा।

- 31 जुलाई 2000 ई० के *खण्डग्रास सूर्य ग्रहण* का स्पर्शकाल भारतीय समयानुसार प्रातः 6:12 और मोक्ष 9:24 प्रातः पर होगा । यह ग्रहण एशिया के उत्तर-पूर्वी भाग, अलासका, कनाडा, ग्रीनलैण्ड, पश्चिमी तथा उत्तरी रूस और उत्तर के ध्रुवीय प्रदेशों में दिखाई देगा।

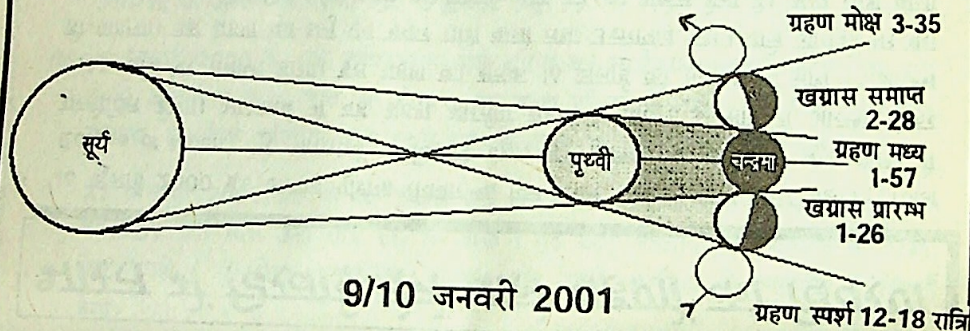
- 25 दिसम्बर 2000 ई० के *खण्डग्रास सूर्य ग्रहण* का स्पर्शकाल भारतीय समयानुसार शाम के 8:59 और मोक्ष उसी रात्रि 1:17 पर होगा । यह ग्रहण मैक्सिको के आसपास के प्रदेशों, वेस्ट इण्डीज़, ग्रीनलैण्ड, उत्तर-पूर्वी कनाडा और उत्तरी अमरीका के महाद्वीप में दिखाई देगा।

भारत में दिखाई देने वाले ग्रहणों का विवरण

- 16 जुलाई 2000 ई० आषाढ़ पूर्णिमा रविवार के दिन लगने वाला *खग्रास चन्द्र ग्रहण* (Total Eclipse of Moon) पूरे भारतवर्ष में दिखाई देगा। यह ग्रहण पूर्वी भारत के कुछ भागों में ग्रस्तोदित होगा। भारतवर्ष में यह ग्रहण भारतीय समय अनुसार 5:31 सायं से आरम्भ होकर 9:30 रात्रि पर समाप्त होगा। इस ग्रहण का सूतक 16 जुलाई को सूर्योदय के साथ ही आरम्भ हो जाएगा। इस ग्रहण का धनु एवं मकर राशि वालों तथा उत्तराषाढ नक्षत्र वाले जातकों पर बुरा प्रभाव होगा, जबकि मीन राशि वालों को ऐश्वर्य सुख देने का संकेत देता है। अन्य राशि वालों के लिए इस ग्रहण का प्रभाव हानिकारक ही होगा।



➢ 9/ 10 जनवरी 2001 ई० पौष पूर्णिमा मंगलवार के दिन लगने वाला *खग्रास चन्द्र ग्रहण* पूरे भारतवर्ष में दिखाई देगा। यह ग्रहण 9 और 10 जनवरी मध्य रात्रि को 12:18 से आरम्भ होकर 3:35 पर समाप्त होगा। इस ग्रहण का सूतक 9 जनवरी को 3:12 दिन से आरम्भ होगा। यह ग्रहण मिथुन राशि एवं पुनर्वसु नक्षत्र वाले जातकों के लिए विशेष रूप से हानिकारक होगा। वृष, कर्क, तुला, वृश्चिक, धनु, कुम्भ और मीन राशि वालों के लिए भी यह ग्रहण अनिष्ट फलदायक है, जबकि मेष, सिंह, कन्या और मकर राशि वालों के लिए यह लाभकारी प्रभाव डालने वाला है।



9/10 जनवरी 2001

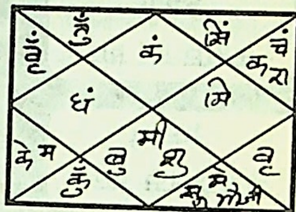
वर्ष के दस अधिकारी

वर्ष का राजा बुध	वर्ष का मन्त्री बृहस्पति	धान्य का स्वामी शुक्र
धन का स्वामी शनि	फलों के स्वामी बुध	रस का स्वामी चंद्र
वर्षा का स्वामी बुध	अनास के स्वामी शनि	वर्ष का नाम विजय
धातुओं का स्वामी शनि	रक्षा मन्त्री बुध	वर्ष का वाहन गीदड़

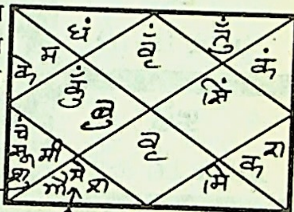
आर्द्रा नक्षत्र में सूर्य का प्रवेश
२१ जून, बुधवार

सं 2057 वि. में विश्व पर ग्रहचाल का प्रभाव।

विश्व इस वर्ष की ग्रहचाल के अनुसार कुछ क्रूर ग्रह संसार के कुछ देशों में अशान्ति फैलाने के कारक बनेंगे, जिस के फलस्वरूप चीन, अमरीका जैसे देशों के बीच कभी युद्ध और कभी शान्ति की स्थिति बनती जायेगी। मुस्लिम राष्ट्रों में आन्तरिक अशान्ति अथवा आन्दोलन होंगे जिन में पाकिसतान, ईरान, ईराक, अफगानिस्तान आदि देश विशेष रूप से अशान्ति के वातावरण में रहेंगे। चूँकि इस वर्ष का आरम्भ जगत् कुण्डली के अनुसार "काल सर्प योग" में हो रहा है अत: इस वर्ष विश्व को अनेक कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। विश्व के लोग नाभकीय युद्ध (Nuclear War) से आशंकित रहेंगे। इस वर्ष के अन्तिम दो महीनों में शनि के साथ भौम के योग के कारण संसार में कहीं भयानक भूकम्प तो कहीं अभूतपूर्व बाढ़ के कारण जन हानि की प्रबल संभावना है। यूरोपीय देशों में आन्तरिक मसले विकराल रूप धारण करेगें।

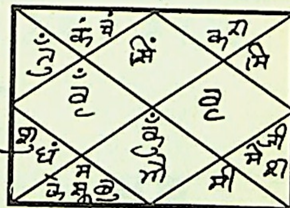


जगत् चक्र



वर्ष चक्र

भारत सं. 2057 विक्रमी की ग्रह स्थिति को विचार कर यह कहा जा सकता है कि भारत के लिए यह वर्ष चुनौतियों से भरा है, विशेष कर आतंकवाद की समस्या से इसे झूझना पड़ेगा। भारत के उत्तर तथा उत्तर-पूर्वी राज्यों में देश



गणतन्त्र वर्ष चक्र

द्रोंहियों की गतिविधियो से अशान्ति बनी रहेगी । यत्र-तत्र विसफोट होंगे । वर्ष के पूर्वाद्ध में सियासी फेरबदल होंगे जिस से ऐसे राजनैतिक मेल होंगे जो आश्चर्यचकित करने वाले होंगे । फिर भी सप्तम भाव में मंगल की स्थिति भारत के मान को उँचा करने का सूचक है । इस के अतिरिक्त भा. ज. पा. की कुण्डली से ज्ञात होता है कि वह स्थिर सरकार देने में कुछ हद तक सफल रहेगी। इस वर्ष भारतीय संविधान की कुछ धाराओं में संशोधन भी हो सकता है । केन्द्र सरकार विश्व के बड़े राष्ट्रों के दबाव में न आकर भरत की साख को और मज़बूत करने के लिए कुछ अभूतपूर्व एवं कड़े कदम उठायेगी । भारत के 54 वें गणतन्त्र वर्ष चक्र के अनुसार सप्तम भाव में शनि और बृहस्पित का योग भारतीय सैन्य बल की वृद्धि का सूचक है ।



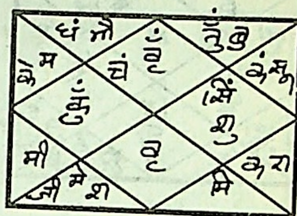
श्री अटल जी का

जन्म चक्र

भारत के प्रधानमन्त्री अनेक समस्याओं को हल करने में सफल होंगे लेकिन दूसरे नेताओं के राजनैतिक दावपेच में उलझे रहेंगे जिस के प्रति उन्हें सावधान रहना पड़ेगा । भारतीय प्रधान मन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपई जी के इस वर्ष की ग्रहों की स्थिति के अनुसार अन्तिम तीन मासों में अस्वस्थ रहने की संभावना है परन्तु किसी अरिष्ट का योग नहीं है ।

जम्मू-काश्मीर

जगत् चक्र में इस वर्ष 6 जून तक शनि की नीच दृष्टि होने के कारण तथा ''काल सर्प योग'' से यह वर्ष काश्मीर के लिए अत्यन्त अनिष्ट कारक है । राजनैतिक अशान्ति के साथ-साथ प्राकृतिक आपदाओं का प्रबल योग है, जिस के फल स्वरूप काश्मीर प्रदेश में भीषण गरमी, मूसलाधार वर्षा, कडाके की ठण्ड होने की सम्भावना है । वितस्ता के आस-पास बसे हुए भू-भागों में बाढ़ से खडी फसलों एवं मकानों की अत्यधिक तबाही हो सकती है । सरकार की ओर से शान्ति स्थापित करने के लिए भरसक प्रयत्न किये जाएगें लेकिन शत्रु देशों के हस्तक्षेप के कारण इन प्रयत्नों का कोई विशेष लाभ नही होगा । आतंक का माहोल कभी शान्त और कभी उग्र रूप धारण करेगा । विषम परिस्थितियों के होते हुए भी इस वर्ष काश्मीर के साथ-साथ जम्मू प्रांत भी पर्यटकों का विशेष आकर्षण का केन्द्र रहेगा । राज्य के लिए यह वर्ष पर्यटन का अभूतपूर्व वर्ष सिद्ध होगा । राज्य और केन्द्र सरकार के बीच बेहतर तालमेल की सम्भावना है जिस में राज्य का आर्थिक संकट कुछ सीमा तक दूर होगा ।



भा. ज. पा. का शपथ ग्रहण चक्र

13 अक्टूबर 1999

10:31 दिन

विक्रमी सं. 2057, ईस्वी सं. 2000–2001 के लिए

ग्रह संचार

सूर्य

13 अप्रेल मेष में सूर्य

14 मई वृष में सूर्य

14 जून मिथुन में सूर्य

16 जुलाई कर्कट में सूर्य

16 अगस्त सिंह में सूर्य

16 सितम्बर कन्या में सूर्य

16 अक्टूबर तुला में सूर्य

15 नवम्बर वृश्चिक में सूर्य

15 दिसम्बर धनु में सूर्य

13 जनवरी मकर में सूर्य

12 फरवरी कुम्भ में सूर्य

14 मार्च मीन में सूर्य

भौम

25 अप्रेल वृष में भौम

7 जून मिथुन में भौम

22 जुलाई कर्कट में भौम

7 सितम्बर सिंह में भौम

25 अक्टूबर कन्या में भौम

13 दिसम्बर तुला में भौम

3 फरवरी वृश्चिक में भौम

बुध

8/9 अप्रेल मीन में बुध

27 अप्रेल मेष में बुध

11 मई वृष में बुध

26 मई मिथुन में बुध

23 जून मिथुन में वक्री बुध

3 अगस्त कर्कट में बुध

19 अगस्त सिंह में बुध

4 सितम्बर कन्या में बुध

23 सितम्बर तुला में बुध

17 अक्टूबर तुला में वक्री बुध

29 नवम्बर वृश्चिक में बुध
19 दिसम्बर धनु में बुध
6 जनवरी मकर में बुध
25 जनवरी कुम्भ में बुध
13 फरवरी मकर में वक्री बुध
11/12 मार्च कुम्भ में बुध

बृहस्पति

2 जून वृष में गुरु
30 सितम्बर वृष में वक्री गुरु

शुक्र

26 अप्रेल मेष में शुक्र
20 मई वृष में शुक्र
13 जून मिथुन में शुक्र
8 जुलाई कर्कट में शुक्र
1 अगस्त सिंह में शुक्र
26 सितम्बर कन्या में शुक्र
19 सिमम्बर तुला में शुक्र
14 अक्टूबर वृश्चिक में शुक्र
7/8 नवम्बर धनु में शुक्र
3 दिसम्बर मकर में शुक्र
29 दिसम्बर कुम्भ में शुक्र
26 जनवरी मीन में शुक्र

शनि

6/7 जून 2000 से 23 जुलाई 2002 तक वृष में शनि

राहु

30 जुल. 2000 से मिथुन में राहु

केतु

30 जुल. 2000 से धनु में केतु

नोट :

स्थूल और सूक्ष्म गणित में अन्तर आना स्वभाविक है। कम्प्यूटर प्रणाली द्वारा क्रास चक किये जाने पर यह अन्तर और स्पष्ट हो जाता है।

इस वर्ष *माघ कृष्ण पक्ष षष्ठी अथवा सप्तमी* में से तिथि के क्षय का निर्धारण करना स्वल्पान्तरण प्रक्रिया से ही संभव है, क्योंकि इस दिन जम्मू के अक्षांश पर किरण वक्री भवन रहित (Correction for Refraction) कैन्द्रिक सूर्योदय प्रात: 7 बजे 38 मि. तथा 2 सकेंड (≅7:38) आता है। अत: स्वल्पान्तरण प्रक्रिया (Rounding off truncations) के प्रयोग से *माघ कृष्ण पक्ष सप्तमी* का क्षय ही समुचित है।

चैत्र शुक्लपक्ष सप्तर्षि सं० 5076 विक्रमी सं० 2057 शाक: सं० 1922 ईस्वी सं० 2000

5 अप्रेल की ग्रहस्थितिः- मेष में शनि, बृहस्पति, भौम । कर्क में राहु । मकर में केतु । कुम्भ में बुध । मीन में सूर्य, शुक्र ।

दिन मान		चैत्र	अप्रेल	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	(ग्रह संवार बजे मिनटों में) वसन्त ऋतु, उत्तरायण	सू उ	सू अ
12	32	23	5	बुध	प्रति प्र	9:55 PM	रेव दि	2:31 PM	नवरेह, नवरात्ररम्भ, 2:31 दिन मेष में चंद्र और पंचक समाप्त X	6 17	6 48
	33	24	6	गुरु	द्विती प्र	7:46 PM	अश्वि दि	1:12 PM	मानसम् ।	16	49
	35	25	7	शुक्र	तृती दि	5:24 PM	भर दि	11:38 AM	जंगत्रय, 5:11 दिन वृष में चंद्र, मुद्गम् ।	14	50
	37	26	8	शनि	चतु दि	2:57 PM	कृति दि	9:57 AM	ध्वज:, 12:15 रात मीन में बुध ।	13	51
	39	27	9	रवि	पंच दि	12:32 PM	रोहि दि	8:15 AM	कुमार षष्ठी, 4:28 दिन मिथुन में चंद्र, प्रजापत्य: ।	12	51
	41	28	10	सोम	षष्ठी दि	10:12 AM	मृग दि	6:40 AM	आनन्द:, (आर्द्रा प्र 5:13) ।	11	52
	43	29	11	भौम	सप्त दि	8:02 AM	पुन प्र	3:58 AM	त्र्यह:, दुर्गाष्टमी व्रत, स्थिर:, 10:16 रात कर्क में चंद्र ।	9	53
अष्टमी तिथि का क्षय (अष्ट प्र 6:04 प्रात:)											
	45	30	12	बुध	नव प्र	4:18 AM	तिष्य प्र	2:55 AM	राम नवमी, मातंग:, मासान्त ।	8	53
	47	वैशाख	13	गुरु	दश प्र	2:45 AM	अश्ले प्र	2:05 AM	2:05 रात सिंह में चंद, अमृतम्, वैशाखी, संक्रान्ति व्रत, Z	7	54
	49	2	14	शुक्र	एका प्र	1:26 AM	मघा प्र	1:29 AM	एकादशी व्रत, कामदा काह, काण्ड:।	6	55
	51	3	15	शनि	द्वाद प्र	12:22 AM	पूफा प्र	1:08 AM	अलापकम् ।	5	56
	53	4	16	रवि	त्रयो प्र	11:36 PM	उफा प्र	1:04 AM	7:24 प्रात: कन्या में चंद्र, महावीर जयन्ती, मैत्रम् ।	4	56
	55	5	17	सोम	चर्तु प्र	11:12 PM	हस्त प्र	1:22 AM	वज्रम् ।	2	57
	57	6	18	भौम	पूर्णि प्र	11:13 PM	चित्र प्र	2.05 AM	पूर्णिमा व्रत, 1-44 दिन तुला में चन्द्र, ध्वांक्ष: ।	1	58

रामनवमी
12 अप्रेल

मध्याह्न प्रतिपदा से पंचमी तक अपने दिन, षष्ठी से अष्ठमी तक पहले दिन, नवमी से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

श्राद्ध प्रतिपदा से तृतिया अपने दिन, चतुर्थी से अष्ठमी तक पहले दिन, नवमी से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

X उन्मूलम्, 8:43 प्रात: से 8:09 रात तक गण्डान्त । Z 5:22 दिन मेष में सूर्य ।

वैशाख कृष्णपक्ष

सप्तर्षि सं० 5076 विक्रमी सं० 2057 शाक: सं० 1922 ईस्वी सं० 2000

19 अप्रेल की ग्रहस्थिति:- मेष में सूर्य, भौम, बृहस्पति, शनि । कर्क में राहु । मकर में केतु । मीन में बुध, शुक्र ।

दिन	मान	वैश	अप्रेल	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	(ग्रह संचार वजे मिनटों में) वसन्त ऋतु, उत्तरायण	सू उ	सू अ
12	58	7	19	बुध	प्रति प्र	11:42 PM	स्वात प्र	3:17 AM	धौम्या: ।	6 0	6 59
13	0	8	20	गुरु	द्विती प्र	12:44 AM	विशा प्र	4:59 AM	प्रवर्ध:, 10:34 रात वृश्चिक में चन्द्र ।	5 59	59
	2	9	21	शुक्र	तृती प्र	2:17 AM	अनुरा	दिन रात	क्षय: ।	58	60
	4	10	22	शनि	चतु प्र	4:20 AM	अनुरा दि	7:13 AM	संकट चतुर्थी, अमृतम् ।	57	7 1
	6	11	23	रवि	पंच	दिन रात	ज्येष्ठ दि	9:53 AM	काण्ड:, 9:53 दिन धनु में चन्द्र, 3:13 रात से गण्डान्त ।	56	1
	8	12	24	सोम	पंच दि	6:45 AM	मूल दि	12:53 PM	अलापकम्, 4:39 दिन तक गण्डान्त ।	55	2
	9	13	25	भौम	षष्ठी दि	9:20 AM	पूषा दि	4:00 PM	वेतालषष्ठी, मैत्रम्, 10:45 रात मकर में चन्द्र, 7:51 प्रात: X	54	3
	11	14	26	बुध	सप्त दि	11:51 AM	उषा दि	6:59 PM	वज्रम्, 8:36 प्रात: मेष में शुक्र, 5:33 रात मेष में बुध ।	52	4
	13	15	27	गुरु	अष्ट दि	2:03 PM	श्रवण प्र	9:36 PM	ध्वज:, 12:22 दिन वृहस्पति पश्चिम में अस्त । X वृष में भौम ।	51	4
	15	16	28	शुक्र	नव दि	3:41 PM	धनि प्र	11:37 PM	प्रजापत्य:, 10:35 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ ।	50	5
	16	17	29	शनि	दश दि	4:35 PM	शत प्र	12:54 AM	आनन्द: ।	49	6
	18	18	30	रवि	एका दि	4:41 PM	पूभा प्र	1:22 AM	चर:, 7:13 शा मीन में चन्द्र, वरूथिनी एकादशी, स्वा. लक्ष्मण Y	48	7
	20	19	मई	सोम	द्वाद दि	3:57 PM	उभा प्र	1:03 AM	मुसुलम् । Y जी जयन्ती,	48	7
	21	20	2	भौम	त्रयो दि	2:28 PM	रेव प्र	12:02 AM	शूलम्, 12:02 रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 6:15 शा से Z	47	8
	23	21	3	बुध	चर्तु दि	12:20 PM	अश्वि प्र	10.27 PM	मृत्यु:, 5:36 प्रात: तक गण्डान्त ।	46	9
	25	22	4	गुरु	अमा दि	9:43 AM	भर प्र	8:27 PM	अमावसी व्रत, काम्य:, 1:25 रात वृष में चन्द्र ।	45	10

गुरु अस्त 27 अप्रेल

मध्याह्न प्रतिपदा से पंचमी तक अपने दिन, षष्ठी, सप्तमी पहले दिन, अष्ठमी से चतुर्दशी अपने दिन, अमावसी का पहले दिन । *श्राद्ध* प्रति से पंचमी तक अपने दिन, षष्ठी से अमावसी तक पहले दिन ।

Z गण्डान्त आरम्भ ।

वैशाख शुक्लपक्ष

सप्तर्षि सं० 5076 विक्रमी सं० 2057 शाकः सं० 1922 ईस्वी सं० 2000

5 मई की ग्रहस्थितिः- मेष में सूर्य, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि । वृष में भौम । कर्क में राहु । मकर में केतु ।

दिन	मान	वैशाख	मई	वार	तिथि		समय	नक्षत्र		समय	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) ग्रीष्म ऋतु, उत्तरायण	सू उ	सू अ
13	26	23	5	शुक्र	प्रति	दि	6:47 AM	कृति	दि	6:12 PM	त्र्यहः, श्री शकर साहिब यज्ञ, छत्रम् ।	5 44	7 10
	द्वितीया तिथि का क्षय (द्विती प्र 3:41 रात)												
	28	24	6	शनि	तृती	प्र	12:35 AM	रोहि	दि	3:52 PM	श्रीवत्सः, अक्षय तृतीया, परशुराम जयन्ती, 2:45 रात मिथुन X	43	11
	30	25	7	रवि	चतु	प्र	9:36 PM	मृग	दि	1:37 PM	सौम्यः । X में चन्द्र, 1:55 दिन शुक्र पूर्व में अस्त ।	42	12
	31	26	8	सोम	पंच	दि	6:51 PM	आर्द्रा	दि	11:33 AM	कुमार षष्ठी, कालदण्डः, 4:16 रात कर्क में चन्द्र ।	41	12
	33	27	9	भौम	षष्ठी	दि	4:26 PM	पुन	दि	9:48 AM	स्थिरः ।	40	13
	34	28	10	बुध	सप्त	दि	2:23 PM	तिष्य	दि	8:25 AM	मातंगः ।	40	14
	36	29	11	गुरु	अष्ट	दि	12:46 PM	अश्ले	दि	7:27 AM	अष्टमी व्रत, अमृतम्, 7:27 प्रातः सिंह में चन्द्र, 1:43 रात से Y	39	15
	37	30	12	शुक्र	नव	दि	11:34 AM	मघा	दि	6:54 AM	काण्डः, 1:14 दिन तक गण्डान्त ।	38	15
	39	31	13	शनि	दश	दि	10:48 AM	पूफा	दि	6:46 AM	अलापकम्, 12:50 दिन कन्या में चन्द्र, मासान्त ।	37	16
	40	ज्येष्ठ	14	रवि	एका	दि	10:26 AM	उफा	दि	7:02 AM	एकादशी व्रत, नारद एकादशी, डमुटबल यात्रा, मैत्रम्, संक्रान्ति व्रत Z	37	17
	42	2	15	सोम	द्वाद	दि	10:28 AM	हस्त	दि	7:43 AM	वज्रम्, 8:15 शां तुला में चन्द्र ।	36	18
	43	3	16	भौम	त्रयो	दि	10:55 AM	चित्र	दि	8:47 AM	ध्वांक्षः ।	35	18
	44	4	17	बुध	चर्तु	दि	11:48 AM	स्वात	दि	10:16 AM	गणेशं चतुर्दशी, गणपत यार यात्रा, धौम्यः ।	35	19
	46	5	18	गुरु	पूर्णि	दि	1:05 PM	विशा	दि	12:10 AM	पूर्णिमा व्रत, प्रवर्धः, 5:43 शां वृश्चिक में चन्द्र ।	34	20

मध्याह्न प्रतिपदा, द्वितीया का पहले दिन, तृतिया से अष्ठमी तक अपने दिन, नवमी से चतुर्दशी तक पहले दिन पूर्णिमा का अपने दिन । ***श्राद्ध*** प्रतिपदा से द्वितीया तक पहले दिन, तृतीया से पंचमी अपने दिन, षष्ठी से पूर्णिमा तक पहले दिन । Y गण्डान्त आरम्भ, 4:44 दिन वृष में बुध । Z 2:14 दिन वृष में सूर्य (मुहूर्त 30) ।

ज्येष्ठ कृष्णापक्ष

सप्तर्षि सं० 5076 विक्रमी सं० 2057 शाकः सं० 1922 ईस्वी सं० 2000

19 मई की ग्रहस्थितिः- मेष में बृहस्पति, शुक्र, शनि । वृष में सूर्य, भौम, बुध । कर्क में राहु । मकर में केतु ।

दिन	मास	ज्ये	मई	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) ग्रीष्म ऋतु, उत्तरायण	सू उ	सू अ
13	47	6	19	शुक्र	प्रति दि	2:48 PM	अनुरा दि	2:28 PM	क्षयः ।	5 34	7 20
	48	7	20	शनि	द्विती दि	4:54 PM	ज्येष्ठ दि	5:08 PM	गजः, 5:08 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ , 10:29 दिन से X	33	21
	49	8	21	रवि	तृती दि	7:18 PM	मूल प्र	8:06 PM	सिद्धाः । X 11:54 रात तक गण्डान्त, 5:48 दिन वृष में शुक्र ।	32	22
	51	9	22	सोम	चतु प्र	9:53 PM	पूषा प्र	11:14 PM	संकट चतुर्थी, उन्मूलम् ।	32	22
	52	10	23	भौम	पंच प्र	12:28 AM	उषा प्र	2:21 AM	मानसम्, 7:01 शा मकर में चन्द्र ।	31	23
	53	11	24	बुध	षष्ठी प्र	2:49 AM	श्रवण प्र	5:14 AM	छत्रम्, 1:40 दिन बृहस्पति पूर्व में उदय ।	31	24
	54	12	25	गुरु	सप्त प्र	4:43 AM	धनि	दिन रात	श्रीवत्सः, 6:26 शां कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ ।	30	24
	55	13	26	शुक्र	अष्ट	दिन रात	धनि दि	7:40 AM	प्रजापत्यः, 3:16 दिन मिथुन में बुध ।	30	25
	56	14	27	शनि	अष्ट दि	5:58 AM	शत दि	9:27 AM	आनन्दः, 4:12 रात मीन में चन्द्र ।	30	26
	57	15	28	रवि	नव दि	6:26 AM	पूभा दि	10:29 AM	चरः ।	29	26
	58	16	29	सोम	दश दि	6:04 AM	उभा दि	10:40 AM	व्याघः, रथा एकादशी, मुसुलम्, 4:10 रात से गण्डान्त ।	29	27
	एकादशी तिथि का क्षय (एका प्र 4:52 प्रातः)										
	59	17	30	भौम	द्वाद प्र	2:54 AM	रेव दि	10:02 AM	शूलम्, 10:02 दिन मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 3:40 दिन Y	29	27
	60	18	31	बुध	त्रयो प्र	12:17 AM	अश्वि दि	8:41 AM	मृत्युः । Y पर गण्डान्त समाप्त ।	28	28
14	1	19	जून	गुरु	चर्तु प्र	9:11 PM	भर दि	6:43 AM	काम्यः,(कृति प्र 4:18) 12:06 दिन वृष में चन्द्र ।	28	29
	1	20	2	शुक्र	अमा दि	5:46 PM	रोहि प्र	1:38 AM	अमावसी व्रत, नन्दकेश्वर यज्ञ(गोल गुजराल) जम्मू, मैत्रम्, 7:02 Z	28	29

मध्याह्न प्रतिपदा से अष्ठमी तक अपने दिन, नवमी से एकादशी पहले दिन, द्वादशी से अमावसी तक अपने दिन ।
श्राद्ध प्रतिपदा से तृतिया तक पहले दिन, चतुर्थी से अष्ठमी तक अपने दिन, नवमी से एकादशी तक पहले दिन, द्वादशी से चतुर्दशी तक अपने दिन, अमावसी का अपने दिन । Z सायं वृष में बृहस्पति ।

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

सप्तर्षि सं० 5076 विक्रमी सं० 2057 शाकः सं० 1922 ईस्वी सं० 2000

3 जून की ग्रहस्थितिः- मेष में शनि । वृषे में सूर्य, भौम, बृहस्पति, शुक्र । मिथुन में बुध । कर्क में राहु । मकर में केतु ।

दिन	मास	ज्ये	जून	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) ग्रीष्म ऋतु, उत्तरायण	सू उ	सू अ
14	2	21	3	शनि	प्रति दि	2:11 PM	मृग प्र	10:52 PM	वज्रम्, 12:14 दिन मिथुन में चन्द्र ।	5 27	7 30
	3	22	4	रवि	द्विती दि	10:36 AM	आर्द्रा प्र	8:10 PM	ध्वांक्षः ।	27	30
	4	23	5	सोम	तृती दि	7:11 AM	पुन दि	5:42 PM	त्र्यहः, धौम्यः, 12:21 दिन कर्क में चन्द्र ।	27	31
	चतुर्थी तिथि का क्षय (चतु प्र 4:04 रात)										
	4	24	6	भौम	पंच प्र	1:23 PM	तिष्य दि	3:36 PM	प्रवर्धः, 12:57 रात वृष में शनि ।	27	31
	5	25	7	बुध	षष्ठी प्र	11:12 PM	अश्ले दि	1:59 PM	कुमार षष्ठी, क्षयः, 1:59 दिन सिंह में चन्द्र, 8:25 दिन से X	27	32
	6	26	8	गुरु	सप्त प्र	9:35 PM	मघा दि	12:54 PM	गजः ।	27	32
	6	27	9	शुक्र	अष्ट प्र	8:34 PM	पूफा दि	12:25 PM	ज्येष्ठ अष्टमी, क्षीर भवानी यात्रा, सिद्धः, 6:29 शां कन्या में चन्द्र ।	27	33
	7	28	10	शनि	नव प्र	8:09 PM	उफा दि	12:32 PM	उन्मूलम् ।	27	33
	7	29	11	रवि	दश प्र	8:18 PM	हस्त दि	1:13 PM	मानसम्, 11:50 रात तुला में चन्द्र ।	27	34
	7	30	12	सोम	एका प्र	9:00 PM	चित्र दि	2:26 PM	एकादशी व्रत, निरजला एकादशी, मुद्‌गरम् ।	27	34
	8	31	13	भौम	द्वाद प्र	10:10 PM	स्वात दि	4:08 PM	ध्वजः, मासान्त, 3:46 रात मिथुन में शुक्र ।	27	34
	8	आषाढ़	14	बुध	त्रयो प्र	11:46 AM	विशा दि	6:16 PM	प्रजापत्यः, 11:45 दिन वृश्चिक में चन्द्र, संक्रान्ति व्रत, Y	27	35
	8	2	15	गुरु	चर्तु प्र	1:43 AM	अनुरा प्र	8:45 PM	आनन्दः ।	27	35
	9	3	16	शुक्र	पूर्णि प्र	3:58 AM	ज्येष्ठ प्र	11:32 PM	चरः, पूर्णिमा व्रत, माता रूप भवानी जयन्ती, 11:32 रात धनु Z	27	35

मध्याह्न प्रतिपदा और द्वितीया का अपने दिन, तृतीया, चतुर्थी का पहले दिन, पंचमी से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

श्राद्ध प्रतिपदा से चतुर्थी तक पहले दिन, पंचमी से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

X 7:45 शां तक गण्डान्त, 3:23 दिन मिथुन में भौम । **Y** 8:51 रात से मिथुन में सूर्य (मुहूर्त 30) । **Z** में चन्द्र और मूल आरम्भ, कबीर जयन्ती, 4:50 दिन से गण्डान्त आरम्भ ।

आषाढ कृष्णपक्ष सप्तर्षि सं० 5076 विक्रमी सं० 2057 शाक: सं० 1922 ईस्वी सं० 2000

17 जून की ग्रहस्थिति:- वृष में बृहस्पति, शनि । मिथुन में सूर्य, भौम, बुध, शुक्र । कर्क में राहु । मकर में केतु

दिन	मान	आष	जून	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) ग्रीष्म ऋतु, उत्तरायण	सू उ	सू अ
14	9	4	17	शनि	प्रति	दिन रात	मूल प्र	2:33 AM	मुसुलम्, 6:18 प्रात: तक गण्डान्त ।	5 27	7 36
	9	5	18	रवि	प्रति दि	6:26 AM	पूषा	दिन रात	शूलम्, 12:27 दिन मकर में चन्द्र ।	27	36
	9	6	19	सोम	द्विती दि	9:00 AM	पूषा दि	5:40 AM	उन्मूलम् ।	27	36
	9	7	20	भौम	तृती दि	11:32 AM	उषा दि	8:47 AM	संकट चतुर्थी, मानसम् ।	27	37
	9	8	21	बुध	चतु दि	1:55 PM	श्रवण दि	11:46 AM	दक्षिणायन, छत्रम्, 1:04 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ ।	27	37
	9	9	22	गुरु	पंच दि	3:56 PM	धनि दि	2:25 PM	श्रीवत्स: ।	28	37
	9	10	23	शुक्र	षष्ठी दि	5:28 PM	शत दि	4:35 PM	सौम्य:, 5:01 दिन बुध वक्री ।	28	37
	9	11	24	शनि	सप्त दि	6:21 PM	पूभा दि	6:09 PM	कालदण्ड:, 11:43 दिन मीन में चन्द्र ।	28	37
	9	12	25	रवि	अष्ट दि	6:29 PM	उभा दि	6:58 PM	स्थिर ।	28	37
	9	13	26	सोम	नव दि	5:49 PM	रेव दि	7:01 PM	मातंग:, 7:01 शां मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 12:59 दिन X	29	38
	9	14	27	भौम	दश दि	4:23 PM	अश्वि दि	6:17 PM	अमृतम्, 12:47 रात तक गण्डान्त ।	29	38
	8	15	28	बुध	एका दि	2:13 PM	भर दि	4:51 PM	काण्ड:, 10:18 रात वृष में चन्द्र ।	29	38
	8	16	29	गुरु	द्वाद दि	11:27 AM	कृति दि	2:49 PM	अलापकम् ।	30	38
	8	17	30	शुक्र	त्रयो दि	8:11 AM	रोहि दि	12:19 PM	त्र्यह:, मैत्रम्, 10:54 रात मिथुन में चन्द्र ।	30	38
	चतुर्दशी का क्षय (चतु प्र 4:36 रात)										
	7	18	जुल	शनि	अमा प्र	12:52 AM	मृग दि	9:31 AM	अमावसी व्रत, वज्रम् ।	31	38

मध्याह्न प्रतिपदा का अपने दिन, द्वितीया, तृतीया का पहले दिन, चतुर्थी से द्वादशी तक अपने दिन, त्रयोदशी और चतुर्दशी का पहले दिन, अमावसी का अपने दिन । ***श्राद्ध*** प्रतिपदा का अपने दिन, द्विती से चतुर्दशी तक पहले दिन, अमावसी का अपने दिन । X गण्डान्त आरम्भ ।

आषाढ शुक्लपक्ष

सप्तर्षि सं॰ 5076 विक्रमी सं॰ 2057 शाकः सं॰ 1922 ईस्वी सं॰ 2000

2 जुलाई की ग्रहस्थितिः- वृष में बृहस्पति, शनि । मिथुन में सूर्य, भौम, बुध, शुक्र । कर्क में राहु । मकर में केतु ।

दिन	मान	आषा	जुला	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) वर्षा ऋतु, दक्षिणायन	सू उ	सू अ
14	7	19	2	रवि	प्रति प्र	9:06 PM	आर्द्रा दि	6:34 AM	ध्वांक्षः, (पुन प्र 3:41) 10:24 रात कर्क में चन्द्र ।	5 31	7 38
	6	20	3	सोम	द्विती दि	5:30 PM	तिष्या प्र	1:01 AM	प्रजापत्यः ।	31	38
	6	21	4	भौम	तृती दि	2:12 PM	अश्ले प्र	10:42 PM	आनन्दः,10:42 रात सिंह में चन्द्र,5:7 दिन से4:16 रात तक गण्डान्त	32	38
	5	22	5	बुध	चतु दि	11:21 AM	मघा प्र	8:53 PM	चरः ।	32	37
	4	23	6	गुरु	पंच दि	9:05 AM	पूफा प्र	7:41 PM	कुमार षष्ठी, मुसुलम्, 1:57 रात कन्या में चन्द्र ।	33	37
	4	24	7	शुक्र	षष्ठी दि	7:28 AM	उफा दि	7:10 PM	शूलम् ।	33	37
	3	25	8	शनि	सप्त दि	6:34 AM	हस्त दि	7:23 PM	हार सप्तमी, मृत्युः, 1:40 दिन कर्क में शुक्र ।	34	37
	2	26	9	रवि	अष्ट दि	6:24 AM	चित्र प्र	8:19 PM	हार अष्टमी, व्रत, काम्यः 7:53 प्रातः तुला में चन्द्र ।	34	37
	2	27	10	सोम	नव दि	6:57 AM	स्वात प्र	9:54 PM	हार नवमी, शारिका जयन्ती, ज़या देवी उत्सव (बिजबिहारा) छत्रम्।	35	36
	1	28	11	भौम	दश दि	8:08 AM	विशा प्र	12:03 AM	श्रीवत्सः, 5:32 शां वृश्चिक में चन्द्र ।	35	36
13	0	29	12	बुध	एका दि	9:50 AM	अनुरा प्र	2:38 AM	एकादशी व्रत, देवशयनी एकादशी, सौम्यः ।	36	36
	59	30	13	गुरु	द्वाद दि	11:57 AM	ज्येष्ठ प्र	5:31 AM	हार भाह, कालदण्डः, 5:31 प्रातः धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, X	36	36
	58	31	14	शुक्र	त्रयो दि	2:21 PM	मूल	दिन रात	स्थिरः, 12:17 दिन तक गण्डान्त ।	37	35
	57	32	15	शनि	चर्तु दि	4:53 PM	मूल दि	8:36 AM	ज्वाला चतुर्दशी, खिव यात्रा, मुसुलम्, मासान्त ।	38	35
	56	श्राव	16	रवि	पूर्णि दि	7:26 PM	पूषा दि	11:43 AM	गुरू पूर्णिमा व्रत, शूलम्, 6:28 शां मकर में चन्द्र, व्यास पूजा Y	38	34

मध्याह्न प्रतिपदा से चतुर्थी तक अपने दिन, पंचमी से द्वादशी तक पहले दिन, त्रयोदशी से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

श्राद्ध प्रतिपदा का अपने दिन, द्वितीय से पूर्णिमा तक पहले दिन । X लुकभवन यात्रा, 10:48 रात से गण्डान्त ।

Y संक्रान्ति व्रत, 7:46 प्रातः कर्क में सूर्य (मुहूर्त 30), 2:40 दिन शुक्र पश्चिम में उदय, खग्रास चन्द्र ग्रहण ।

श्रावण कृष्णपक्ष सप्तर्षि सं० 5076 विक्रमी सं० 2057 शाकः सं० 1922 ईस्वी सं० 2000

मिथुन में भौम, बुध । कर्क में सूर्य, शुक्र, राहु । मकर में केतु ।

17 जुलाई की ग्रहस्थितिः- वृष में बृहस्पति, शनि । मिथुन में भौम, बुध । कर्क में सूर्य, शुक्र, राहु । मकर में केतु ।

(ग्रह संचार बजे मिनटों में) वर्षा ऋतु, दक्षिणायन

दिन	मान	श्राव	जुला	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय		सू उ	सू अ
13	55	2	17	सोम	प्रति प्र	9:53 PM	उषा दि	2:47 PM	मृत्युः ।	5 39 39	7 34 34
	54	3	18	भौम	द्विती प्र	12:08 AM	श्रवण दि	5:40 PM	अलापकम्, 7:02 प्रातः बुध मार्गी ।	40	33
	53	4	19	बुध	तृती प्र	2:05 AM	धनि प्र	8:18 PM	मैत्रम्, 6:58 प्रातः कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ ।	41	33
	52	5	20	गुरु	चतु प्र	3:37 AM	शत प्र	10:32 PM	संकट चतुर्थी, यज्ञम् ।	41	32
	51	6	21	शुक्र	पंच प्र	4:39 AM	पूभा प्र	12:19 AM	पांजय यात्रा, ध्वांक्षः, 5:51 शां मीन में चन्द्र ।	42	32
	50	7	22	शनि	षष्ठी प्र	5:05 AM	उभा प्र	1:32 AM	धौम्यः, 8:06 रात कर्क में भौम ।	43	31
	48	8	23	रवि	सप्त प्र	4:54 AM	रेव प्र	2:08 AM	प्रवर्धः, 2:08 रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 7:58 शां से X	43	30
	47	9	24	सोम	अष्ट प्र	4:02 AM	अश्वि प्र	2:05 AM	क्षयः, 8:06 दिन तक गण्डान्त ।	44	30
	46	10	25	भौम	नव प्र	2:31 AM	भर प्र	1:22 AM	गजः ।	45	29
	45	11	26	बुध	दश प्र	12:24 AM	कृति प्र	12:03 AM	सिद्धः, 7:01 प्रातः वृष में चन्द्र ।	45	29
	43	12	27	गुरु	एका प्र	9:43 PM	रोहि प्र	10:11 PM	कमला एकादशी, व्रत, उन्मूलम् ।	46	28
	42	13	28	शुक्र	द्वाद दि	6:37 PM	मृग प्र	7:52 PM	मानसम्, 9:00 दिन मिथुन में चन्द्र ।	47	27
	41	14	29	शनि	त्रयो दि	3:11 PM	आर्द्रा दि	5:15 PM	मुद्गरम् ।	47	26
	39	15	30	रवि	चर्तु दि	11:35 AM	पुन दि	2:28 PM	ध्वजः, 9:10 दिन कर्क में चन्द्र, 9:27 रात मिथुन में राहु और Y	48	26
	38	16	31	सोम	अमा दि	7:56 AM	तिष्य दि	11:40 AM	त्र्यहः, अमावसी व्रत, प्रजापत्यः, 3:42 रात से गण्डान्त ।		

मध्याह्न प्रतिपदा से चतुर्दशी तक अपने दिन, अमावसी का पहले दिन ।

श्राद्ध प्रतिपदा से द्वादशी तक अपने दिन, त्रयोदशी से अमावसी तक पहले दिन ।

X गण्डान्त आरम्भ । **Y** 9:27 रात धनु में केतु ।

श्रावण शुक्लपक्ष

सप्तर्षि सं० 5076 विक्रमी सं० 2057 शाक: सं० 1922 ईस्वी सं० 2000

1 अगस्त की ग्रहस्थिति:- वृष में बृहस्पति, शनि । मिथुन में बुध, राहु । कर्क में सूर्य, भौम, शुक्र । धनु में केतु ।

दिन	मान	श्राव	अग	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) वर्षा ऋतु, दक्षिणायन	सू उ	सू अ
	प्रतिपदा तिथि का क्षय (प्रति प्र 4:26 रात)										
13	36	17	1	भौम	द्विती प्र	1:14 AM	अश्ले दि	9:02 AM	आनन्द:, 9:02 दिन सिंह में चन्द्र, 2:28 दिन तक गण्डान्त, X	5 49	7 25
	35	18	2	बुध	तृती प्र	10:28 PM	मघा दि	6:44 AM	(पुफा प्र 4:54) चर: । X 11:14 रात सिंह में शुक्र ।	49	24
	33	19	3	गुरु	चतु प्र	8:17 PM	उफा प्र	3:43 AM	मातंग:, 10:36 दिन कन्या में चन्द्र, 6:38 शां कर्क में बुध ।	50	23
	32	20	4	शुक्र	पंच दि	6:48 PM	हस्त प्र	3:15 AM	कुमार षष्ठी, अमृतम् ।	51	22
	30	21	5	शनि	षष्ठी दि	6:05 PM	चित्र प्र	3:34 AM	काण्ड:, 3:25 दिन तुला में चन्द्र ।	51	22
	29	22	6	रवि	सप्त दि	6:11 PM	स्वात प्र	4:40 AM	अलापकम् ।	52	21
	27	23	7	सोम	अष्ट दि	7:04 PM	विशा	दिन रात	अष्टमी व्रत, मैत्रम्, 12:02 रात वृश्चिक में चन्द्र ।	53	20
	26	24	8	भौम	नव प्र	8:38 PM	विशा दि	6:30 AM	श्रीवत्स: ।	53	19
	24	25	9	बुध	दश प्र	10:44 PM	अनुरा दि	8:56 AM	सौम्य: ।	54	18
	22	26	10	गुरु	एका प्र	1:10 AM	ज्येष्ठ दि	11:47 AM	पवित्रा एकादशी, व्रत, कालदण्ड:, 11:47 दिन धनु में चन्द्र और Y	55	17
	21	27	11	शुक्र	द्वाद प्र	3:46 AM	मलू दि	2:52 PM	श्रावण द्वादशी, शुपियन यात्रा, स्थिर: ।	56	16
	19	28	12	शनि	त्रयो	दिन रात	पूषा दि	6:01 PM	मातंग:, 12:45 रात मकर में चन्द्र ।	56	15
	17	29	13	रवि	त्रयो दि	6:19 AM	उषा प्र	9:02 PM	अमृतम्, Y मूल आरम्भ, 4:58 प्रात: से 6:34 शां तक गण्डान्त ।	57	14
	16	30	14	सोम	चर्तु दि	8:40 AM	श्रवण प्र	11:48 PM	सिद्ध: ।	58	13
	14	31	15	भौम	पूर्णि दि	10:44 AM	धनि प्र	2:14 AM	पू. व्रत, रक्षा बन्धन, अमरनाथ-थजीवारा यात्रा, उंमूलम्, 1:01 दिनZ	58	12

रक्षा बन्धन
15 अगस्त

मध्याह्न प्रतिपदा का पहले दिन, द्वितीया से त्रयोदशी तक अपने दिन, चतुर्दशी और पूर्णिमा का पहले दिन ।
श्राद्ध प्रतिपदा का पहले दिन, द्वितीया से पंचमी तक अपने दिन, षष्ठी से अष्ठमी तक पहले दिन, नवमी से त्रयोदशी तक अपने दिन, चतुर्दशी और पूर्णिमा का पहले दिन । Z कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, मासान्त, स्वतन्त्रता दिवस ।

भाद्रपद कृष्णपक्ष

सप्तर्षि सं० 5076 विक्रमी सं० 2057 शाकः सं० 1922 ईस्वी सं० 2000

16 अगस्त की ग्रहस्थितिः- वृष में बृहस्पति, शनि । मिथुन में राहु । कर्क में सूर्य, भौम, बुध । सिंह में शुक्र । धनु में केतु ।

दिन	मान	भाद्र	अग	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) वर्षा ऋतु - दक्षिणायन	सू उ	सू अ
13	12	1	16	बुध	प्रति दि	12:25 PM	शत प्र	4:17 AM	मानसम्, संक्रान्ति व्रत, 4:13 दिन सिंह में सूर्य (मुहूर्त 15) ।	5 59	7 11
	10	2	17	गुरु	द्विती दि	1:41 PM	पूभा प्र	5:55 AM	मुद्गरम्, 11:30 रात मीन में चन्द्र ।	5 60	10
	9	3	18	शुक्र	तृती दि	2:30 PM	उभा	दिन रात	संकट चतुर्थी, नवदल यात्रा, ध्वजः ।	6 0	9
	7	4	19	शनि	चतु दि	2:51 PM	उभा दि	7:05 AM	धौम्यः, 2:08 दिन सिंह में बुध ।	1	8
	5	5	20	रवि	पंच दि	2:45 PM	रवे दि	7:48 AM	चंदन षष्ठी (चन्द्र उदय 10:14 रात) , प्रवर्धः, 7:48 प्रातः X	2	7
	3	6	21	सोम	षष्ठी दि	2:09 PM	अश्वि दि	8:03 AM	क्षयः, 1:52 दिन तक गण्डान्त ।	2	6
	1	7	22	भौम	सप्त दि	1:05 PM	भर दि	7: 50 AM	जन्म अष्टमी (चन्द्रउदय 11:32 रात), गजः, 1:37 दिन वृष में चन्द्र।	3	4
12	60	8	23	बुध	अष्ट दि	11:32 AM	कृति दि	7:08 AM	(रोहि प्र 5:58) सिद्धः ।	4	3
	58	9	24	गुरु	नव दि	9:32 AM	मृग प्र	4:23 AM	मृत्युः, 5:11 दिन मिथुन में चन्द्र ।	4	2
	56	10	25	शुक्र	दश दि	7:07 AM	आर्द्रा प्र	2:27 AM	त्र्यहः, अज़ा एकादशी, व्रत, काम्यः ।	5	1
	एकादशी तिथि का क्षय (एका प्र 4:21 रात)										
	54	11	26	शनि	द्वाद प्र	1:19 AM	पुन प्र	12:15 AM	छत्रम्, 6:47 शां कर्क में चन्द्र, 9:06 प्रातः कन्या में शुक्र ।	6	6 60
	52	12	27	रवि	त्रयो प्र	10:09 PM	तिष्य प्र	9:53 PM	श्रीवत्सः ।	6	6 59
	50	13	28	सोम	चर्तु दि	6:57 PM	आश्ले प्र	7:29 PM	सौम्यः, 7:29 शां सिंह मे चन्द्र, 2:05 दिन से 12:55 रात गण्डान्त ।	7	57
	48	14	29	भौम	अमा दि	3:51 PM	मघा दि	5:12 PM	कुशामावसी, व्रत, कालदण्डः, सोमा मावसी ।	8	56

मध्याह प्रतिपदा से अष्ठमी तक अपने दिन, नवमी से एकादशी तक पहले दिन, द्वादशी से अमावसी तक अपने दिन । ***श्राद्ध*** प्रतिपदा से एकादशी तक पहले दिन, द्वादशी से चतुर्दशी अपने दिन, अमावसी का पहले दिन ।

X मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त 1:37 रात गण्डान्त ।

भाद्रपद शुक्लपक्ष

सप्तर्षि सं० 5076 विक्रमी सं० 2057 शाकः सं० 1922 ईस्वी सं० 2000

30 अगस्त की ग्रहस्थितिः- वृष में वृहस्पति, शनि । मिथुन में राहु । कर्क में भौम । सिंह में सूर्य, बुध । कन्या में शुक्र । धनु में केतु ।

दिन	मान	भाद्र	अग	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) शरद ऋतु - दक्षिणायन	सू उ	सू अ
12	47	15	30	बुध	प्रति दि	1:02 PM	पूफा दि	3:11 PM	स्थिरः, 8:50 रात कन्या में चन्द्र ।	6 8	6 55
	45	16	31	गुरु	द्विती दि	10:38 AM	उफा दि	1:38 PM	मातंगः ।	9	54
	43	17	सित	शुक्र	तृती दि	8:48 AM	हस्त दि	12:39 PM	हरितालिका तृतिया, अमृतम्, 12:33 रात तुला में चन्द्र ।	10	52
	41	18	2	शनि	चतु दि	7:41 AM	चित्र दि	12:23 PM	विनायक चतुर्थी, काण्डः ।	10	51
	39	19	3	रवि	पंच दि	7:21 AM	स्वात दि	12:55 PM	कुमार षष्ठी, वराह पंचमी, अलापकम् ।	11	50
	37	20	4	सोम	षष्ठी दि	7:50 AM	विशा दि	2:14 PM	मैत्रम्, 7:56 प्रातः वृश्चिक में चन्द्र, 12:28 दिन कन्या में बुध ।	12	49
	35	21	5	भौम	सप्त दि	9:05 AM	अनुरा दि	4:16 PM	वज्रम् ।	12	47
	33	22	6	बुध	अष्ट दि	11:00 AM	ज्येष्ठ प्र	6:54 PM	शारदा अष्टमी, गंगाष्टमी, ललेश्वरी जयन्ती, उमानगरी यज्ञ X	13	46
	31	23	7	गुरु	नव दि	1:22 PM	मूला प्र	9:54 PM	धौम्यः, 12:54 दिन सिंह में भौम ।	14	45
	29	24	8	शुक्र	दश दि	3:57 PM	पूषा प्र	1:02 AM	प्रवर्धः ।	14	43
	27	25	9	शनि	एका दि	6:31 PM	उषा प्र	4:04 AM	नारायणी एकादशी, गोतम नाग यात्रा, क्षयः,7:48 प्रातः मकर में चन्द्र	15	42
	25	26	10	रवि	द्वाद प्र	8:51 PM	श्रवण	दिन रात	मुसुलम् ।	15	41
	23	27	11	सोम	त्रयो प्र	10:47 PM	श्रवण दि	6:48 AM	व्यथ त्रुवाह, सिद्धः, 7:57 शां कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ ।	16	39
	21	28	12	भौम	चर्तु प्र	12:13 AM	धनि दि	9.07 AM	अनन्त चतुर्दशी, अनन्त नाग यात्रा, 8:20 दिन वक्री शनि, उन्मूलम्।	17	38
	19	29	13	बुध	पूर्णि प्र	1:08 AM	शत दि	10:56 AM	पूर्णिमा व्रत, मानसम्, 5:55 प्रातः मीन में चन्द्र ।	17	37

मध्याह्न प्रतिपदा का अपने दिन, द्वितीया से अष्ठमी तक पहले दिन, नवमी से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

श्राद्ध प्रतिपदा से एकादशी तक पहले दिन, द्वादशी से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

X ध्वांक्षः, 6:54 शां धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 12:16 दिन से 1:04 रात तक गण्डान्त ।

आश्विन कृष्णपक्ष

सप्तर्षि सं० 5076 विक्रमी सं० 2057 शाक: सं० 1922 ईस्वी सं० 2000

14 सितम्बर की ग्रहस्थितिः- वृष में बृहस्पति, शनि वक्री । मिथुन में राहु । सिंह में सूर्य, भौम । कन्या में बुध, शुक्र । धनु में केतु ।

दिन	मान्द	भाद्र	सित	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) शरद ऋतु, दक्षिणायन	सू उ	सू अ
12	17	30	14	गुरु	प्रति प्र	1:32 AM	पूभा दि	12:16 PM	पितृ पक्ष आरम्भ, काश्मिीरी पण्डितों का बलिदान दिवस, मुद्गरम् ।	6 18	6 35
	15	31	15	शुक्र	द्विती प्र	1:29 AM	उभा दि	1:06 PM	ध्वजः, मासान्त ।	19	34
	13	असो	16	शनि	तृती प्र	1:00 AM	रेव दि	1:30 PM	प्रजापत्यः, 1:30 दिन मेष मे चन्द्र और पंचक समाप्त, संक्रान्ति X	19	33
	11	2	17	रवि	चतु प्र	12:10 AM	अश्वि दि	1:32 PM	संकट चतुर्थी, आनन्दः ।	20	31
	9	3	18	सोम	पंच प्र	11:02 PM	भर दि	1:14 PM	चरः, 7:04 शां वृष में चन्द्र ।	21	30
	7	4	19	भौम	षष्ठी प्र	9:36 PM	कृति दि	12:38 PM	मुसुलम्, 8:28 शां तुला में शुक्र ।	21	29
	5	5	20	बुध	सप्त प्र	7:55 PM	रोहि दि	11:47 AM	साहिब सप्तमी, शूलम्, 11:13 रात मिथुन में चन्द्र ।	22	27
	3	6	21	गुरु	अष्ट दि	6:00 PM	मृग दि	10:41 AM	मृत्युः ।	23	26
	1	7	22	शुक्र	नव दि	3:51 PM	आर्द्रा दि	9:21 AM	काम्यः, 2:12 रात कर्क में चन्द्र ।	23	25
11	59	8	23	शनि	दश दि	1:31 PM	पुन दि	7:49 AM	छत्रम्, (तिष्या प्र 6:07), 1:29 रात तुला में बुध ।	24	23
	57	9	24	रवि	एका दि	11:02 AM	अश्ले प्र	4:20 AM	इन्द्र एकादशी, सन्यासियों का श्राद्ध, वज्रम्, 4:20 रात सिंह में Y	24	22
	55	10	25	सोम	द्वाद दि	8:28 AM	मघा प्र	2:33 AM	त्र्यहः, ध्वांक्षः, 10:53 दिन तक गण्डान्त ।	25	21
	त्रयोदशी तिथि का क्षय (त्रयो प्र 5:56 प्रात:)										
	53	11	26	भौम	चर्तु प्र	3:32 AM	पूफा प्र	12:53 AM	धौम्यः ।	26	19
	51	12	27	बुध	अमा प्र	1:24 AM	उफा प्र	11:28 PM	विजयेश्वर यात्रा, पित्र मावसी, व्रत, प्रवर्धः, 6:32प्रातः कन्या में चंद्र।	26	18

मध्याह्न प्रतिपदा से अष्ठमी तक अपने दिन, नवमी से त्रयोदशी पहले दिन, चतुर्दशी, अमावसी का अपने दिन ।

श्राद्ध प्रतिपदा से अष्ठमी तक अपने दिन, नवमी से त्रयोदशी तक पहले दिन, चतुर्दशी, अमावसी का अपने दिन।

X व्रत, 4:10 दिन कन्या में सूर्य (मुहूत 30), 7:23 प्रातः से 7:30 शां तक गण्डान्त । **Y** चन्द्र 10:47 रात से गण्डान्त।

आश्विन शुक्लपक्ष   सप्तर्षि सं० 5076 विक्रमी सं० 2057 शाकः सं० 1922 ईस्वी सं० 2000

28 सितम्बर की ग्रहस्थितिः- वृष में बृहस्पति, वक्रि शनि। मिथुन में राहु। सिंह में भौम। कन्या में सूर्य। तुला में बुध, शुक्र। धनु में केतु।

दिन	मान	असो	सित	वार	तिथि		समय	नक्षत्र		समय	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) शरद ऋतु, दक्षिणायन	सू उ	सू अ
11	49	13	28	गुरु	प्रति	प्र	11:42 PM	हस्त	प्र	10:27 PM	नवरात्र आरम्भ, क्षयः ।	6 27	6 17
	47	14	29	शुक्र	द्विती	प्र	10:32 PM	चित्र	प्र	9:58 PM	गजः, 10:14 दिन तुला में चन्द्र ।	28	15
	45	15	30	शनि	तृती	प्र	10:02 PM	स्वात	प्र	10:07 PM	सिद्धः, 11:10 दिन बृहस्पति वक्री ।	28	14
	43	16	अक्टू	रवि	चतु	प्र	10:16 PM	विशा	प्र	11:01 PM	उन्मूलम्, 4:49 दिन वृश्चिक में चन्द्र ।	29	13
	41	17	2	सोम	पंच	प्र	11:17 PM	अनुरा	प्र	12:39 AM	मानसम्, महात्मा गाँधी जयन्ती ।	30	11
	39	18	3	भौम	षष्ठी	प्र	12:59 AM	ज्येष्ठ	प्र	2:56 AM	कुमार षष्ठी, 2:56 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, यज्ञ दुर्गा X	30	10
	37	19	4	बुध	सप्त	प्र	3:14 AM	मूला	प्र	5:44 AM	ध्वजः, 9:39 दिन तक गण्डान्त ।	31	9
	35	20	5	गुरु	अष्ट	प्र	5:49 AM	पूषा		दिन रात	दुर्गा अष्टमी व्रत, प्रजापत्यः ।	32	7
	33	21	6	शुक्र	नव		दिन रात	पूषा	दि	8:49 AM	महानवमी, प्रवर्धः, 3:36 दिन मकर में चन्द्र ।	32	6
	31	22	7	शनि	नव	दि	8:26 AM	उषा	दि	11:54 AM	क्षयः, विजयादशमी, दशहरा ।	33	5
	29	23	8	रवि	दश	दि	10:49 AM	श्रवण	दि	2:45 PM	मुसुलम्, 3:54 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ ।	34	3
	28	24	9	सोम	एका	दि	12:47 PM	धनि	दि	5:09 PM	पापांकुशा एकादशी, व्रत, शूलम् ।	35	2
	26	25	10	भौम	द्वाद	दि	2:09 PM	शत	दि	6:58 PM	मृत्युः ।	35	1
	24	26	11	बुध	त्रयो	दि	2:51 PM	पूभा	प्र	8:09 PM	काम्यः, 1:49 दिन मीन में चन्द्र ।	36	5 60
	22	27	12	गुरु	चर्तु	दि	2:55 PM	उभा	प्र	8:43 PM	छत्रम् ।	37	58
	20	28	13	शुक्र	पूर्णि	दि	2:24 PM	रेव	प्र	8:44 PM	पूर्णिमा व्रत, श्रीवत्सः, 8:44 रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त Y	37	57

मध्याह्न प्रतिपदा से नवमी तक अपने दिन, दशमी पहले दिन, एकादशी से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

श्राद्ध प्रतिपदा से नवमी तक अपने दिन, दशमी से पूर्णिमा तक पहले दिन । X मन्दिर नगरोटा (जम्मू), मुद्गरम्, 8:23 रात से गण्डान्त आरम्भ । Y 2:42 दिन से 2:36 रात तक गण्डान्त ।

कार्तिक कृष्णपक्ष

सप्तर्षि सं० 5076 विक्रमी सं० 2057 शाक: सं० 1922 ईस्वी सं० 2000

14 अक्टूबर की ग्रहस्थिति:- वृष में बृहस्पति वक्री, शनि वक्री । मिथुन में राहु। सिंह में भौम। कन्या में सूर्य। तुला में बुध, शुक्र। धनु में केतु।

दिन	मान	अस	अक्टू	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) शरद ऋतु, दक्षिणायन	सू उ	सू अ
11	18	29	14	शनि	प्रति दि	1:24 PM	अश्वि प्र	8:17 PM	सौम्य:, 1:13 रात वृष में चन्द्र, 10:35 प्रात: वृश्चिक में शुक्र ।	6 38	5 56
	16	30	15	रवि	द्विती दि	12:00 PM	भर प्र	7:30 PM	श्री सिद्ध बब यज्ञ, कालदण्ड:, मासान्त ।	39	55
	14	कतक	16	सोम	तृती दि	10:20 AM	कृति प्र	6:28 PM	संकट चतुर्थी, करवा चौथ, स्थिर:, 4:45 रात तुला में सूर्य (मु. 45)	40	53
	12	2	17	भौम	चतु दि	8:29 AM	रोहि दि	5:18 PM	त्र्यह:, मातंग:, 4:49 रात मिथुन में चन्द्र, संक्रान्ति व्रत ।	40	52
	पंचमी तिथि का क्षय (पंच प्र 6:32 प्रात:)										
	10	3	18	बुध	षष्ठी प्र	4:32 AM	मृग दि	4:02 PM	अमृतम् ।	41	51
	8	4	19	गुरु	सप्त प्र	2:31 AM	आर्द्रा दि	2:45 PM	काण्ड:, 7:22 प्रात: बुध वक्री ।	42	50
	6	5	20	शुक्र	अष्ट प्र	12:30 AM	पुन दि	1:27 PM	अलापकम्, 7:46 प्रात: कर्क में चन्द्र ।	43	49
	4	6	21	शनि	नव प्र	10:30 PM	तिष्य दि	12:10 PM	मैत्रम्	43	47
	2	7	22	रवि	दश प्र	8:34 PM	अश्ले दि	10:54 AM	वज्रम्, 10:54 दिन सिंह में चन्द्र, 5:13 प्रात: से 4:36 रात X	44	46
	0	8	23	सोम	एका प्र	6:42 PM	मघा दि	9:43 AM	ध्वांक्ष: । X तक गण्डान्त ।	45	45
10	58	9	24	भौम	द्वाद दि	4:58 PM	पूफा दि	8:38 AM	धौम्य:, 2:25 दिन कन्या में चन्द्र ।	46	44
	57	10	25	बुध	त्रयो दि	3:28 PM	उफा दि	7:44 AM	प्रवर्ध:, 9:19 प्रात: कन्या में भौम ।	46	43
	55	11	26	गुरु	चर्तु दिं	2:16 PM	हस्त दि	7:06 AM	दीपमाला, क्षय:, 6:59 शां तुला में चन्द्र ।	47	42
	53	12	27	शुक्र	अमा दि	1:29 PM	चित्र दि	6:52 AM	अमावसी व्रत, गज: ।	48	41

दीपमाला
26 अक्टूबर

मध्याह्न प्रतिपदा, द्वितीया का अपने दिन, तृतीया से पंचमी तक पहले दिन, षष्ठी से अमावसी तक अपने दिन ।

श्राद्ध प्रतिपदा से पंचमी तक पहले दिन, षष्ठी से द्वादशी तक अपने दिन, त्रयोदशी से अमावसी तक पहले दिन ।

कार्तिक शुक्लपक्ष

सप्तर्षि सं० 5076 विक्रमी सं० 2057 शाक: सं० 1922 ईस्वी सं० 2000

28 अक्टूबर की ग्रहस्थितिः- वृष में बृहस्पति, शनि वक्री। मिथुन में राहु। कन्या में भौम। तुला में सूर्य, बुध। वृश्चिक में शुक्र। धनु में केतु।

दिन	मान	कतक	अक्टू	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन	सू उ	सू अ
10	51	13	28	शनि	प्रति दि	1:14 PM	स्वात दि	7:06 AM	सिद्धः, 1:42 रात वृश्चिक में चन्द्र ।	6 49	5 40
	49	14	29	रवि	द्विती दि	1:35 PM	विशा दि	7:54 AM	उन्मूलम्, भाई दूज, विश्व कर्मा पूजा ।	50	39
	47	15	30	सोम	तृती दि	2:35 PM	अनुरा दि	9:19 AM	मानसम्, 4:52 रात से गण्डान्त ।	51	38
	46	16	31	भौम	चतु दि	4:13 PM	ज्येष्ठ दि	11:22 AM	मुद्गरम्, 11:22 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 6:02 शा X	51	37
	44	17	नव.	बुध	पंच प्र	6:24 PM	मूल दि	1:57 PM	ध्वजः । X गण्डान्त समाप्त ।	52	36
	42	18	2	गुरु	षष्ठी प्र	8:57 PM	पूषा दि	4:55 PM	कुमार षष्ठी, प्रजापत्यः, 11:43 रात मकर में चन्द्र ।	53	35
	40	19	3	शुक्र	सप्त प्र	11:39 PM	उषा प्र	8:03 PM	स्वामी गोकुलनाथ जी जयन्ती, आनन्दः ।	54	34
	39	20	4	शनि	अष्ट प्र	2:12 AM	श्रवण प्र	11:05 PM	अष्टमी व्रत, स्थिरः ।	55	33
	37	21	5	रवि	नव प्र	4:21 AM	धनि प्र	1:46 AM	मातंगः, 12:25 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ ।	56	32
	35	22	6	सोम	दश प्र	5:53 AM	शत प्र	3:53 AM	अमृतम् ।	57	32
	33	23	7	भौम	एका प्र	6:42 AM	पूभा प्र	5:18 AM	हरिबोधिनी एकादशी, शिवस्वाप, काण्डः, 10:26 रात मीन में चन्द्र Y	57	31
	32	24	8	बुध	द्वाद प्र	6:43 AM	उभा प्र	5:58 AM	अलापकम्, 8:22 प्रातः बुध मार्गी । Y 5:16 रात धनु में शुक्र ।	58	30
	30	25	9	गुरु	त्रयो प्र	6:00 AM	रेव प्र	5:54 AM	मैत्रम्, 5:54 रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 11:54 रात Z	59	29
	29	26	10	शुक्र	चर्तु प्र	4:38 AM	अश्नि प्र	5:12 AM	वज्रम्, 11:45 दिन तक गण्डान्त ।	7 0	29
	27	27	11	शनि	पूर्णि प्र	2:46 AM	भर प्र	4:01 AM	पूर्णिमा व्रत, गुरु नानक जयन्ती, ध्वांक्षः । Z से गण्डान्त ।	1	28

मध्याह्न प्रतिपदा से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

श्राद्ध प्रतिपदा से चतुर्थी तक पहले दिन, पंचमी से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष सप्तर्षि सं० 5076 विक्रमी सं० 2057 शाक: सं० 1922 ईस्वी सं० 2000

12 नवम्बर की ग्रहस्थिति:- वृष में बृहस्पति, शनि वक्री । मिथुन में राहु । कन्या में भौम । तुला में सूर्य, बुध । धनु में शुक्र, केतु ।

दिन	मान	कतक	नव	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	(ग्रह संवार बजे मिनटों में) हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन	सू उ	सू अ
10	25	28	12	रवि	प्रति प्र	12:30 AM	कृति प्र	2:27 AM	धौम्य:, 9:37 दिन वृष में चन्द्र ।	7 2	5 27
	24	29	13	सोम	द्विती प्र	10:00 PM	रोहि प्र	12:39 AM	प्रवर्ध: ।	3	27
	22	30	14	भौम	तृती प्र	7:23 PM	मृग प्र	10:45 PM	संकट चतुर्थी, क्षय:, 11:41 दिन मिथुन में चन्द्र, मासान्त ।	4	26
	21	मार्ग	15	बुध	चतु दि	4:47 PM	आर्द्रा प्र	8:53 PM	गज:, 3:54 रात वृश्चिक में सूर्य (मुहूर्त 45) ।	5	25
	19	2	16	गुरु	पंच दि	2:17 PM	पुन प्र	7:08 PM	सिद्ध:, 1:35 दिन कर्क मे चन्द्र, संक्रान्ति व्रत ।	5	25
	18	3	17	शुक्र	षष्ठी दि	11:58 AM	तिष्य प्र	5:35 PM	महाकाल भैरवाष्टमी, उन्मूलम् ।	6	24
	16	4	18	शनि	सप्त दि	9:52 AM	अश्ले दि	4:15 PM	मानसम्, 4:15 दिन सिंह में चन्द्र, 10:36 दिन से 10:00 रात X	7	24
	15	5	19	रवि	अष्ट दि	8:03 AM	मघा दि	3:11 PM	त्र्यह:, मुद्गरम् । X तक गण्डान्त ।	8	23
	नवमी तिथि का क्षय (नव प्र 6:30 प्रात:)										
	14	6	20	सोम	दश प्र	5:16 AM	पूफा दि	2:25 PM	ध्वांक्ष:, 8:19 रात कन्या में चन्द्र ।	9	23
	12	7	21	भौम	एका प्र	4:22 AM	उफा दि	1:57 PM	उत्पन्ना एकादशी, प्रजापत्य: ।	10	22
	11	8	22	बुध	द्वाद प्र	3:48 AM	हस्त दि	1:49 PM	आनन्द:, 1:57 रात तुला में चन्द्र ।	11	22
	10	9	23	गुरु	त्रयो प्र	3:39 AM	चित्र दि	2:02 PM	चर: ।	12	22
	9	10	24	शुक्र	चर्तु प्र	3:56 AM	स्वात दि	2:40 PM	मुसुलम् ।	13	21
	7	11	25	शनि	अमा प्र	4:42 AM	विशा दि	3:44 PM	अमावसी व्रत, शूलम्, 9:29 दिन वृश्चिक में चन्द्र ।	14	21

मध्याह्न प्रतिपदा से पंचमी तक अपने दिन, षष्ठी से नवमी तक पहले दिन, दशमी से अमावसी तक अपने दिन।

श्राद्ध प्रतिपदा से चतुर्थी तक अपने दिन, पंचमी से नवमी तक पहले दिन, दशमी से अमावसी तक अपने दिन ।

मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष

सप्तर्षि सं० 5076 विक्रमी सं० 2057 शाक: सं० 1922 ईस्वी 2000

26 नवम्बर की ग्रहस्थिति:- वृष में बृहस्पति, शनि वक्री । मिथुन में राहु। कन्या में भौम। तुला में बुध। वृश्चिक में सूर्य। धनु में शुक्र, केतु ।

दिन	मान	मार्ग	नव	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	(ग्रह संवार बजे मिनटों में) हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन	सू उ 7 14	सू अ 5 21
10	6	12	26	रवि	प्रति प्र	5:59 AM	अनुरा दि	5:17 PM	मृत्यु: ।	15	20
	5	13	27	सोम	द्विती दिन रात		ज्येष्ठ प्र	7:20 PM	काम्य:, 7:20 शां धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 12:51 दिन से X	16	20
	4	14	28	भौम	द्विती दि	7:46 AM	मूला प्र	9:50 PM	छत्रम् । X 1:59 रात तक गण्डान्त ।	17	20
	3	15	29	बुध	तृती दि	10:01 AM	पूषा प्र	12:42 AM	श्रीवत्स:, 1:57 रात वृश्चिक में बुध ।	18	20
	2	16	30	गुरु	चतु दि	12:35 PM	उषा प्र	3:50 AM	सौम्य:, 7:29 प्रात: मकर में चन्द्र ।	19	20
	1	17	दिस	शुक्र	पंच दि	3:20 PM	श्रवण प्र	7:00 AM	धौम्य: ।	20	20
	60	18	2	शनि	षष्ठी प्र	6:02 PM	धनि दिन रात		कुमार षष्ठी, प्रवर्ध:, 8:28 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ ।	21	20
9	59	19	3	रवि	सप्त प्र	8:25 PM	धनि दि	9:58 AM	मातंग:, 8:53 प्रात: मकर में शुक्र ।	21	20
	58	20	4	सोम	अष्ट प्र	10:17 PM	शत दि	12:30 PM	अष्टमी व्रत, अमृतम् ।	22	20
	57	21	5	भौम	नव प्र	11:26 PM	पूभा दि	2:27 PM	काण्ड:, 7:55 प्रात: मीन में चन्द्र ।	23	20
	57	22	6	बुध	दश प्र	11:47 PM	उभा दि	3:38 PM	मोक्षदा एकादशी, व्रत, गीता जयन्ती, अलापकम् ।	24	20
	56	23	7	गुरु	एका प्र	11:18 PM	रेव दि	4:01 PM	मैत्रम्, 4:01 दिन मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 9:52 दिन Y	25	20
	55	24	8	शुक्र	द्वाद प्र	10:01 PM	अश्वि दि	3:36 PM	वज्रम् । Y से 9:52 रात तक गण्डान्त ।	25	20
	55	25	9	शनि	त्रयो प्र	8:03 PM	भर दि	2:29 PM	दत्तत्रेय जयन्ती, ध्वांक्ष:, 8:02 रात वृष में चन्द्र ।	26	20
	54	26	10	रवि	चर्तु प्र	5:31 PM	कृति दि	12:46 PM	धौम्य: ।	27	20
	53	27	11	सोम	पूर्णि दि	2:35 PM	रोहि दि	10:37 AM	पूर्णिमा व्रत, प्रवर्ध:, 9:24 रात मिथुन में चन्द्र ।		

मध्याह्न प्रतिपदा, द्वितीया का अपने दिन, तृतीया का पहले दिन, चतुर्थी से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

श्राद्ध प्रतिपदा, द्वितीया अपने दिन, तृतीया से पंचमी तक पहले दिन, षष्ठी से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

पौष कृष्णपक्ष

सप्तर्षि सं० 5076 विक्रमी सं० 2057 शाकः सं० 1922 ईस्वी सं० 2000

12 दिसम्बर की ग्रहस्थितिः- वृष में बृहस्पति, शनि वक्री । मिथुन में राहु। कन्या भौम। वृश्चिक में सूर्य, बुध। धनु में केतु। मकर में शुक्र।

दिन	मान	मार्ग	दिस	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन	सू उ	सू अ
9	53	28	12	भौम	प्रति दि	11:23 AM	मृग दि	8:11 AM	(आर्द्रा प्र 5:38) क्षयः, मुज्जहर तहर ।	5 28	5 21
	53	29	13	बुध	द्विती दि	8:05 AM	पुन प्र	3:08 AM	ध्वाक्षः, मुसुलम्, 9:43 रात कर्क में चन्द्र, 12:50 दिन तुला में भौम ।	28	21
तृतिया तिथि का क्षय (तृति प्र 4:51 रात)											
	52	30	14	गुरु	चतु प्र	1:50 AM	तिष्य प्र	12:48 AM	संकट चतुर्थी, शूलम्, मासान्त ।	29	21
	52	पौष	15	शुक्र	पंच प्र	11:06 PM	अश्ले प्र	10:47 PM	मृत्युः, 10:47 रात सिंह में चन्द्र, संक्रान्ति व्रत, 6:30 शां धनु में X	30	21
	51	2	16	शनि	षष्ठी प्र	8:47 PM	मघा प्र	9:09 PM	काम्यः ।	30	22
	51	3	17	रवि	सप्त प्र	6:56 PM	पूफा प्र	8:00 PM	छत्रम्, 1:53 रात कन्या में चन्द्र ।	31	22
	51	4	18	सोम	अष्ट प्र	5:37 PM	उफा प्र	7:22 PM	महाकाली जयन्ती, श्रीवत्सः ।	32	23
	51	5	19	भौम	नव दि	4:51 PM	हस्त प्र	7:16 PM	सौम्यः, 10:07 दिन धनु में बुध ।	32	23
	51	6	20	बुध	दश दि	4:38 PM	चित्र प्र	7:42 PM	कालदण्डः, 7:20 प्रातः तुला में चन्द्र ।	33	23
	51	7	21	गुरु	एका दि	4:57 PM	स्वात प्र	8:38 PM	सफलता एकादशी, स्थिरः ।	33	24
	51	8	22	शुक्र	द्वाद दि	5:46 PM	विशा प्र	10:04 PM	मातंगः, 3:44 दिन वृश्चिक में चन्द्र ।	34	24
	51	9	23	शनि	त्रयो दि	7:03 PM	अनुरा प्र	11:56 PM	अमृतम् ।	34	25
	51	10	24	रवि	चर्तु दि	8:46 PM	ज्यष्ठे प्र	2:12 AM	काण्डः, 2:12 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ Y	35	26
	51	11	25	सोम	अमा दि	10:52 PM	मलू प्र	4:49 AM	यक्षा मावसी, अमावसी व्रत, अलापकम्, 8:52 दिन तक गण्डान्त ।	35	26

मध्याह प्रतिपदा से तृतीया तक पहले दिन, चतुर्थी से द्वादशी तक अपने दिन, त्रयोदशी से अमावसी पहले दिन ।

श्राद्ध प्रतिपदा से तृतीया तक पहले दिन, चतुर्थी से नवमी तक अपने दिन, दशमी से अमावसी तक पहले दिन ।

X सूर्य (मुहूर्त 15) । Y 7:39 शां से गण्डान्त ।

पौष शुक्लपक्ष

सप्तर्षि सं० 5076 विक्रमी सं० 2057 शाकः सं० 1922 ईस्वी सं० 2000-2001

26 दिसंबर की ग्रहस्थितिः- वृष में बृहस्पति, वक्रि शनि । मिथुन में राहु । तुला में भौम । धनु में सूर्य, बुध, केतु । मकर में शुक्र ।

दिन	मान	पौष	दिस	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) शिशर ऋतु, उत्तरायण	सू उ	सू अ
9	51	12	26	भौम	प्रति प्र	1:17 AM	पूषा	दिन रात	मैत्रम् ।	7 36	5 27
	51	13	27	बुध	द्विती प्र	3:56 AM	पूषा दि	7:43 AM	श्रीवत्सः, 2:25 दिन मकर में चन्द्र ।	36	27
	52	14	28	गुरु	तृती प्र	6:41 AM	उषा दि	10:48 AM	सौम्यः ।	36	28
	52	15	29	शुक्र	चतु	दिन रात	श्रवण दि	1:58 PM	धौम्यः, 3:30 रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ, 10:28 X	37	29
	52	16	30	शनि	चतु दि	9:24 AM	धनि दि	5:02 PM	प्रवर्धः । X दिन कुम्भ में शुक्र ।	37	29
	53	17	31	रवि	पंच दि	11:54 AM	शत प्र	7:52 PM	क्षयः, कुमार षष्ठी ।	37	30
	53	18	जन.	सोम	षष्ठी दि	2:00 PM	पूभा प्र	10:16 PM	इस्वी 2001, गजः, 3:39 दिन मीन में चन्द्र ।	37	31
	54	19	2	भौम	सप्त दि	3:32 PM	उभा [illegible]	12:05 AM	सिद्धः ।	38	32
	55	20	3	बुध	अष्ट दि	4:21 PM	रेव प्र	1:10 AM	अष्टमी व्रत, उन्मूलम्, 1:10 रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त Y	38	32
	55	21	4	गुरु	नव दि	4:22 PM	अश्वि प्र	1:29 AM	मानसम्, 7:14 प्रातः तक गण्डान्त ।	38	33
	56	22	5	शुक्र	दश दि	3:35 PM	भर प्र	1:00 AM	मुद्गरम्, 6:49 रात(प्रातः) वृष में चन्द्र ।	38	34
	57	23	6	शनि	एका दि	2:00 PM	कृति प्र	11:47 PM	पुत्रदा एकादशी, व्रत, ध्वजः, 2:10 दिन मकर में बुध ।	38	35
	57	24	7	रवि	द्वाद दि	11:43 AM	रोहि प्र	9:55 PM	प्रजापत्यः ।	38	36
	58	25	8	सोम	त्रयो दि	8:50 AM	मृग प्र	7:32 PM	त्र्यहः, आनन्दः, 8:41 दिन मिथुन में चन्द्र ।	38	36
	चतुर्दशी तिथि का क्षय (चर्तु प्र 5:31 प्रातः)										
	59	26	9	भौम	पूर्णि प्र	1:56 AM	आर्द्रा दि	4:47 PM	पूर्णिमा व्रत, चरः, खग्रास चन्द्र ग्रहण ।	38	37

मध्याह्न प्रतिपदा से चतुर्थी तक अपने दिन, पंचमी का पहले दिन, षष्ठी से एकादशी तक अपने दिन, द्वादशी से चतुर्दशी पहले दिन, पूर्णिमा अपने दिन । ***श्राद्ध*** प्रतिपदा से चतुर्थी तक अपने दिन, पंचमी से चतुर्दशी तक पहले दिन, पूर्णिमा को अपने दिन । Y 6:53 [illegible] ।

माघ कृष्णपक्ष

सप्तर्षि सं० 5076 विक्रमीं सं० 2057 शाक: सं० 1922 ईस्वी सं० 2001

10 जनवरी की ग्रहस्थितिः- वृष में बृहस्पति, शनि वक्री । मिथुन में राहु। तुला में भौम। धनु में सूर्य, केतु। मकर में बुध। कुम्भ में शुक्र।

दिन	[illegible]	पौष	जन	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) शिशर ऋतु, उत्तरायण	सू उ	सू अ
9	60	27	10	बुध	प्रति प्र	10:14 PM	पुन प्र	1:51 PM	मुसुलम्, 8:34 दिन कर्क में चन्द्र ।	7 38	5 38
10	1	28	11	गुरु	द्विती प्र	6:35 PM	तिष्य दि	10:54 AM	शूलम्, 2:48 रात से 1:23 दिन तक गण्डान्त ।	38	39
	2	29	12	शुक्र	तृती दि	3:08 PM	अश्ले दि	8:06 AM	(मघा प्र5:37)संकट चतुर्थी, मृत्युः, 8:06 दिन सिंह में चन्द्र, लोड़ी ।	38	40
	3	माघ	13	शनि	चतु दि	12:04 PM	पूफा प्र	3:38 AM	अलापकम्, 5:13 रात मकर में सूर्य (मुहूर्त 45) ।	38	41
	4	2	14	रवि	पंच दि	9:31 AM	उफा प्र	2:14 AM	मैत्रम्, 9:17 दिन कन्या में चन्द्र, शिशर संक्रान्ति व्रत ।	38	42
	5	3	15	सोम	षष्ठ दि	7:38 AM	हस्त प्र	1:31 AM	त्र्यहः, साहिब सप्तमी, वज्रम्, स्वामी विवेकानन्द जी जयन्ती ।	38	43
	सप्तमी तिथि का क्षय (सप्तमी प्र 6:25 प्रात:)								सप्तमी तिथि के क्षय के विषय मे 138 पृष्ठ पर नोट अवश्य पढ़ें।		
	6	4	16	भौम	अष्ट प्र	5:58 AM	चित्र प्र	1:32 AM	ध्वांक्षः, 1:32 दिन तुला में चन्द्र ।	37	44
	7	5	17	बुध	नव प्र	6:16 AM	स्वात प्र	2:16 AM	धौम्यः ।	37	45
	8	6	18	गुरु	दश प्र	7:15 AM	विशा प्र	3:42 AM	प्रवर्धः, 9:21 रात वृश्चिक में चन्द्र ।	37	45
	10	7	19	शुक्र	एका	दिन रात	अनुरा प्र	5:42 AM	षट्तिला एकादशी, काश्मिीरी पण्डितों का जन्म भूमि से X	37	46
	11	8	20	शनि	एका दि	8:50 AM	ज्येष्ठ	दिन रात	गजः । X निष्कासन दिवस, क्षयः ।	36	47
	12	9	21	रवि	द्वाद दि	10:54 AM	ज्येष्ठ दि	8:10 AM	काण्डः, 8:10 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ ।	36	48
	14	10	22	सोम	त्रयो दि	1:18 PM	मूल दि	10:58 AM	अलापकम्, शिव चतुर्दशी ।	36	49
	15	11	23	भौम	चर्तु दि	3:55 PM	पूषा दि	1:59 PM	मैत्रम्, 8:47 रात मकर में चन्द्र ।	35	50
	16	12	24	बुध	अमा प्र	6:38 PM	उषा दि	5:06 PM	अमावसी व्रत, वज्रम्, 5:54 रात शनि मार्गी ।	35	51

मध्याह्न प्रतिपदा से चतुर्थी तक अपने दिन, पंचमी से षष्ठी तक पहले दिन, सप्तमी से एकादशी तक अपने दिन, द्वादशी पहले दिन, त्रयोदशी से अमावसी तक अपने दिन । *श्राद्ध* प्रति से तृतीया तक अपने दिन, चतुर्थी से षष्ठी तक पहले दिन, सप्तमी से एकादशी तक अपने दिन, द्वादशी से चतुर्दशी तक पहले दिन, अमावसी का अपने दिन ।

माघ शुक्लपक्ष

सप्तर्षि सं॰ 5076 विक्रमी सं॰ 2057 शाकः सं॰ 1922 ईस्वी सं॰ 2001

25 जनवरी की ग्रहस्थिति वृष में बृहस्पति, शनि । मिथुन में राहु । तुला में भौम । धनु में केतु । मकर में सूर्य, बुध । कुम्भ में शुक्र ।

दिन	मान	माघ	जन	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) शिशर ऋतु, उत्तरायण	सू उ	सू अ
10	18	13	25	गुरु	प्रति प्र	9:20 PM	श्रवण प्र	8:13 PM	ध्वजः, 11:28 रात कुम्भ में बुध, 10:15 दिन गुरु मार्गी ।	7 34	5 52
	19	14	26	शुक्र	द्विती प्र	11:55 PM	धनि प्र	11:14 PM	प्रजापत्यः, गणतन्त्र दिवस, 9:43 दिन कुम्भ में चन्द्र और Q	34	53
	21	15	27	शनि	तृती प्र	2:18 AM	शत प्र	2:03 AM	गौरी तृतिया, आनन्दः ।	33	54
	22	16	28	रवि	चतु प्र	4:22 AM	पूभा प्र	4:35 AM	त्रिपुरा चतुर्थी, चरः, 9:57 रात मीन में चन्द्र ।	33	55
	24	17	29	सोम	पंच प्र	6:00 AM	उभा प्र	6:42 AM	वसंत पंचमी, मुसुलम् । Q पंचक आरम्भ, 5:53 रात मीन में शुक्र ।	32	56
	25	18	30	भौम	षष्ठी प्र	7:06 AM	रेव	दिन रात	कुमार षष्ठी, शूलम्, 1:53 रात से गण्डान्त ।	31	57
	27	19	31	बुध	सप्त	दिन रात	रेव दि	8:18 AM	सूर्य सप्तमी, उन्मूलम्, 8:18 दिन मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त X	31	58
	29	20	फर	गुरु	सप्त दि	7:35 AM	अश्वि दि	9:17 AM	त्र्यहः, भीष्माष्टमी, व्रत, मानसम् ।	30	59
	अष्टमी तिथि का क्षय (अष्ट प्र 7:21 प्रातः)										
	30	21	2	शुक्र	नव प्र	6:24 AM	भर दि	9:36 AM	मुद्गरम्, 3:29 दिन वृष में चन्द्र ।	29	5 60
	32	22	3	शनि	दश प्र	4:44 AM	कृति दि	9:13 AM	ध्वजः, 2:32 दिन वृश्चिक में भौम, 7:20 प्रातः बुध वक्री ।	29	6 1
	34	23	4	रवि	एका प्र	2:24 AM	रोहि दि	8:08 AM	(मृग प्र 6:24) भीमसेन काह, जया काह, एकादशी व्रत, Y	28	1
	35	24	5	सोम	द्वाद प्र	11:31 PM	आर्द्रा प्र	4:08 AM	कालदण्डः ।	27	2
	37	25	6	भौम	त्रयो प्र	8:10 PM	पुन प्र	1:26 AM	यक्षाणी चतुर्दशी, स्थिरः, 8:06 रात कर्क में चन्द्र ।	26	3
	39	26	7	बुध	चर्तु दि	4:31 PM	तिष्य प्र	10:30 PM	मातंगः। X 2:32 दिन तक गण्डान्त, मार्तण्ड (मट्टन) तीर्थ यात्रा ।	25	4
	41	27	8	गुरु	पूर्णि दि	12:43 PM	अश्ले प्र	7:27 PM	माघ पूर्णिमा, काव पुनिम, पूर्णिमा व्रत, अमृतम्, 7:27 शां सिंह Z	25	5

मध्याह्न प्रतिपदा से सप्तमी तक अपने दिन, अष्ठमी पहले दिन, नवमी से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

श्राद्ध प्रतिपदा से सप्तमी तक अपने दिन, अष्ठमी का पहले दिन, नवमी से चतुर्दशी तक अपने दिन, पूर्णिमा का पहले दिन।

Y प्रजापत्यः, 7:15 [illegible] मिथुन में चन्द्र, 7:20 बुध वक्री। Z में चन्द्र 2:12 दिन से 12:43 रात तक गण्डान्त ।

फाल्गुन कृष्णपक्ष

सप्तर्षि सं० 5076 विक्रमी सं० 2057 शाकः सं० 1922 ईस्वी सं० 2001

9 फरवरी की ग्रहस्थितिः- वृष में बृहस्पति, शनि। मिथुन में राहु। वृश्चिक में भौम। धनु में केतु। मकर में सूर्य। कुम्भ में बुध। मीन में शुक्र।

दिन	मान	माघ	फर	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) शिशर ऋतु, उत्तरायण	सू उ	सू अ
10	42	28	9	शुक्र	प्रति दि	8:58 AM	मघा दि	4:31 PM	त्र्यहः, काण्डः ।	7 24	6 6
	द्वितीया तिथि का क्षय (द्विती प्र 5:26 प्रातः)										
	44	29	10	शनि	तृती प्र	2:19 AM	पूफा दि	1:52 PM	अलापकम्, 7:20 शां कन्या में चन्द्र ।	23	7
	46	30	11	रवि	चतु प्र	11:45 PM	उफा दि	11:40 AM	संकट चतुर्थी, मैत्रम्, मासान्त ।	22	8
	48	फा	12	सोम	पंच प्र	9:53 PM	हस्त दि	10:07 AM	वज्रम्, 9:45 रात तुला में चन्द्र, संक्रान्ति व्रत, 6:14 शां कुम्भ X	21	9
	50	2	13	भौम	षष्ठी प्र	8:50 PM	चित्र दि	9:19 AM	ध्वांक्षः, 3:47 दिन मकर में वक्री बुध ।	20	10
	51	3	14	बुध	सप्त प्र	8:40 PM	स्वात दि	9:21 AM	धौम्यः, 4:02 रात वृश्चिक में चन्द्र ।	19	10
	53	4	15	गुरु	अष्ट प्र	9:21 PM	विशा दि	10:13 AM	होरा अष्टमी, व्रत, चक्रेश्वर यात्रा, प्रवर्धः ।	18	11
	55	5	16	शुक्र	नव प्र	10:48 PM	अनुरा दि	11:53 AM	क्षयः ।	17	12
	57	6	17	शनि	दश प्र	12:52 AM	ज्येष्ठ दि	2:12 PM	गजः, 2:12 दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 7:39 प्रातः से Y	16	13
	59	7	18	रवि	एका प्र	3:23 AM	मूला दि	5:01 PM	विजया एकादशी, सिद्धः ।	15	14
11	1	8	19	सोम	द्वाद प्र	6:06 AM	पूषा प्र	8:06 PM	उन्मूलम्, 2:55 रात मकर में चन्द्र ।	14	15
	3	9	20	भौम	त्रयो दिन रात		उषा प्र	11:17 PM	मानसम्, शिवरात्रि ।	13	16
	5	10	21	बुध	त्रयो दि	8:50 AM	श्रवण प्र	2:24 AM	छत्रम्, शिवचतुर्दशी ।	12	16
	7	11	22	गुरु	चर्तु दि	11:28 AM	धनि प्र	5:20 AM	श्रीवत्सः, 3:22 दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ ।	11	17
	9	12	23	शुक्र	अमा दि	1:52 PM	शत दिन रात		अमावसी व्रत, सौम्यः, डून्य अमावस्या ।	9	18

शिवरात्रि
20 फरवरी

मध्याह्न प्रतिपदा, द्वितीया पहले दिन, तृतीया से त्रयोदशी अपने दिन, चतुर्दशी का पहले दिन, अमावसी अपने दिन।

श्राद्ध प्रतिपदा और द्वितीया पहले दिन, तृतीया से त्रयोदशी तक अपने दिन, चतुर्दशी, अमावसी पहले दिन ।

X में सूर्य (मुहूर्त 30) । Y 8:56 रात तक गण्डान्त ।

फाल्गुन शुक्लपक्ष

सप्तर्षि सं० 5076 विक्रमी सं० 2057 शाकः सं० 1922 ईस्वी सं० 2001

24 फरवरी की ग्रहस्थितिः- वृष में बृहस्पति, शनि। मिथुन में राहु। वृश्चिक में भौम। धनु में केतु। मकर में बुध। कुम्भ में सूर्य। मीन शुक्र।

दिन	मान	फा	फर	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	(ग्रह संचार बजे मिनटों में) वसन्त ऋतु, उत्तरायण	सू उ	सू अ
11	11	13	24	शनि	प्रति दि	3:58 PM	शत दि	8:00 AM	आनन्दः, 3:45 रात मीन में चन्द्र ।	7	6
	13	14	25	रवि	द्विती दि	5:43 PM	पूभा दि	10:21 AM	चरः ।	8 7	19 20
	15	15	26	सोम	तृती प्र	7:05 PM	उभा दि	12:21 PM	मुसुलम्, 8:02 दिन बुध नार्गी।	6	20
	16	16	27	भौम	चतु प्र	8:03 PM	रेव दि	1:58 PM	शूलम्, 1:58 दिन मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त, 7:33 प्रातः से X	5	21
	18	17	28	बुध	पंच प्र	8:33 PM	अश्वि दि	3:09 PM	मृत्युः ।	4	22
	20	18	मार्च	गुरु	षष्ठी प्र	8:34 PM	भर दि	3:53 PM	कुमार षष्ठी, काम्यः, 9:54 रात वृष में चन्द्र ।	2	23
	22	19	2	शुक्र	सप्त प्र	8:02 PM	कृति दि	4:05 PM	छत्रम् ।	1	24
	24	20	3	शनि	अष्ट प्र	6:57 PM	रोहि दि	3:45 PM	तीलाष्टमी (तील अठम), व्रत, श्रीवत्सः, 3:15 रात मिथुन में चन्द्र ।	6 60	24
	26	21	4	रवि	नव दि	5:17 PM	मृग दि	2:50 PM	सौम्यः ।	59	25
	28	22	5	सोम	दश दि	3:04 PM	आर्द्रा दि	1:23 PM	कालदण्डः, 5:54 रात कर्क में चन्द्र ।	57	26
	30	23	6	भौम	एका दि	12:22 PM	पुन दि	11:27 AM	अमला एकादशी, व्रत, स्थिरः ।	56	27
	32	24	7	बुध	द्वाद दि	9:15 AM	तिष्य दि	9:06 AM	त्र्यहः (आश्ले प्र 6:28) मातंगः, 6:28 रात सिंह में चन्द्र, 1:07 Y	55	27
त्रयोदशी तिथि का क्षय (त्रयो प्र 5:52 प्रातः)											
	35	25	8	गुरु	चर्तु प्र	2:22 AM	मघा प्र	3:44 AM	होलिकादहन, गजः, 11:47 दिन तक गण्डान्त ।	54	28
	37	26	9	शुक्र	पूर्णि प्र	10:55 PM	पूफा प्र	1:03 AM	होली, पूर्णिमा, सिद्धः, 6:27रात कन्या में चन्द्र, 4:19 दिन शुक्र वक्री ।	52	29

मध्याह्न प्रतिपदा से एकादशी तक अपने दिन, द्वादशी और त्रयोदशी पहले दिन, चतुर्दशी और पूर्णिमा का अपने दिन।
श्राद्ध प्रतिपदा और द्वितीया पहले दिन, तृतीया से दशमी तक अपने दिन, एकादशी से त्रयोदशी तक पहले दिन, चतुर्दशी और पूर्णिमा का अपने दिन । X 8:16 रात तक गण्डान्त । Y रात से गण्डान्त ।

चैत्र कृष्णपक्ष सप्तर्षि सं० 5076 विक्रमी सं० 2057 शाक: सं० 1922 ईस्वी सं० 2001

10 मार्च की ग्रहस्थिति:- वृष में बृहस्पति, शनि। मिथुन में राहु। वृश्चिक में भौम। धनु में केतु। मकर में बुध। कुम्भ में सूर्य। मीन में शुक्र।

दिन	मान	फा	मार्च	वार	तिथि	समय	नक्षत्र	समय	(ग्रह संवार बजे मिनटों में) वसन्त ऋतु, उत्तरायण	सू उ	सू अ
11	39	27	10	शनि	प्रति प्र	7:40 PM	उफा प्र	10:36 PM	उन्मूलम् ।	6 51	6 30
	41	28	11	रवि	द्विती दि	4:49 PM	हस्त प्र	8:35 PM	मानसम्, 1:41 रात कुम्भ में बुध ।	50	30
	43	29	12	सोम	तृती दि	2:33 PM	चित्र प्र	7:09 PM	संकट चतुर्थी, मुद्गरम्, 7:54 प्रात: तुला में चन्द्र ।	49	31
	45	30	13	भौम	चतु दि	12:59 PM	स्वात दि	6:28 PM	ध्वज:, मासान्त, थाल भरुन ।	47	32
	47	चैत्र	14	बुध	पंच दि	12:16 PM	विशा प्र	6:37 PM	प्रजापत्य:, 12:37 दिन वृश्चिक में चन्द्र, संक्रान्ति व्रत, 3:09 X	46	33
	49	2	15	गुरु	षष्ठी दि	12:26 PM	अनुरा प्र	7:37 PM	आनन्द: ।	45	33
	51	3	16	शुक्र	सप्त दि	1:28 PM	ज्येष्ठ प्र	9:26 PM	चर:, 9:26 रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ, 3:01 दिन से Y	43	34
	53	4	17	शनि	अष्ट दि	3:13 PM	मूल प्र	11:55 PM	मुसुलम् ।	42	35
	55	5	18	रवि	नव दि	5:33 PM	पूषा प्र	4:51 AM	शूलम् ।	41	36
	57	6	19	सोम	दश प्र	8:11 PM	उषा प्र	6:00 AM	मृत्यु:, 9:37 दिन मकर में चन्द्र ।	39	36
	59	7	20	भौम	एका प्र	10:53 PM	श्रवण	दिन रात	अलापकम् ।	38	37
12	1	8	21	बुध	द्वाद प्र	1:26 AM	श्रवण दि	9:08 AM	छत्रम्, 10:36 रात कुम्भ मे चन्द्र और पंचक आरम्भ ।	37	38
	3	9	22	गुरु	त्रयो प्र	3:40 AM	धनि दि	12:03 PM	श्रीवत्स: ।	35	38
	5	10	23	शुक्र	चर्तु प्र	5:30 AM	शत दि	2:38 PM	चित्र चुदाह, सौम्य: ।	34	39
	7	11	24	शनि	अमा	दिन रात	पूभा दि	4:48 PM	कालदण्ड:, 10:14 दिन मीन में चन्द्र ।	33	40
	9	12	25	रवि	अमा दि	6:52 AM	उभा दि	6:33 PM	थाल भरुन, अमावसी व्रत, स्थिर:, श्रीभट्ट जयंती, विचार नाग यात्रा ।	32	41

मध्याह्न:– प्रतिपदा से अमावसी अपने दिन ।

श्राद्ध:– प्रतिपदा का अपने दिन, द्वितीया से नवमी तक पहले दिन, दशमी से अमावसी तक अपने दिन ।

X दिन मीन में सूर्य (मुहूर्त 45) सोन्थ । Y 4:05 रात तक गण्डान्त ।

मुहूर्त संभाग

सप्तर्षि सं॰ 5076, विक्रमी सं॰ 2057, ईस्वी सं॰ 2000-2001 के लिए ।

स्मरण रहे :- सूक्ष्म गणित द्वारा निकला हुआ काल जिस में शुभ कार्य किया जा सकता है मुहूर्त कहलाता है । अतः निश्चित मुहूर्त पर पाणिग्रहण, यज्ञोपवीत के अवसर पर महा गायत्री स्वरूप जनेऊ डालना मुहूर्त का सदुपयोग है। मुहूर्त काल को नाच गाने या वीडीयो ग्राफी आदि में गवादेने से मुहूर्त का औचित्य एवं महत्व नही रहता है। मुहूर्त को ध्यान में रखकर ही विवाह आदि से संबन्धित अन्य आवश्यक प्रबन्ध किये जाते हैं । अतः अनुरोध है कि मुहूर्त का विचार अवश्य रखें ।

मुहूर्त प्रकरण सप्तर्षि सम्वत् 5076, विक्रमी सम्वत् 2057, ईस्वी सम्वत् 2000 - 2001 के लिए

(विभिन्न मुहूर्त बजे और मिनटों में)



यज्ञोपवीत मुहूर्त (मेखला)



चैत्र शुक्ल पक्ष

6 अप्रेल द्वितीया गुरुवार
5 - 50 प्रातः से
6 - 37 प्रातः तक (मी)
8 - 08 प्रातः से
10 - 02 दिन तक (वृ)
10 - 02 दिन से
12 - 17 दिन तक (मि)

9 अप्रेल पंचमी रविवार
9 - 50 दिन से
12 - 05 दिन तक (मि)

16 अप्रेल त्रयोदशी रविवार
9 - 22 दिन से
11 - 37 दिन तक (मि)

20 अप्रेल द्वितीया गुरुवार
9 - 22 दिन से
11 - 22 दिन तक (मि)
11 - 22 दिन से
1 - 45 दिन तक (क)

23 अप्रेल पंचमी रविवार
9 - 53 दिन से
11 - 10 दिन तक (मि)

वैशाख शुक्ल पक्ष

निषेध काल स्मरण रहें

27 अप्रेल से 24 मई तक गुरू अस्त
5 मई से 16 जुलाई तक शुक्र अस्त
16 जुलाई से 27 सितम्बर तक
कर्क में सूर्य, सिंह में सूर्य, और
श्राद्ध (पितृ पक्ष) ।

आश्विन शुक्ल पक्ष

29 सितम्बर द्वितीया शुक्रवार
7 - 50 दिन से
10 - 14 दिन तक (तुँ)
10 - 14 दिन से
12 - 34 दिन तक (वृँ)

2 अक्टूबर पंचमी सोमवार
7 - 38 प्रातः से
10 - 02 दिन तक (तुँ)
12 - 23 दिन से
2 - 25 दिन तक (धं)

8 अक्टूबर दशमी रविवार
9 - 38 दिन से
11 - 59 दिन तक (वृँ)

9 अक्टूबर एकादशी सोमवार
9 - 34 दिन से
11 - 55 दिन तक (वृँ)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

29 अक्टूबर द्वितीया रविवार
12 - 39 दिन से
2 - 18 दिन तक (म)
30 अक्टूबर तृतीया सोमवार
12 - 35 दिन से
2 - 14 दिन तक (म)
3 नवम्बर सप्तमी शुक्रवार
7 - 56 प्रात: से
10 - 17 दिन तक (वृँ)
12 - 19 दिन से
1 - 58 दिन तक (म)

6 नवम्बर दशमी सोमवार
7 - 44 प्रात: से
10 - 05 दिन तक (वृँ)
1 - 46 दिन से
3 - 01 दिन तक (कुँ)
8 नवम्बर द्वादशी बुधवार
7 - 36 प्रात: से
9 - 57 दिन तक (वृँ)
11 - 59 दिन से
1 - 38 दिन तक (म)
1 - 38 दिन से
3 - 04 दिन तक (कुँ)

मार्ग शीर्ष कृष्ण पक्ष

13 नवम्बर द्वितीया सोमवार
11 - 44 दिन से
1 - 23 दिन तक (म)

1 - 23 दिन से
2 - 48 दिन तक (कुँ)

मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष

27 नवम्बर द्वितीया सोमवार
10 - 45 दिन से
12 - 24 दिन तक (म)
1 दिसम्बर पंचमी शुक्रवार
10 - 29 दिन से
12 - 08 दिन तक (म)
3 दिसम्बर सप्तमी रविवार
10 - 21 दिन से
12 - 00 दिन तक (म)
12 - 00 दिन से
1 - 25 दिन तक (कुँ)
6 दिसम्बर दशमी बुधवार
10 - 09 दिन से
11 - 48 दिन तक (म)

11 - 48 दिन से
1 - 13 दिन तक (कुँ)
1 - 13 दिन से
2 - 33 दिन तक (मी)
7 दिसम्बर एकादशी गुरूवार
10 - 05 दिन से
11 - 44 दिन तक (म)
11 - 44 दिन से
1 - 09 दिन तक (कुँ)
8 दिसम्बर द्वादशी शुक्रवार
10 - 01 दिन से
11 - 40 दिन तक (म)
11 - 40 दिन से
1 - 06 दिन तक (कुँ)

15 दिसम्बर से
13 जनवरी 2001 तक
धनु में सूर्य

माघ शुक्ल पक्ष

26 जनवरी द्वितीया शुक्रवार
8 - 28 प्रातः से
9 - 53 दिन तक (कुँ)
9 - 53 दिन से
11 - 12 दिन तक (मी)
31 जनवरी सप्तमी बुधवार
8 - 08 प्रातः से
9 - 33 दिन तक (कुँ)
9 - 33 दिन से
10 - 53 दिन तक (मी)
1 फरवरी सप्तमी गुरुवार
9 - 29 दिन से
10 - 59 दिन तक (मी)
4 फरवरी एकादशी रविवार
7 - 52 प्रातः से
9 - 17 दिन तक (कुँ)
9 - 17 दिन से
10 - 37 दिन तक (मी)
10 - 37 दिन से
12 - 08 दिन तक (मे)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

12 फरवरी पंचमी सोमवार
8 - 46 दिन से
10 - 05 दिन तक (मी)
10 - 05 दिन से
11 - 37 दिन तक (मे)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

25 फरवरी द्वितीया रविवार
9 - 14 दिन से
10 - 46 दिन तक (मे)
26 फरवरी तृतीया सोमवार
7 - 51 प्रातः से
9 - 10 दिन तक (मी)
28 फरवरी पंचमी बुधवार
7 - 43 प्रातः से
9 - 02 दिन तक (मी)
2 मार्च सप्तमी शुक्रवार
7 - 35 प्रातः से
8 - 55 प्रातः तक (मी)

विवाह मुहूर्त

विक्रमी 2057 के लिए

चैत्र शुक्ल पक्ष

14 अप्रेल एकादशी शुक्रवार
7-36 प्रातः से
9-30 दिन तक (वृ)
9-30 दिन से
11-45 दिन तक (मि)
15 अप्रेल द्वादशी शनिवार
1-08 रात से
1-34 रात तक (धं)
16 अप्रेल त्रयोदशी रविवार
7-29 प्रातः से
9-22 दिन तक (वृ)
9-22 दिन से
11-37 दिन तक (मि)
1-04 रात से
1-30 रात तक (धं)
17 अप्रेल चतुर्दशी सोमवार
7-25 प्रातः से
9-18 दिन तक (वृ)
9-18 दिन से
11-33 दिन तक (मि)
11-23 रात से
1-26 रात तक (धं)

वैशाख शुक्ल पक्ष

19 अप्रेल प्रतिपदा बुधवार
9-10 दिन से
11-25 दिन तक (मि)
11-16 रात से
1-08 रात तक (धं)
23 अप्रेल पंचमी रविवार
9-53 दिन से
11-10 दिन तक (मि)
24 अप्रेल पंचमी सोमवार
6-57 प्रातः से
8-50 प्रातः तक (वृ)
8-50 प्रातः से
11-06 दिन तक (मि)
26 अप्रेल सप्तमी बुधवार
8-43 प्रातः से
10-58 दिन तक (मि)
1-22 दिन से
3-43 दिन तक (सिं)
10-48 रात से
12-50 रात तक (धं)

27 अप्रेल से 16 जुलाई तक
गुरु तथा शुक्र अस्त ।

श्रावण कृष्ण पक्ष

19 जुलाई तृतीया बुधवार
7 - 51 प्रातः से
10 - 13 दिन तक (सिं)
10 - 13 दिन से
12 - 33 दिन तक (कं)

21 जुलाई पंचमी शुक्रवार
12 - 19 रात से
1 - 07 रात तक (मे)

22 जुलाई षष्ठी शनिवार
10 - 01 दिन से
12 - 22 दिन तक (कं)
8 - 47 रात से
10 - 12 रात तक (कुँ)
12 - 20 रात से
1 - 03 रात तक (मे)

23 जुलाई सप्तमी रविवार
7 - 35 प्रातः से
9 - 57 दिन तक (सिं)
9 - 57 दिन से
12 - 18 दिन तक (कं)
11 - 28 रात से
12 - 59 रात तक (मे)

24 जुलाई अष्टमी सोमवार
7 - 32 प्रातः से
9 - 53 दिन तक (सिं)
9 - 53 दिन से
12 - 14 दिन तक (कं)
12 - 14 दिन से
2 - 37 दिन तक (तुँ)
10 - 04 रात से
11 - 24 रात तक (मी)

27 जुलाई एकादशी गुरुवार
7 - 20 प्रातः से
9 - 41 दिन तक (सिं)
9 - 41 दिन से
12 - 02 दिन तक (कं)
12 - 02 दिन से
2 - 25 दिन तक (तुँ)

28 जुलाई द्वादशी शुक्रवार
9 - 37 दिन से
11 - 58 दिन तक (कं)
11 - 58 दिन से
2 - 21 दिन तक (तुँ)

श्रावण शुक्ल पक्ष

3 अगस्त चतुर्थी गुरुवार
9 - 14 दिन से
11 - 34 दिन तक (कं)
11 - 34 दिन से
1 - 58 दिन तक (तुँ)

9-25 रात से
10-45 रात तक (मी)
10-45 रात से
12-16 रात तक (मे)
4 अगस्त सप्तमी रविवार
6-48 प्रातः से
9-10 दिन तक (सिं)
11-30 दिन से
1-54 दिन तक (तुँ)
10-41 रात से
12-12 रात तक (मे)
6 अगस्त सप्तमी रविवार
9-02 दिन से
11-23 दिन तक (कं)
10-33 रात से
12-04 रात तक (मे)
9 अगस्त दशमी बुधवार
6-29 प्रातः से
8-50 दिन तक (सिं)
14 अगस्त चतुर्दशी सोमवार
6-09 प्रातः से
8-31 प्रातः तक (सिं)
8-31 प्रातः से
10-51 दिन तक (कं)
10-51 दिन से
1-15 दिन तक (तुँ)

16 अगस्त से 16 सितम्बर तक *सिंह में सूर्य (स्यंग)*। 13 सितम्बर से 27 सितम्बर तक *पितृ पक्ष (श्राद्ध)*।

आश्विन शुक्ल पक्ष

29 सितम्बर द्वितीया शुक्रवार
7-50 प्रातः से
10-09 दिन तक (तुँ)
2-37 दिन से
4-16 दिन तक (म)
1 अक्टूबर चतुर्थी रविवार
12-33 रात से
2-56 रात तक (क)
2 अक्टूबर पंचमी सोमवार
7-38 प्रातः से
10-02 दिन तक (तुँ)
2-25 दिन से
4-04 दिन तक (म)
7 अक्टूबर नवमी शनिवार
7-19 प्रातः से
9-42 दिन तक (तुँ)
12-09 रात से
2-33 रात तक (क)
8 अक्टूबर दशमी रविवार

7 – 15 प्रात: से
9 – 38 दिन तक (तुँ)
12 – 05 रात से
2 – 29 रात तक (क)
9 अक्टूबर एकादशी सोमवार
7 – 11 प्रात: से
9 – 34 दिन तक (तुँ)
1 – 57 दिन से
3 – 36 दिन तक (म)
11 अक्टूबर त्रयोदशी बुधवार
11 – 53 रात से
2 – 17 रात तक (क)
12 अक्टूबर चतुर्दशी गुरुवार
6 – 59 प्रात: से
9 – 22 दिन तक (तुँ)
1 – 46 दिन से
3 – 25 दिन तक (म)
11 – 49 रात से
2 – 13 रात तक (क)
13 अक्टूबर पूर्णिमा शुक्रवार
6 – 55 प्रात: से
9 – 19 दिन तक (तुँ)
1 – 42 दिन से
3 – 21 दिन तक (म)
11 – 45 रात से
2 – 09 रात तक (क)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

14 अक्टूबर प्रतिपदा शनिवार
6 – 51 प्रात: से
9 – 15 दिन तक (तुँ)
1 – 38 दिन से
3 – 17 दिन तक (म)
18 अक्टूबर षष्ठी बुधवार
1 – 22 दिन से
3 – 01 दिन तक (मि)
22 अक्टूबर दशमी रविवार
1 – 06 दिन से
2 – 45 दिन तक (म)
11 – 10 रात से
1 – 34 रात तक (क)
23 अक्टूबर एकादशी सोमवार
6 – 44 प्रात: से
8 – 39 प्रात: तक (तुँ)
25 अक्टूबर त्रयोदशी बुधवार
12 – 55 दिन से
2 – 33 दिन तक (म)
10 – 58 रात से
1 – 22 रात तक (क)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

29 अक्टूबर द्वितीया रविवार
12 – 39 दिन से
2 – 18 दिन तक (म)
2 – 18 दिन से

3-43 दिन तक (कुँ)
10-42 रात से
1-06 रात तक (क)

30 अक्टूबर तृतीया सोमवार
6-50 प्रातः से
8-12 प्रातः तक (तुँ)

2 नवम्बर षष्ठी गुरुवार
10-27 रात से
12-50 रात तक (क)

3 नवम्बर सप्तमी शुक्रवार
1-58 दिन से
3-23 दिन तक (कुँ)
10-23 रात से
12-46 रात तक (क)

4 नवम्बर अष्टमी शनिवार
1-54 दिन से
3-19 दिन तक (कुँ)

10-19 रात से
12-42 रात तक (क)

5 नवम्बर नवमी रविवार
12-26 दिन से
1-50 दिन तक (म)
10-15 रात से
12-39 रात तक (क)

8 नवम्बर द्वादशी बुधवार
11-59 दिन से
1-38 दिन तक (म)
1-38 दिन से
3-04 दिन तक (कुँ)
10-03 रात से
12-27 रात तक (क)

10 नवम्बर चतुर्दशी शुक्रवार
11-52 दिन से
1-30 दिन तक (म)

1-30 दिन से
2-56 दिन तक (कुँ)
12-19 रात से
2-41 रात तक (सिं)

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

13 नवम्बर द्वितीया सोमवार
11-40 दिन से
1-19 दिन तक (म)
1-19 दिन से
2-44 दिन तक (कुँ)
12-07 रात से
2-29 रात तक (सिं)

22 नवम्बर द्वादशी बुधवार
1-48 दिन से
2-08 दिन तक (कुँ)
11-32 रात से

1-53 रात तक (सिं)

23 नवम्बर त्रयोदशी गुरुवार

11-00 दिन से

12-39 दिन तक (म)

12-39 दिन से

2-05 दिन तक (कुँ)

11-28 रात से

1-49 रात तक (सिं)

24 नवम्बर चतुर्दशी शुक्रवार

10-57 दिन से

12-35 दिन तक (म)

12-35 दिन से

2-01 दिन तक (कुँ)

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

30 नवम्बर चतुर्थी गुरुवार

12-12 दिन से

1-37 दिन तक (कुँ)

1 दिसम्बर पंचमी शुक्रवार

12-08 दिन से

1-33 दिन तक (कुँ)

2-53 दिन से

4-24 दिन तक (मे)

10-56 रात से

1-18 रात तक (सिं)

2 दिसम्बर षष्ठी शनिवार

12-04 दिन से

1-29 दिन तक (कुँ)

10-52 रात से

1-14 रात तक (सिं)

6 दिसम्बर दशमी बुधवार

10-09 दिन से

11-48 दिन तक (म)

11-48 दिन से

1-13 दिन तक (कुँ)

7 दिसम्बर एकादशी गुरुवार

10-05 दिन से

11-44 दिन तक (म)

11-44 दिन से

1-09 दिन तक (कुँ)

8 दिसम्बर द्वादशी शुक्रवार

10-01 दिन से

11-40 दिन तक (म)

11-40 दिन से

1-06 दिन तक (कुँ)

11 दिसम्बर पूर्णिमा सोमवार

9-50 दिन से

11-29 दिन तक (म)

11-29 दिन से

12-54 दिन तक (कुँ)

15 दिसम्बर से 13 जनवरी तक
धनु में सूर्य

माघ कृष्ण पक्ष

17 जनवरी नवमी बुधवार

9-03 दिन से
10-28 दिन तक (कुँ)
10-28 दिन से
11-48 दिन तक (मी)
10-13 रात से
12-34 रात तक (कं)

19 जनवरी एकादशी शुक्रवार

8-55 दिन से
10-20 दिन तक (कुँ)
10-20 दिन से
11-40 दिन तक (मी)
10-05 रात से

12-26 रात तक (कं)

माघ शुक्ल पक्ष

26 जनवरी द्वितीया शुक्रवार

8-08 प्रात: से
9-45 दिन तक (कुँ)
9-53 दिन से
11-12 दिन तक (मी)

29 जनवरी पंचमी सोमवार

8-16 प्रात: से
9-41 दिन तक (कुँ)

31 जनवरी सप्तमी बुधवार

8-18 प्रात: से
9-33 दिन तक (कुँ)
9-33 दिन से
10-55 दिन तक (मी)

3 फरवरी दशमी शनिवार

9-21 दिन से
10-41 दिन तक (मी)
10-41 दिन से
12-12 दिन तक (मे)
11-27 रात से
1-50 रात तक (तुँ)

4 फरवरी एकादशी रविवार

8-08 प्रात: से
9-17 दिन तक (कुँ)
9-17 दिन से
10-37 दिन तक (मी)
10-37 दिन से
12-08 दिम तक (मे)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

9 फरवरी प्रतिपदा शुक्रवार

7-33 प्रात: से

8 - 58 प्रातः तक (कुँ)
8 - 58 प्रातः से
10 - 17 दिन तक (मी)
10 - 17 दिन से
11 - 12 दिन तक (मे)

14 फरवरी सप्तमी बुधवार
8 - 38 प्रातः से
9 - 20 दिन तक (मी)

18 फरवरी एकादशी रविवार
8 - 22 प्रातः से
9 - 42 दिन तक (मी)
9 - 42 दिन से
11 - 13 दिन तक (मे)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

25 फरवरी द्वितीया रविवार
10 - 21 दिन से
10 - 45 दिन तक (मे)

26 फरवरी तृतीया सोमवार
9 - 10 दिन से
10 - 42 दिन तक (मे)
2 - 50 दिन से
5 - 14 दिन तक (क)
9 - 56 रात से
12 - 20 रात तक (तुँ)

28 फरवरी पंचमी बुधवार
7 - 43 प्रातः से
9 - 02 दिन तक (मी)
2 - 43 दिन से
3 - 09 दिन तक (क)

4 मार्च नवमी रविवार
7 - 27 प्रातः से
8 - 47 प्रातः तक (मी)
8 - 47 प्रातः से
10 - 18 दिन तक (मे)

8 मार्च चतुर्दशी गुरुवार
7 - 12 प्रातः से
8 - 31 प्रातः तक (मी)
8 - 31 प्रातः से
10 - 02 दिन तक (मे)
9 - 17 रात से
11 - 04 रात तक (तुँ)



वागदान मुहूर्त
(गण्डनुक साथ)

चैत्र शुक्ल पक्ष

5 अप्रेल प्रतिपदा बुधवार
7 अप्रेल तृतीया शुक्रवार
11-38 दिन से
9 अप्रेल पंचमी रविवार
14 अप्रेल एकादशी शुक्रवार
16 अप्रेल त्रयोदशी रविवार

वैशारव कृष्ण पक्ष

19 अप्रेल प्रतिपदा बुधवार
21 अप्रेल तृतीया शुक्रवार

27 अप्रेल से 16 जुलाई तक गुरु तथा शुक्र अस्त

श्रावण कृष्ण पक्ष

17 जुलाई प्रतिपदा सोमवार
21 जुलाई पंचमी शुक्रवार
23 जुलाई सप्तमी रविवार
26 जुलाई दशमी बुधवार
27 जुलाई एकादशी गुरुवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

4 अगस्त पंचमी शुक्रवार
6 अगस्त सप्तमी रविवार
10 अगस्त एकादशी गुरुवार
11-47 दिन से

16 अगस्त से 16 सितम्बर तक सिंह में सूर्य (स्यंघ)
14 सित. से 27 सित. तक पितृ पक्ष (श्राद्ध)

आश्विन शुक्ल पक्ष

28 सितम्बर प्रतिपदा गुरुवार
29 सितम्बर द्वतीया शुक्रवार
5-00 सायं तक
2 अक्टूबर पंचमी सोमवार
4 अक्टूबर सप्तमी बुधवार
8 अक्टूबर दशमी रविवार
2-45 दिन तक
11 अक्टूबर त्रयोदशी बुधवार
2-51 दिन तक
13 अक्टूबर पूर्णिमा शुक्रवार
2-24 दिन तक

कार्तिक कृष्ण पक्ष

18 अक्टूबर षष्ठी बुधवार
23 अक्टूबर एकादशी सोमवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

29 अक्टूबर द्वितीया रविवार
30 अक्टूबर तृतीया सोमवार
1 नवम्बर पंचमी बुधवार
2 नवम्बर षष्ठी गुरुवार
3 नवम्बर सप्तमी शुक्रवार
8 नवम्बर द्वादशी बुधवार
9 नवम्बर त्रयोदशी गुरुवार

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

12 नवम्बर प्रतिपदा रविवार
13 नवम्बर द्वितीया सोमवार
16 नवम्बर पंचमी गुरुवार
20 नवम्बर दशमी सोमवार
22 नवम्बर द्वादशी गुरुवार

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

26 नवम्बर प्रतिपदा रविवार
1 दिसम्बर पंचमी शुक्रवार
7 दिसम्बर एकादशी गुरुवार
3 - 36 दिन तक
11 दिसम्वर पूर्णिमा सोमवार
2 - 35 दिन तक

15 दिसम्बर से 12 जनवरी तक *धनु में सूर्य*

माघ कृष्ण पक्ष

14 जनवरी पंचमी रविवार
19 जनवरी एकादशी शुक्रवार
21 जनवरी द्वादशी रविवार

माघ शुक्ल पक्ष

25 जनवरी प्रतिपदा गुरुवार
26 जनवरी द्वितीया शुक्रवार
29 जनवरी पंचमी सोमवार
4 फरवरी एकादशी रविवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

9 फरवरी प्रतिपदा शुक्रवार
18 फरवरी एकादशी रविवार
19 फरवरी द्वादशी सोमवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

25 फरवरी द्वितीया रविवार
26 फरवरी ततृतीया सोमवार



विद्यारम्भ मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

6 अप्रेल द्वितीया गुरुवार

1-12 दिन तक

9 अप्रेल पंचमी रविवार

8-15 दिन से

14 अप्रेल एकादशी शुक्रवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

21 अप्रेल तृतीया शुक्रवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

19 जुलाई तृतीया बुधवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

4 अगस्त पंचमी शुक्रवार

11 अगस्त द्वादशी शुक्रवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

29 सितम्बर द्वितीया शुक्रवार

8 अक्टूबर दशमी रविवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

29 अक्टूबर द्वितीया रविवार

1 नवम्बर पंचमी बुधवार

2 नवम्बर षष्ठी गुरुवार

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

29 नवम्बर तृतीया बुधवार

10-01 दिन तक

1 दिसम्बर पंचमी शुक्रवार

6 दिसम्बर दशमी बुधवार

7 दिसम्बर एकादशी गुरुवार

4-01 दिन बाद

15 दिसम्बर से 12 जनवरी
सं. 2001 ईस्वी धनु में सूर्य

माघ शुक्ल पक्ष

26 जनवरी द्वितीया शुक्रवार

4 फरवरी एकादशी रविवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

25 फरवरी द्वितीया रविवार

10-21 दिन तक

28 फरवरी पंचमी बुधवार

साथ रटुन

चैत्र शुक्ल पक्ष

9 अप्रेल पंचमी रविवार
16 अप्रेल त्रयोदशी रविवार
17 अप्रेल चतुर्दशी सोमवार

वैशारव कृष्ण पक्ष

19 अप्रेल प्रतिपदा बुधवार
20 अप्रेल द्वितीया गुरुवार
21 अप्रेल तृतीया शुक्रवार
24 अप्रेल पंचमी सोमवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

17 जुलाई प्रतिपदा सोमवार
24 जुलाई अष्टमी सोमवार
27 जुलाई गुरुवार एकादशी

कार्तिक कृष्ण पक्ष

19 अक्टूबर सप्तमी गुरुवार
2-45 दिन से
20 अक्टूबर अष्टमी शुक्रवार
23 अक्टूबर एकादशी सोमवार
9-43 दिन से
25 अक्टूबर त्रयोदशी बुधवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

29 अक्टूबर द्वितीया रविवार
30 अक्टूबर तृतीया सोमवार
1 नवम्बर पंचमी बुधवार
2 नवम्बर षष्ठी गुरुवार
3 नवम्बर सप्तमी शुक्रवार
10 नवम्बर चतुर्दशी शुक्रवार

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

13 नवम्बर द्वितीया सोमवार
17 नवम्बर षष्ठी शुक्रवार
20 नवम्बर दशमी सोमवार

माघ शुक्ल पक्ष

25 जनवरी प्रतिपदा गुरुवार
31 जनवरी सप्तमी बुधवार
7 फरवरी चतुर्दशी बुधवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

11 फरवरी चतुर्थी रविवार
12 फरवरी पंचमी सोमवार
14 फरवरी सप्तमी बुधवार
15 फरवरी अष्टमी गुरुवार
16 फरवरी नवमी शुक्रवार
18 फरवरी एकादशी रविवार

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

28 फरवरी पंचमी बुधवार
3-09 दिन तक
4 मार्च नवमी रविवार
2-50 दिन तक



शंकु प्रतिष्ठा मुहूर्त



(बुनियाद मुहूर्त)

शंकू प्रतिष्ठा के लिए स्यंघ (सिहं में सूर्य) निषेध नही है ।

वैशाख कृष्ण पक्ष

21 अप्रेल तृतीया शुक्रवार
4 - 03 दिन से
6 - 23 शां तक (कं)

26 अप्रेल सप्तमी बुधवार
8 - 43 प्रातः से
10 - 58 प्रातः (मि)
3 - 43 दिन से
6 - 04 शां तक (कं)

27 अप्रेल से 16 जुलाई तक
गुरु और शुक्र अस्त

श्रावण कृष्ण पक्ष

19 जुलाई तृतीया बुधवार
10 - 13 प्रातः से
12 - 33 दिन तक (कं)
5 - 18 दिन से
7 - 20 शां तक (धं)

22 जुलाई षष्ठी शनिवार
5 - 06 दिन से
7 - 08 शां तक (धं)

27 जुलाई एकादशी गुरुवार
7 - 20 प्रातः से
9 - 41 दिन तक (सिं)
9 - 41 प्रातः से
12 - 02 दिन तक (कं)
12 - 02 दिन से
2 - 25 दिन तक (तुँ)

28 जुलाई द्वादशी शुक्रवार
9 - 37 दिन से
11 - 58 दिन तक (कं)
11 - 58 दिन से
2 - 21 दिन तक (तुँ)

श्रावण शुक्ल पक्ष

4 अगस्त पंचमी शुक्रवार
6 - 48 प्रातः से
9 - 10 प्रातः तक (सिं)
4 - 15 दिन से
6 - 17 शां तक (धं)

9 अगस्त दशमी बुधवार
6 - 29 प्रातः से
8 - 50 प्रातः तक (सिं)

भाद्र कृष्ण पक्ष

18 अगस्त तृतीया शुक्रवार
8-15 दिन से
10-35 दिन तक (कं)

19 अगस्त चतुर्थी शनिवार
3-16 दिन से
5-18 दिन तक (धं)

23 अगस्त अष्टमी बुधवार
7-55 प्रातः से
10-16 दिन तक (कं)
12-39 दिन से
3-00 दिन तक (वृँ)

भाद्र शुक्ल पक्ष

30 अगस्त प्रतिपदा बुधवार
3-10 दिन से
4-31 दिन तक (धं)

31 अगस्त द्वितीया गुरुवार
7-24 प्रातः से
9-44 प्रातः तक (कं)
12-08 दिन से
2-28 दिन तक (वृँ)
2-28 दिन से
4-31 दिन तक (धं)

2 सितम्बर चतुर्थी शनिवार
7-40 प्रातः से
9-36 दिन तक (कं)
2-21 दिन से
4-23 दिन तक (धं)

11 सितम्बर त्रयोदशी सोमवार
6-48 प्रातः से
9-00 प्रातः तक (कं)
1-45 दिन से
3-48 दिन तक (धं)

14 सित. से 27 सितम्बर तक पितृ पक्ष

आश्विन शुक्ल पक्ष

29 सितम्बर द्वितीया शुक्रवार
10-14 दिन से
12-34 दिन तक (वृँ)

2 अक्टूबर पंचमी सोमवार
10-02 दिन से
12-23 दिन तक (वृँ)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

18 अक्टूबर षष्ठी बुधवार
11-20 दिन से
1-22 दिन तक (धं)
3-01 दिन से
4-01 दिन तक (कुँ)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

30 अक्टूबर तृतीया सोमवार
8 - 12 प्रातः से
9 - 19 दिन तक (वृँ)

3 नवम्बर सप्तमी शुक्रवार
1 - 58 दिन से
3 - 23 दिन तक (कुँ)
3 - 23 दिन से
4 - 43 दिन तक (मी)

6 नवम्बर दशमी सोमवार
7 - 44 प्रातः से
10 - 05 प्रातः तक (वृँ)
3 - 11 दिन से
4 - 31 दिन तक (मी)

8 नवम्बर द्वादशी बुधवार
7 - 36 प्रातः से
9 - 57 दिन तक (वृँ)
11 - 59 दिन से
1 - 38 दिन तक (म)
1 - 38 दिन से
3 - 04 दिन तक (कुँ)

9 नवम्बर त्रयोदशी गुरुवार
7 - 32 प्रातः से
9 - 53 दिन तक (वृँ)
11 - 56 दिन से
1 - 34 दिन तक (म)
1 - 34 दिन से
3 - 00 दिन तक (कुँ)

13 नवम्बर द्वितीया सोमवार
7 - 17 प्रातः से
9 - 37 दिन तक (वृँ)
11 - 40 दिन से
1 - 19 दिन तक (म)
1 - 19 दिन से
2 - 44 दिन तक (कुँ)

22 नवम्बर द्वादशी बुधवार
2 - 08 दिन से
3 - 28 दिन तक (मी)

30 नवम्बर चतुर्थी गुरुवार
1 - 37 दिन से
2 - 57 दिन तक (मी)

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

1 दिसम्बर पंचमी शुक्रवार
10 - 29 दिन से
12 - 08 दिन तक (म)
1 - 33 दिन से
2 - 53 दिन तक (मी)

2 दिसम्बर षष्ठी शनिवार
1 - 29 दिन से
2 - 49 दिन तक (मी)

4 दिसम्बर अष्टमी सोमवार
2-41 दिन से
4-12 दिन तक (मे)
7 दिसम्बर एकादशी गुरुवार
10-05 प्रात: से
11-44 दिन तक (म)
11-44 दिन से
1-09 दिन तक (कुँ)
11 दिसम्बर पूर्णिमा सोमवार
9-50 दिन से
11-29 दिन तक (म)
11-29 दिन से
12-54 दिन तक (कुँ)
12-54 दिन से
2-13 दिन तक (मी)

15 दिसम्बर से 12 जनवरी 2001 ईस्वी तक धनु में सूर्य

माघ कृष्ण पक्ष

15 जनवरी षष्ठी सोमवार
9-11 दिन से
10-36 दिन तक (कुँ)
11-56 दिन से
1-27 दिन तक (मे)

माघ शुक्ल पक्ष

26 जनवरी द्वितीया शुक्रवार
8-28 प्रात: से
9-53 दिन तक (कुँ)
9-53 दिन से
11-12 दिन तक (मी)
29 जनवरी पंचमी सोमवार
8-16 प्रात: से
9-41 दिन तक (कुँ)
3 फरवरी दशमी शनिवार
9-21 दिन से
10-41 दिन तक (मी)
10-41 दिन से
12-12 दिन तक (मे)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

14 फरवरी सप्तमी बुधवार
8-38 प्रात: से
9-58 दिन तक (मी)
15 फरवरी अष्टमी गुरुवार
8-34 प्रात: से
9-54 दिन तक (मी)

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

26 फरवरी तृतीया सोमवार
12-35 दिन से
2-50 दिन तक (मि)

ग्रह प्रवेश मुहूर्त

आश्विन शुक्ल पक्ष

29 सितम्बर द्वितीया शुक्रवार
12-34 दिन से
2-37 दिन तक (धं)

2 अक्टूबर पंचमी सोमवार
12-23 दिन से
2-25 दिन तक (धं)

9 अक्टूबर एकादशी सोमवार
11-55 दिन से
1-57 दिन तक (धं)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

3 नवम्बर सप्तमी शुक्रवार
7-56 प्रातः से
10-17 दिन तक (वृं)
1-58 दिन से
3-23 दिन तक (कुँ)
3-23 दिन से
4-43 दिन तक (मी)

6 नवम्बर दशमी सोमवार
10-05 दिन से
12-07 दिन तक (धं)

8 नवम्बर द्वादशी बुधवार
9-57 दिन से
11-59 दिन तक (धं)
1-38 दिन से
3-04 दिन तक (कुँ)

9 नवम्बर त्रयोदशी गुरुवार
7-32 प्रातः से
9-53 दिन तक (वृं)
1-34 दिन से
3-00 दिन तक (कुँ)

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

13 नवम्बर द्वितीया सोमवार
9-37 दिन से
11-40 दिन तक (धं)

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

6 दिसम्बर दशमी बुधवार
8-07 प्रातः से
10-09 दिन तक (कुँ)

7 दिसम्बर एकादशी गुरुवार
8-03 प्रातः से
10:05 दिन तक (धं)
11-44 दिन से
1-09 दिन तक (कुँ)

शिशर मुहूर्त

नोट करें :- शिशर लागुन पौष मास में निषेध नहीं है ।

पौष कृष्ण पक्ष

17 दिसम्बर सप्तमी रविवार
20 दिसम्बर दशमी बुधवार
21 दिसम्बर एकादशी गुरुवार
22 दिसम्बर द्वादशी शुक्रवार

पौष शुक्ल पक्ष

27 दिसम्बर द्वतीया बुधवार
28 दिसम्बर तृतीया गुरुवार
29 दिसम्बर चतुर्दशी शुक्रवार
4 जनवरी नवमी गुरुवार
7 जनवरी द्वादशी रविवार

पन्न मुहूर्त

नोट करें :- पन्न मुहूर्त स्यंघ में निषेध नहीं है ।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

1 सितम्बर तृतीया शुक्रवार
3 सितम्बर पंचमी रविवार
4 सितम्बर षष्ठी सोमवार
6 सितम्बर अष्टमी बुधवार
7 सितम्बर नवमी गुरुवार
8 सितम्बर दशमी शुक्रवार
10 सितम्बर द्वादशी रविवार
11 सितम्बर त्रयोदशी चन्द्रवार

माघ कृष्ण पक्ष

26 जनवरी द्वितीया शुक्रवार
8 - 28 प्रातः से
9 - 53 दिन तक (कुँ)
9 - 53 दिन से
11 - 12 दिन तक (मी)

माघ शुक्ल पक्ष

29 जनवरी पंचमी सोमवार
9 - 41 दिन से
11 - 00 दिन तक (मी)
3 फरवरी दशमी शनिवार
9 - 21 दिन से
10 - 40 दिन तक (मी)



यह ''सर्वार्थ सिद्धि योग'' भा. स्टैं. टा. के अनुसार सं. 2000/2001 ईस्वी के लिए दिया गया है। इस से आप नये वस्त्र, आभूषण लाना, आफिसर से मिलना, चार्ज लेना, भूमि आदि का क्रय-विक्रय, किसी से समझौता करना, परीक्षा देना, फार्म भरना, किसी कम्पेटिशन के लिए आवेदन भेजना, यात्रा पर जाना आदि के लिए अपनी सुविधा और आवश्यकता अनुसार मुहूर्त चयन करके लाभान्वित हो सकते हैं।

सर्वार्थ सिद्धि योग

चैत्र शुक्ल पक्ष

6 अप्रेल द्वितीया गुरुवार

6-16 प्रातः से

1-12 दिन तक

16 अप्रेल त्रयादशी रविवार

वैशारव कृष्ण पक्ष

23 अप्रेल पंचमी रविवार

3 मई चतुर्दशी बुधवार

5-46 प्रातः तक

वैशारव शुक्ल पक्ष

6 मई तृतीया शनिवार

5-43 प्रातः से

1-52 दिन तक

12 मई नवमी शुक्रवार

14 मई एकादशी रविवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

21 मई तृतीया रविवार

5-32 प्रातः से

8-06 रात तक

30 मई द्वादशी भौमवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

9 जून अष्ठमी शुक्रवार

5-27 प्रातः से

12-27 दिन तक

11 जून दशमी रविवार

5-27 प्रातः से

1-13 दिन तक

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

25 जून अष्ठमी रविवार

5 - 28 प्रातः से
6 - 58 सायं तक
27 जून दशमी भौमवार
5 - 29 प्रातः से
6 - 17 सायं तक

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

3 जुलाई द्वितीया सोमवार
12 जुलाई एकादशी बुधवार
16 जुलाई पूर्णिमा रविवार
11 - 43 दिन से

श्रावण कृष्ण पक्ष

17 जुलाई प्रतिपदा सोमवार
2 - 47 दिन से
26 जुलाई दशमी बुधवार
30 जुलाई चतुर्दशी रविवार
2 - 28 दिन से

श्रावण शुक्ल पक्ष

1 अगस्त द्वितीया भौमवार
5 - 49 प्रातः से
9 - 02 दिन तक
13 अगस्त त्रयोदशी रविवार
14 अगस्त चतुर्दशी सोमवार

भाद्रपद कृष्ण पक्ष

20 अगस्त पंचमी रविवार
7 - 48 प्रातः से
23 अगस्त अष्टमी बुधवार
27 अगस्त त्रयोदशी रविवार

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

2 सितम्बर चतुर्थी शनिवार
12 - 23 दिन से
4 सितम्बर षष्ठी सोमवार
2 - 14 दिन से
10 सितम्बर द्वादशी रविवार
6 - 15 प्रातः तक

आश्विन कृष्ण पक्ष

15 सितम्बर द्वितीया शुक्रवार
1 - 06 दिन से
17 सितम्बर चतुर्थी रविवार
6 - 20 प्रातः से
1 - 32 दिन तक
20 सितम्बर सप्तमी बुधवार
22 सितम्बर नवमी शुक्रवार
9 - 21 प्रातः से

आश्विन शुक्ल पक्ष

30 सितम्बर तृतीया शनिवार
2 अक्टूबर पंचमी सोमवार
7 अक्टूबर नवमी शनिवार
11 - 54 दिन से

कार्तिक कृष्ण पक्ष

18 अक्टूबर षष्ठी बुधवार

6 – 41 प्रातः से

4 – 02 दिन तक

19 अक्टूबर सप्तमी गुरुवार

2 – 45 दिन से

25 अक्टूबर त्रयोदशी बुधवार

7 – 44 प्रातः से

कार्तिक शुक्ल पक्ष

30 अक्टूबर तृतीया सोमवार

9 – 19 दिन तक

9 नवम्बर त्रयोदशी गुरुवार

10 नवम्बर चतुर्दशी शुक्रवार

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

13 नवम्बर द्वितीया सोमवार

16 नवम्बर पंचमी गुरुवार

22 नवम्बर द्वादशी बुधवार

1 – 49 दिन तक

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

1 दिसम्बर पंचमी शुक्रवार

5 दिसम्बर नवमी भौमवार

2 – 27 दिन से

7 दिसम्बर एकादशी गुरुवार

8 दिसम्बर द्वादशी शुक्रवार

3 – 36 दिन तक

11 दिसम्बर पूर्णिमा सोमवार

पौष कृष्ण पक्ष

14 दिसम्बर चतुर्थी गुरुवार

25 दिसम्बर अमावसी सोमवार

पौष शुक्ल पक्ष

29 दिसम्बर चतुर्थी शुक्रवार

1 – 58 दिन तक

2 जनवरी सप्तमी भौमवार

8 जनवरी त्रयोदशी सोमवार

7 – 32 शां तक

माघ कृष्ण पक्ष

11 जनवरी द्वितीया गुरुवार

10 – 54 दिन तक

14 जनवरी पंचमी रविवार

21 जनवरी द्वादशी रविवार

8 – 10 प्रातः से

माघ शुक्ल पक्ष

1 फरवरी सप्तमी गुरुवार

9 – 17 दिन तक

3 फरवरी दशमी शनिवार

9 – 13 दिन से

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

9 फरवरी प्रतिपदा शुक्रवार

4 – 31 दिन से

11 फरवरी चतुर्थी रविवार
15 फरवरी अष्टमी गुरुवार
18 फरवरी एकादशी रविवार
5-01 दिन तक

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

25 फरवरी द्वितीया रविवार
10-21 दिन से
27 फरवरी चतुर्थी भौमवार
1-58 दिन से
3 मार्च अष्टमी शनिवार
3-45 दिन तक
9 मार्च पूर्णिमा शुक्रवार

चैत्र कृष्ण पक्ष

11 मार्च द्वितीया रविवार
15 मार्च षष्ठी गुरुवार
7-37 शां तक
25 मार्च अमावसी रविवार
6-33 सायं तक



जात कर्म मुहूर्त (काह नेथॅर)



चैत्र शुक्ल पक्ष

6 अप्रेल द्वितीया गुरुवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

21 अप्रेल तृतीया शुक्रवार
1-30 दिन तक

नोट करें

27अप्रेल से 24 मई तक गुरू अस्त,
5 मई से 16 जुलाई तक शुक्र अस्त

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

19 जुलाई तृतीया बुधवार
1-06 दिन तक

श्रावण कृष्ण पक्ष

4 अगस्त पंचमी शुक्रवार
9 अगस्त दशमी बुधवार
8-26 प्रात: तक

16 अगस्त से 15 सितम्बर तक सिंह में सूर्य, और 14 सितम्बर से 27 सितम्बर तक श्राद्ध (पितृ पक्ष)।

आश्विन शुक्ल पक्ष

28 सितम्बर प्रतिपदा गुरुवार
29 सितम्बर द्वितीया शुक्रवार
5-05 दिन तक
2 अक्टूबर पंचमी सोमवार

9 अक्टूबर एकादशी सोमवार
12-45 दिन से
5-07 दिन तक

कार्तिक शुक्ल पक्ष

30 अक्टूबर तृतीया सोमवार
9-20 दिन तक
3 नवम्बर सप्तमी शुक्रवार
6 नवम्बर दशमी सोमवार
9 नवम्बर त्रयोदशी गुरुवार

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

13 नवम्बर द्वितीया सोमवार
16 नवम्बर पंचमी शुक्रवार
2-18 दिन तक

मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष

1 दिसम्बर पंचमी शुक्रवार
6 दिसम्बर दशमी बुधवार
7 दिसम्बर एकादशी गुरुवार
7-26 प्रातः से
11-30 दिन तक

15 दिसम्बर से
13 जनवरी 2001 तक
धनु में सूर्य

माघ शुक्ल पक्ष

25 जनवरी प्रतिपदा गुरुवार
4-47 दिन तक
29 जनवरी पंचमी सोमवार
31 जनवरी सप्तमी बुधवार

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

26 फरवरी तृतीया सोमवार
28 फरवरी पंचमी बुधवार
3-08 दिन तक
5 मार्च दशमी सोमवार
1-23 दिन बाद
7 मार्च द्वादशी बुधवार
12 मार्च तृतीया सोमवार
2-33 दिन तक

लडकी को दूध देने का मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

9 अप्रेल पंचमी रविवार
8 – 15 प्रात: से

वैशाख कृष्ण पक्ष

23 अप्रेल पंचमी रविवार
9 – 53 प्रात: से
27 अप्रेल अष्टमी गुरुवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

18 जुलाई द्वितीया भौमवार
5 – 40 सायं तक
30 जुलाई चतुर्दशी रविवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

10 अगस्त एकादशी गुरुवार
11 – 47 प्रात: से

आश्विन शुक्ल पक्ष

28 सितम्बर प्रतिपदा गुरुवार
8 अक्टूबर दशमी रविवार
2 – 45 दिन तक

कार्तिक शुक्ल पक्ष

31 अक्टूबर चतुर्थी भौमवार
11 – 22 दिन से

मार्ग शुक्ल पक्ष

28 नवम्बर द्वितीया भौमवार

माघ कृष्ण पक्ष

21 जनवरी द्वादशी रविवार
8 – 10 प्रात: से

माघ कृष्ण पक्ष

25 जनवरी प्रतिपदा गुरुवार
4 फरवरी एकादशी रविवार
8 – 48 प्रात: से
6 फरवरी त्रयोदशी भौमवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

15 फरवरी अष्टमी गुरुवार
10 – 13 प्रात: से
18 फरवरी एकादशी रविवार

दीपदान मुहूर्त

कार्तिक शुक्ल पक्ष

11 नवम्बर पूर्णिमा शनिवार

माघ कृष्ण पक्ष

22 जनवरी त्रयोदशी सोमवार

माघ शुक्ल पक्ष

5 फरवरी द्वादशी सोमवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

12 फरवरी पंचमी सोमवार

फाल्गुल शुक्ल पक्ष

28 फरवरी पंचमी बुधवार

चूढा कर्म मुहूर्त
(ज़रकासय)

चैत्र शुक्ल पक्ष
6 अप्रेल द्वितीया शुक्रवार
10 – 02 दिन से
12 – 17 दिन तक (मि)

वैशाख कृष्ण पक्ष
19 अप्रेल प्रतिपदा बुधवार
9 – 10 दिन से
11 – 25 दिन तक (मि)

आश्विन शुक्ल पक्ष
29 सितम्बर द्वितीया शुक्रवार
12 – 34 दिन से
2 – 37 दिन तक (धं)
9 अक्टूबर एकादशी सोमवार
11 – 55 दिन से
1 – 57 दिन तक (धं)

कार्तिक शुक्ल पक्ष
6 नवम्बर दशमी सोमवार
1 – 46 दिन से
3 – 11 दिन तक (कुं)
9 नवम्बर त्रयोदशी गुरुवार
1 – 34 दिन से
3 – 00 दिन तक (कुं)

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष
16 नवम्बर पंचमी गुरुवार
11 – 28 दिन से
1 – 07 दिन तक (म)
17 नवम्बर षष्ठी शुक्रवार
11 – 24 दिन से
1 – 03 दिन तक (म)

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष
1 दिसम्बर पंचमी शुक्रवार
10 – 29 दिन से
12 – 08 दिन तक (म)
7 दिसम्बर एकादशी गुरुवार
10 – 05 दिन से
11 – 44 दिन तक (म)
2 – 29 दिन से
4 – 00 दिन तक (मे)

माघ शुक्ल पक्ष
29 जनवरी पंचमी सोमवार
11 – 00 दिन से
12 – 32 दिन तक (मे)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष
14 फरवरी सप्तमी बुधवार
8 – 38 दिन से
9 – 21 दिन तक (मी)

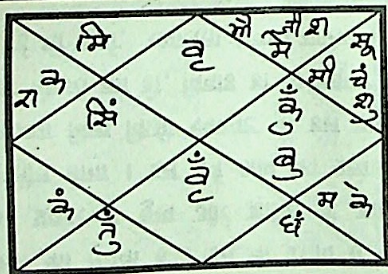
फाल्गुन कृष्ण पक्ष
26 फरवरी तृतीया सोमवार
7 – 51 दिन से
9 – 10 दिन तक (मी)
28 फरवरी पंचमी बुधवार
9 – 45 दिन से
11 – 04 दिन तक (मी)

१२ राशियों का वार्षिक फल

मेष

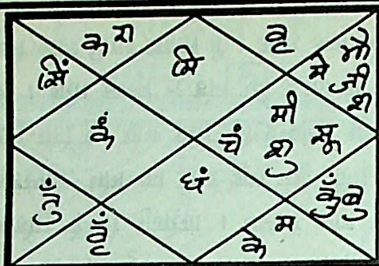
वर्ष के आरम्भ की ग्रह स्थिति के विचार से ज्ञात होता है कि केवल बुध और शुक्र की स्थिति साधारण है । गोचर चक्र के अनुसार बारहवें शुक्र के होने से धन प्राप्ति और शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी । प्रथम भाव में शनि, बृहस्पति, भौम का होना शरीर के अस्वस्थ, मानसिक कष्ट, छोटे-छोटे झगडों में फंसना, आर्थिक स्थिति कमज़ोर, सगे सम्बन्धियों से अन-बन, बिना किसी उद्देश्य के भ्रमण आदि का सूचक है। गोचर चक्र में बारहवें सूर्य के होने से अचानक धन-हानि, शारीरिक कष्ट होने की, संतान पक्ष से चिन्ता सम्भावित है। बुध की अच्छी स्थिति होने से राज्याधिकारियों के साथ अच्छे मेल-मिलाप का योग बनेगा जोकि भविष्य में आपके लिए लाभदायक रहेगा ।

मेष राशि वालों की साढ़सती भी चल रही है, इस कारण यह वर्ष मेष राशि वालों के लिए संघर्ष पूर्ण ही रहेगा । साढ़सती के तीन चरण होते है, 7 जून 2000 ई. को तीसरे चरण में प्रवेश करने से मेष राशि वालों के लिए यह वर्ष शारीरिक तथा आर्थिक दृष्टि से डावाँडोल ही रहेगा।



वृष वर्ष के आरम्भ की ग्रहस्थित का विचार कर के यह ज्ञात होता है कि यह वर्ष वृष राशि वालों के लिए संघर्ष के माहोल में ही गुज़रेगा । बारहवें भाव में शनि, बृहस्पति, भौम का होना शुभ नही माना जाता । इन ग्रहों का योग शरीर को प्रभावित कर सकता है । शरीर स्वस्थ न होने की वजह से आप के बने काम बिगड सकते हैं । अगर आप नौकरी करते हैं या कारेबारी वर्ग से संबन्ध रखवते हैं तो बिना अड़चन के कोई भी नया कार्य सम्पन्न नही होगा, धन-हानि की भी आशंका है, परन्तु सन्तानपक्ष अथवा माता-पिता की ओर से विशेष सुख और शान्ति प्राप्त होगी । विद्यार्थी वर्ग के लिए यह वर्ष संघर्ष पूर्ण ही रहेगा । कड़े परिश्रम के बाद ही सफलता प्राप्त हो सकती है। उपाय के लिए श्री गणेश और देवी सरस्वती की पूजा अर्चना करें ।

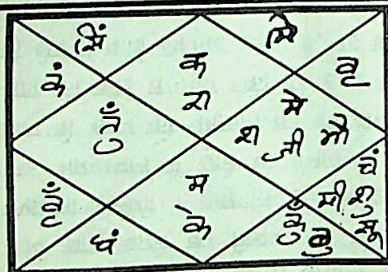
आय-व्यय चक्रानुसार वृष राशि का 5 शेष अंक आता है, फलस्वरूप यह वर्ष हानिकारक तथा चिन्तामय रहेगा । बने हुए काम बिगडने की संभावना है । मित्रों आदि से वैचारिक मतभेद हो सकते है ।



मिथुन

ग्यारहवें भाव में बृहस्पति, भौम और शनि का होना शुभ फल का सूचक है । इस के प्रभाव से यह वर्ष हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में व्यतीत होगा । इस वर्ष आप का प्रत्येक कार्य लगबग बिना किसी रुकावट के हल होगा चाहे वह नौकरी का हो, विवाह हो या व्यापार सम्बंधी कोई भी कार्य, सफलता अवश्य मानिए । शुक्र और सूर्य दसवें भाव में होने से गृहस्थ सुख, हर कार्य में सफलता, धन और सम्मान की प्राप्ति, धार्मिक प्रवृति, घर में किसी के विवाह सम्बन्धी प्रोग्राम बनने आदि का सूचक है । दूसरे भाव में राहु होने से खर्चा बढ़ने की आशंका है जो निरर्थक ही रहेगा । विजयेश्वर जन्त्री में प्रकाशित श्री गणेश की आराधना श्रेयस्कर रहेगी ।

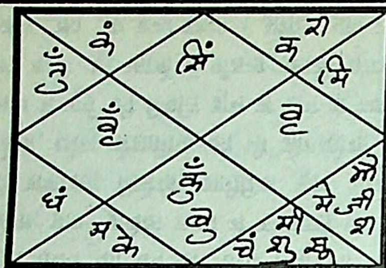
आय-व्यय चक्रानुसार राशि का शेष अंक 4 आता है फलस्वरूप मिथुन राशि के लिए यह वर्ष कम लाभदायक तथा परेशानी वाला रहेगा । अपने अफसरों से अनबन के साथ-साथ धन-हानि की भी आशंका है जिस के कारण मानसिक परेशानी बनी रहेगी ।



कर्क

वर्ष के आरम्भ की ग्रह स्थिति पर विचार करने से विदित होता है कि यह वर्ष कर्क राशि वालों के लिए दौड़ धूप तथा संघर्ष का वर्ष ही रहेगा । शुत्रओ का ज़ोर रहेगा, प्रायः प्रत्येक कार्य में रुकावटों के पश्चात ही सफलता मिलेगी, शारीरिक सुख मध्यम ही रहेगा, धरेलू परेशानियों का भी ज़ोर रहेगा । नवमें भाव में सूर्य की स्थिति शुभ न होने से स्वाभिमान की कमी, बुरे कामों में फँसना, कोर्ट-कचहरी में जाने का डर बना रहेगा । अगर आप नौरकरी करते हैं तो दफ़्तर का वातावरण वर्ष भर आप के उलट रहेगा, परन्तु लाभ की दृष्टि से यह वर्ष सामूहिक रुप से लाभदायक ही रहेगा। यह भी सम्भव है कि आप की तरक्की का अकस्मात योग बने या यह भी सम्भव है कि आप की तबदीली हो जो कि आप के लिए लाभदायक रहेगी। यदि आप विद्यार्थी वर्ग से हैं तो यह वर्ष आप के जीवन में एक महत्वपूर्ण वर्ष सिद्ध होगा। 2 जून 2000 ई. के बाद बृहस्पति की अच्छी स्थिति होने से इस वर्ष आप को एक-एक क्षण का लाभ उठाना चाहिए तथा रात-दिन पढ़ाई में लगे रहना चाहिए। विश्वास रखिए इस वर्ष आप की सफलता की पटड़ी बनी हुई है गाड़ी को इस पर ठीक प्रकार से लगाना आप का काम है। आप परिश्रम कीजिए, आप की सफलता निश्चित है।

आय-व्यय चक्रानुसार शेष अंक 7 आता है फलस्वरूप यह वर्ष उत्तम लाभ वाला होगा।

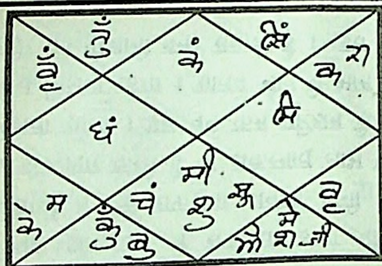


सिंह

इस वर्ष आप का शरीर सुख प्रायः उत्तम रहेगा, गृहस्थ पक्ष से विशेष मानसिक शान्ति रहेगी । कोई नया कार्य चालू करने का विचार और उस में पूर्ण सफलता मिलेगी । बृहस्पति 2 जून 2000 ई. तक भाग्यस्थान में रहने के प्रभाव से यह वर्ष आप के भाग्य को चमकाने का वर्ष होगा । यदि आप की कोई तरक्की रुकी हुई है अथवा विद्या के क्षेत्र में कोई रुकावट आई है, वह इस वर्ष अवश्य दूर होगी ।

आपका शरीर स्वस्थ रहेगा यदि आप पहले ही शरीर से अस्वस्थ हैं या लम्बी बीमारी से पीड़ित हैं, इस वर्ष के आरम्भ में ही किसी नये डाक्टर से इलाज करवायें और विश्वास रखिये कि आपका शरीर स्वस्थ हो जायेगा, यदि घर में किसी सदस्य की शारीरिक परेशानी हो तो उस परेशानी का अन्त अवश्य होगा, परन्तु सातवें भाव में बुध के होने से स्त्री की ओर से परेशानी तथा भाई-बन्धुओं से अनबन रह सकती है । विष्णु सहस्रनाम का पाठ प्रातः एवं सन्ध्या समय किया करें, लाभदायक रहेगा ।

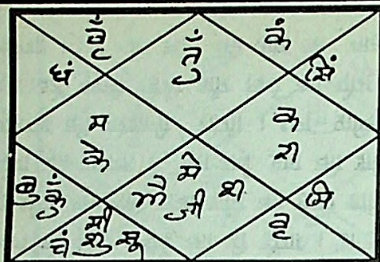
आय-व्यय चक्रानुसार शेष अंक 7 आता है, फलस्वरूप यह वर्ष उत्तम लाभ वाला होगा। धन-लाभ के साथ-साथ खर्च का योग भी है।



कन्या

यद्यपि वर्ष के आरम्भ पर आप के ग्रहों की स्थिति कुछ ठीक है परन्तु ऐसा होने पर भी यह वर्ष आप के लिए संघर्ष का ही होगा । आठवें भाव में भौन, बृहस्पति तथा शनि का होना हानिकारक योग का सूचक है, इस वर्ष आप को शरीर तथा गृहस्थ की परेशानी रहेगी । धन-प्राप्ति में भी रुकावटें पड़ती रहेंगी और खर्च का योग अधिक बनेगा । घर में स्त्री की ओर से मानसिक शान्ति रहेगी । अगर आप अविवाहित हैं तो इस वर्ष में 7 जून 2000 ईस्वी के बाद विवाह का योग बन सकता है । यदि आप इस वर्ष कोई तामीरी काम आरम्भ करना चाहते हैं तो आरम्भ कीजिए, बिना किसी रुकावट के सफलता प्राप्त होगी। यदि आप नौकरी करते हैं और किसी तरक्की की आशा कर रहे हैं उस में सफलता का कोई योग नही हैं। सितम्बर मास तक शरीर कष्ट की सम्भावना है। मानसिक अशान्ति अधिक रहेगी । यदि आप उपाय करना चाहते हैं तो आप रविवार को वैष्णव रहें और ''विजयेश्वर जन्त्री'' में प्रकाशित देवी स्तुति नित्य प्रति किया करें। इस से मानसिक शान्ति के साथ शरीर-रक्षा भी होगी।

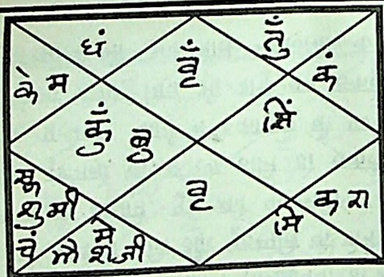
आय-व्यय चक्रानुसार राशि का शेष अंक 4 आता है, फलस्वरूप यह वर्ष उल्जनों वाला होगा। घरेलू परेशानियों का सामना भी करना पडेगा ।



तुला

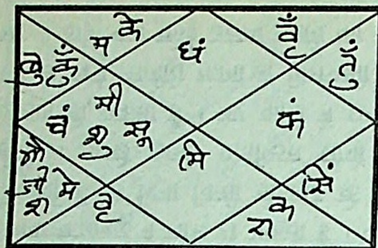
तुला राशि वाले इस वर्ष को महत्वपूर्ण वर्ष मानें । प्राय: हर आरम्भ किये हुए कार्य में सफलता होगी, नया कार्य करने का विचार और उस में सफलता होगी यदि आप विद्यार्थी हैं, तो सफलता अवश्य होगी । अगर आप व्यापार करते हैं तो अकस्मात् लाभ पर लाभ मिलता रहेगा । इस वर्ष कम परिश्रम से अधिक लाभ मिलता रहेगा । सात्तवें भाव में भौम होने से शरीर की परेशानी बन सकती है । इस लिए, सावधान रहें । मित्र-मिलाप इस वर्ष अधिक ही रहेगा । कोई उत्सव घर में रचाने की संभावना है तथा धन सार्थक रूप से खर्च होगा । यदि घर में किसी उत्सव का योग न बने तो तामीरी कामों में धन खर्च होगा । इस वर्ष तुला राशि वालों की ढय्या भी 7 जून 2000 ईस्वी से आरम्भ हो रही है जिस से आप का स्वास्थ्य ढावाँढोल ही रहेगा। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे विद्या प्राप्ति के लिए सोमवार तथा शनि वार के दिन भगवान् शंकर पर दूध सहित जल चढ़ाया करें ।

आय-व्यय चक्रानुसार तुला राशि का 5 शेष अंक आता है, फलस्वरूप यह वर्ष तुला राशि वालों के लिए हानिकारक तथा चिन्तामय रह सकता है ।



वृश्चिक

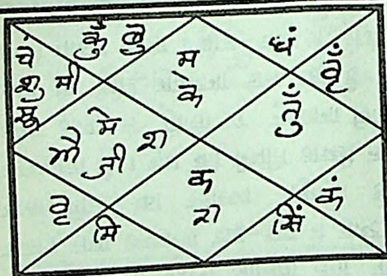
यह वर्ष आप के लिए लाभदायक रहेगा, वर्ष के पहले छः महीनों में अकस्मात नौकरी में तरक्की अथवा कारोबार में लाभ हो सकता है । यदि आप विद्यार्थी हैं तो बिना किसी रुकावट के सफलता होगी । अच्छे-अच्छे प्रतिष्ठित लोगों से मेल मिलाप हो सकता है । नए कार्यों में धन सार्थक रूप से खर्च, तामीरी कामों में दिलचस्पी रहेगी । घर में अकस्मात कोई उत्सव मनाने का प्रोग्राम बनेगा । गृहस्थ पक्ष से साधारण परेशानियाँ बनी रहेंगी । सितम्बर और अक्टूबर के महीने में अकस्मात नुकसान होने की सम्भावना हो सकती है । नवम्बर में फिर से हर एक काम सुधर जाएगा । धार्मिक कार्यों में धन खर्च होने का भी योग है । सन्तानपक्ष अथवा मातृ-पितृपक्ष से विशेष मानसिक शान्ति रहेगी । यदि आप इस वर्ष को विशेष रूप से सुख शान्ति का वर्ष बनाना चाहते हैं तो रविवार को वैष्णव रहने का नियम बनायें । तथा भगवान विष्णु की आराधना किया करें ।



धनु

यद्यपि वर्ष के आरम्भ पर आप के ग्रहों की स्थिति ठीक नही है, परन्तु ऐसा होने पर भी यह वर्ष सामूहिक रूप से अन्त में लाभदायक ही रहेगा । पाँचवें भाव में शनि और बृहस्पति के होने से धन प्राप्ति में बाधायें, पुत्र की पदोन्नति में बाधायें तथा दुशमनों के कारण हानि हो सकती है । प्राय: प्रत्येक कार्य में रुकावटों के पश्चात ही सफलता होगी, मित्र भी शत्रु बन सकते हैं । रिश्तेदारों से भी अकस्मात् नाराज़गी का योग है। परन्तु हानि का योग वर्ष के पहले तीन महीनों तक ही है। तीन महीनों के बाद यानि जुलाई के बाद हर एक कार्य ठीक ढंग से चलता रहेगा। घर में कोई उत्सव रचाना होगा, परन्तु उस में मानसिक अशान्ति ही रहेगी। लाभ के लिए यह वर्ष मध्यम है। खर्च का योग अधिक है। किसी कारणवश अगर आपके विवाह में पहले कोई रुकावट या बाधा आई हो तो इस वर्ष सब अड़चने दूर होने की सम्भावना है। विद्यार्थियों के लिए 7 जून 2000 ईस्वी के बाद विद्या प्राप्ति में कुछ बाधायें अवश्य आयेंगी। अत: कड़े परिश्रम के बाद ही सफलता की आशा रखें। आप इस वर्ष अपने इष्ट मन्त्र ''ओ३म् नम: शिवाय'' का जप करते रहें और समय-समय पर इसको लिखते भी रहें। विद्यार्थी वर्ग को इस उपाय से विशेष लाभ तथा कल्याण प्राप्त होगा ।

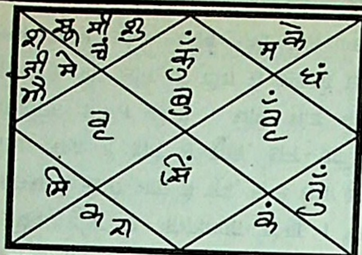
आय-व्यय चक्रानुसार धनु राशि का 5 शेष अंक आता है, फलस्वरूप यह वर्ष हानिकारक तथा चिन्तामय रहेगा ।



मकर

वर्ष के आरम्भ की ग्रह स्थिति को देखने से मालूम होता है कि यह वर्ष मकर राशि वालों के लिए आर्थिक दृष्टि से लाभदायक रहेगा । वर्ष के आरम्भ में तीसरे भाव में सूर्य, चन्द्र तथा शुक्र के गोचर चक्र में होने से सुख, धन–प्राप्ति और मानसिक शान्ति रहेगी । चौथे भाव में भौम, बृहस्पति और शनि के योग से शत्रुओं का ज़ोर तथा उनमें वृद्धि, कोई भी रोग लगने का भय, भाई–बन्धुओं और मित्रों से अनबन अर्थात लड़ाई–झगडे का डर रहेगा। गृहस्थी होने पर किसी स्त्री सदस्य की शरीर सम्बन्धी चिन्ता बनी रहेगी। यह वर्ष नौकरी पेशा के लिए आदर मान तथा आर्थिक दृष्टि से उत्तम रहेगा, बड़ी देर से लगाई गई नौकरी सम्बन्धित आशायें इस वर्ष पूरी होंगी। आप के कार्यक्रम में तबदीली अवश्य आयेगी जो आपके लिए लाभदायक रहेगी, यदि आपकी तरक्की का कोई सिलसिला चल रहा है, आप की यह इच्छा इस वर्ष पूरी होगी। विद्यार्थियों की पढ़ाई की ओर दिलचस्पी साल भर कम रहेगी, उसी अन्दाज़े से अपनी सफलता भी समझें। आपके लिए कोई चमत्कारिक वर्ष नहीं है अपितु सर्वसाधारण रूप से यह वर्ष भी चलता रहेगा।

आय–व्यय चक्रानुसार मकर राशि का 2 शेष अंक आता है, फलादेश की दृष्टि से यह वर्ष सफलता का वर्ष है ।



कुम्भ

कुम्भ राशि वालों के लिए यह वर्ष सामान्यतया शुभ ही रहेगा । 7 जून 2000 ईस्वी से आरम्भ होने वाली ढय्या के कारण आर्थिक तंगी, पारिवारिक कलह तथा अकारण दौड़-धूप से कष्ट होगा । माता-पिता का स्वास्थ्य अनुकूल होने की सम्भावना है । बुध की स्थिति अच्छी न होने से अगर आप ने किसी पर मुकदमा किया है या आप पर कोई मुकदमा चल रहा है तो कड़ा संघर्ष करना पड़ेगा । बोल-चाल में तेज़ी तथा बीच-बीच में धन हानि भी होती रहेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह चेतावनी है कि 7 जून 2000 ईस्वी के बाद यदि आप पढ़ाई में लापरवाही करेंगे अथवा एक क्षण भी व्यर्थ गंवा देंगे तो उसे आप अपना दुर्भाग्य मानिये । इस वर्ष की ग्रह-स्थिति का विचार करने के बाद यही कहा जा सकता है कि अच्छे अंकों का प्रतिशत लाने के लिए कठिन से कठिन परिश्रम करना अनिवार्य है तथा दैवी सहायता प्राप्त करने के लिए देवी सरस्वती की पूजा किया करें और नित्य प्रातः एवं संध्या काल जन्त्री में प्रकाशित ***अपराधक्षमा स्तोत्र*** का पाठ पढ़ाई आरम्भ करने से पूर्व किया करें ।

आय-व्यय चक्रानुसार शेष अंक 2 आता है फलस्वरूप वर्ष में उत्तम लाभ और आशायें पूर्ण होंगी ।



मीन

यह वर्ष मीन राशि वालों के लिए सुख-शान्ति का वर्ष होगा, प्रायः प्रत्येक कार्य में थोड़ा परिश्रम करने पर ही सफलता और लाभ मिलेगा । अप्रेल का मास लाभ के लिए मध्यम होगा और इस मास में दौड-धूप अधिक होगी । मई, जून तथा जुलाई में अच्छा लाभ मिलेगा, यदि आप नौकरी करते हैं तो इन चार महीनों में अकस्मात् तरक्की का योग है । यदि आप विद्यार्थी हैं तो विद्या-प्राप्ति में सफलता और अच्छे-अच्छे कार्यों में धन का सार्थक खर्च होगा। आदर मान के लिए यह वर्ष उत्तम है । धार्मिक कार्यों में भी दिलचस्पी रहेगी । अकस्मात् शुभ सन्देश मिलते रहेंगे । सन्तानपक्ष अथवा माता-पिता की ओर से विशेष सुख और शान्ति प्राप्त होगी । सामूहिक रूप से यह वर्ष आप के लिए बहुत उत्तम रहेगा । ईश्वर का कृपा पात्र बन जाने के लिए विजयेश्वर पाकेट जन्त्री में प्रकाशित ''सर्वतोमुखी अभ्युदय प्रार्थना'' का नित्य प्रति पाठ किया करें एवं अपाहिज की सहायता करें ।

आय-व्यय चक्रानुसार मीन राशि का शेष अंक 5 आता है फलस्वरूप वर्ष में रुकावटों, निराशाओं तथा चिन्ताओं की संभावना है । मानसिक परेशानियों के कारण स्वास्थ्य के बिगड़ने की भी आशंका है ।

मेष राशि का मासिक फल

अप्रेलः— शरीर सुख उत्तम रहेगा, आमदन उत्तम, अच्छे-अच्छे कामों में धन का खर्च, इस मास का अन्तिम सप्ताह लाभदायक रहेगा।

अप्रेल मास के अशुभ दिन :— 8, 9, 16, 17, 26, 27

मईः— परिश्रम आधिक लाभ मध्यम, गृहस्थपक्ष से मानसिक शान्ति रहेगी, अच्छे-अच्छे कामों में धन सार्थक खर्च होगा । कोई शुभ सन्देश मिलने की संभावना ।

मई मास के अशुभ दिन :— 5, 6, 14, 15 23, 24 30

जूनः— अकस्मात् उन्नति का योग, हर काम में सफलता गृहस्थ पक्ष से मानसिक शन्ति, इस मास का दूसरा सप्ताह विशेष लाभदायक रहेगा ।

जून मास के अशुभ दिनः— 1, 2, 10, 11, 19, 20, 21, 29, 30

जुलाईः— आमदनी कम खर्च अधिक, मातृपक्ष से मानसिक अशान्ति, यह मास हर प्रकार से हानि कारक होगा । भगवान शंकर पर जल चढ़ाया करें ।

जुलाई मास के अशुभ दिनः— 7, 8, 16, 17, 18, 26, 27

अगस्तः— भगवान् की शरण में रहिये वरना हर आरम्भ किये हुये कार्य में असफलता, आमदनी कम खर्च अधिक । मंगल वार को सफर न करें।

अगस्त मास के अशुभ दिनः— 3, 4, 5, 13, 14, 15, 23, 24

सितम्बरः— यह मास भी परेशनी का ही होगा। हर आरम्भ किये हुए कार्य में रुकावट, आमदनी

के लिए भी यह मास मध्यम रहेगा, खर्च अधिक।

सितम्बर मास के अशुभ दिनः – 1, 9, 10, 19, 20, 27, 28

अक्टूबरः – हर आरम्भ किये हुए काम में सफलता, आदर-मान के लिए यह मास उत्तम है, अच्छे-अच्छे कामों में धन का सार्थक खर्च, अन्तिम सप्ताह हानिकारक ।

अक्टूबर मास के अशुभ दिनः – 7, 8, 16, 17, 25, 26

नवम्बरः – गृहस्थ पक्ष से साधारण सी चिन्ता, लाभ के लिए उत्तम, अतिथि सेवा में खर्च, अच्छे अच्छे पुरुषों से मिलाप, आदर मान में वृद्धि ।

नवम्बर मास के अशुभ दिनः – 3, 4, 12, 13, 21, 22, 30

दिसम्बरः – शरीर सुख उत्तम रहेगा, मानसिक शान्ति, कारोबार अथवा नौकरी में तर्की का योग, इस मास का दूसरा सप्ताह अधिक लाभदायक होगा ।

दिसम्बर मास के अशुभ दिनः – 1, 2, 10, 11, 18, 19, 28, 29

जनवरी (2001 ई.) :– हर प्रकार से सुख और शान्ति का महीना, हर आरम्भ किये हुये काम में लाभ और आदर मान। धार्मिक प्रवृत्ति बढेगी ।

जनवरी मास के अशुभ दिनः – 6, 7, 14, 15, 16, 24 25

फरवरीः – परिश्रम कम, लाभ अधिक, मित्रों से मिलाप, यात्रा का योग और उस में लाभ, हर प्रकार से यह मास लाभदायक रहेगा ।

फरवरी मास के अशुभ दिनः – 3, 4, 11, 12, 20, 21, 22

मार्चः – अच्छे पुरुषों से मिलाप तथा लाभ, प्रायः प्रत्येक कार्य में सफलता, खर्च अधिक।

मार्च मास के अशुभ दिनः – 2, 3, 10, 11, 19, 20, 21

वृष राशि का मासिक फल

अप्रेलः – घरेलू चिन्ताओं का ज़ोर रहेगा, धन निरर्थक खर्च होगा परन्तु आमदनी के लिये यह मास उत्तम है। इस मास का अन्तिम सप्ताह हानिकारक होगा ।

अप्रेल मास के अशुभ दिनः – 10, 11, 18, 19, 20, 28, 29, 30

मईः – संघर्ष अधिक लाभ मध्यम, गृहस्थपक्ष से मानसिक अशान्ति, इस मास का पहला सप्ताह विशेष लाभदायक रहेगा ।

मई मास के अशुभ दिनः – 7, 8, 16, 17, 25, 26, 27

जूनः – धन की तंगी, खर्च की अधिकता, शरीर सुख मध्यम, हर आरम्भ किये हुए कार्य में उलझन ।

जून मास के अशुभ दिनः – 3, 4, 12, 13, 22, 23

जुलाईः – यह मास परेशानी का होगा, घरेलू चिन्ताए बनी रहेंगी, आमदनी कम खर्च अधिक, प्रत्येक कार्य में असफलता, इस मास में अवश्य वैष्णव रहिए ।

जुलाई मास के अशुभ दिनः – 1, 2, 9, 10, 18, 19, 20, 28, 29

अगस्तः – घर में किसी सदस्य की परेशानी बनी रहेगी, धन की कमी खर्च की अधिकता, संघर्ष अधिक, धार्मिक कामों की और विशेष प्रवृत्ति रहेगी जिस से मानसिक शान्ति होगी।

अगस्त मास के अशुभ दिनः – 6, 7, 16, 17. 25. 26

सितम्बरः– हर प्रकार से मानसिक शान्ति, आमदनी और खर्च एक जैसा रहेगा, मित्रों से मिलाप, आदर और मान की दृष्टि से यह मास उत्तम है ।

सितम्बर मास के अशुभ दिनः– 2, 3, 11, 12, 13, 21, 22, 29, 30

अक्टूबरः– हर आरम्भ किये हुये काम में रुकावटों के पश्चात ही सफलता होगी, शरीर सुख भी मध्यम रहेगा, आमदनी कम खर्च अधिक ।

अक्टूबर मास के अशुभ दिनः– 1, 9, 10, 11, 18, 19, 27, 28

नवम्बरः– आमदनी कम खर्च अधिक, घरेलू परेशानी, आदर मान उत्तम, इस मास का अन्तिम सप्ताह विशेष लाभदायक रहेगा ।

नवम्बर मास के अशुभ दिनः– 5, 6, 7, 14, 15, 16, 23, 24

दिसम्बरः– यह मास हर प्रकार से लाभदायक होगा, हर आरम्भ किये हुए कार्य में सफलता, आमदनी उत्तम तथा खर्च भी अधिक रहेगा ।

दिसम्बर मास के अशुभ दिनः– 3, 4, 12, 13, 20, 21, 30, 31

जनवरी (ई० 2001):– प्रत्येक कार्य में सफलता, अकस्मात लाभ, अच्छे-अच्छे पुरुषों से मिलाप तथा उन से लाभ मिले ।

जनवरी मास के अशुभ दिनः– 8, 9, 17, 18, 26, 27, 28

फरवरीः– तामीरी कामों में दिलचस्पी, आदर व मान के साथ-साथ अकस्मात् तरक्की का योग, यह मास हर प्रकार से लाभदायक रहेगा ।

फरवरी मास के अशुभ दिनः– 5, 6, 13, 14, 23, 24

मार्चः– शरीर सुख उत्तम रहेगा, धन निरर्थक खर्च होगा, आमदनी मध्यम होगी ।

मार्च मास के अशुभ दिन: – 4, 5, 12, 13, 14, 22, 23

मिथुन राशि का मासिक फल

अप्रेल: – शरीर सुख मध्यम रहेगा, हर काम में रुकावटों का सिलसिला जारी रहेगा, धन निरर्थक खर्च होगा, आमदनी मध्यम रहेगी ।

अप्रेल मास के अशुभ दिन: – 12,13, 21, 22

मई:– यह मास हर प्रकार से लाभदायक होगा, प्रत्येक कार्य में सफलता । मित्रों से मिलाप । आप की ओर से भाई–बन्धुओं को लाभ रहेगा ।

मई मास के अशुभ दिन: – 1, 2, 9, 10, 18, 19, 20, 28, 29

जून: – अकस्मात् घरेलू चिन्ता, दौड़धूप अधिक लाभ मध्यम, खर्च अधिक, यह मास हर प्रकार से उलझन का होगा ।

जून मास के अशुभ दिन: – 5, 6, 14, 15, 16, 24, 25, 26

जुलाई: – शरीर सुख मध्यम रहेगा, घर के किसी सदस्य की परेशानी बनी रहेगी । आमदनी के लिए यह मास सामान्यत: ठीक ही रहेगा ।

जुलाई मास के अशुभ दिन: – 3, 4, 12, 13, 22, 23, 30, 31

अगस्त: – यह मास सुख और शान्ति का ही होगा, शुभ कामों में धन का सार्थक खर्च तथा आमदनी के लिए भी यह मास उत्तम है ।

अगस्त मास के अशुभ दिन: – 8, 9, 18, 19, 27, 28

सितम्बर: – लाभ उत्तम, शरीर सुख मध्यम, अकस्मात् कोई शुभ सन्देश मिले, रुका हुआ

कार्य सुधरने का योग, धार्मिक प्रवृत्ति बनी रहेगी।

सितम्बर मास के अशुभ दिनः— 4, 5, 6, 14, 15, 16, 23, 24

अक्टूबरः— सन्तानपक्ष अथवा पितृपक्ष से सुख मिले, लाभ उत्तम, खर्च कम, मित्रों से मिलाप होगा।

अक्टूबर मास के अशुभ दिनः— 2, 3, 12, 13, 20, 21, 29, 30, 31

नवम्बरः— संघर्ष अधिक, आमदनी के लिये यह मास उत्तम रहेगा। शुभ कामों में धन का सार्थक खर्च, शरीर सुख उत्तम।

नवम्बर मास के अशुभ दिनः— 8, 9, 17, 18, 25, 26, 27

दिसम्बरः— इस मास का अन्तिम सप्ताह विशेष रूप से हानिकारक होगा, हर आरम्भ किये हुये कार्य में रुकावट।

दिसम्बर मास के अशुभ दिनः— 5, 6, 14, 15, 23, 24

जनवरी (ई. 2001):— इस मास में कोई नया कार्य आरम्भ न करें, हानि की सम्भावना है। बिना किसी कारण के मानसिक परेशानी रहेगी।

जनवरी मास के अशुभ दिनः— 2, 3, 10, 11, 19, 20, 29, 30

फरवरीः— बिना परिश्रम के लाभ, प्रत्येक कामना पूर्ण होगी, आय में भी बढ़ोतरी होगी।

फरवरी मास के अशुभ दिनः— 7, 8, 15, 16, 17, 25, 26, 27

मार्चः— तामीरी काम का विचार और उस में सफलता, धन का सार्थक खर्च, अच्छे पुरुषों से मिलाप, आदर और मान में वृद्धि।

मार्च मास के अशुभ दिनः— 6, 7, 15, 16, 24, 25

कर्क राशि का मासिक फल

अप्रेलः – सुख और शान्ति का मास है, हर आरम्भ किये हुये कार्य में सफलता, आमदनी के लिये यह मास उत्तम है, खर्च का योग भी अधिक है ।

अप्रेल मास के अशुभ दिनः – 14, 15, 23, 24, 25

मईः – प्रत्येक कार्य में सिद्धि । मित्रों से मिलाप, खान-पान में धन का खर्च, घर में आनन्द-मंगल।

मई मास के अशुभ दिनः – 3, 4, 11, 12, 13, 21, 22, 30, 31

जूनः – धार्मिक कामों की ओर प्रवृत्ति, धन का अधिक खर्च, अकस्मात् लाभ मिले, भाई बन्धुओं से प्रेम बढ़े ।

जून मास के अशुभ दिनः – 7, 8, 9, 17, 18, 27, 28

जुलाईः – गृहस्थपक्ष से परेशानी रहेगी, यात्रा की सम्भावना, मातृपक्ष अथवा पितृपक्ष से भी अशान्ति रहेगी, आमदनी कम परन्तु खर्च अधिक

जुलाई मास के अशुभ दिनः – 5, 6, 14, 15, 24, 25

अगस्तः – हर काम में सफलता, अकस्मात शुभ सन्देश मिलते रहेंगे, शरीर सुख उत्तम रहेगा आमदनी और खर्च एक जैसा रहेगा ।

अगस्त मास के अशुभ दिनः – 1, 2, 10, 11, 12, 20, 21, 22 29, 30

सितम्बरः – घर बैठे लाभ मिले, खानपान आदि में धन का खर्च, बुज़र्गों की सेवा की विशेष प्रवृत्ति । आमदनी अच्छी रहेगी ।

सितम्बर मास के अशुभ दिनः – 7, 8, 17, 18, 25, 26

अक्टूबरः— अकस्मात् कोई परेशानी, क्रोध की अधिकता, शरीर कष्ट, धन निरर्थक खर्च, चोट का भय, उपाय के रूप में भगवान् शंकर पर बिल्व पत्र सहित दूध और जल चढ़ाया करें ।

अक्टूबर मास के अशुभ दिनः— 4, 5, 6, 14, 15, 22, 23, 24

नवम्बरः— यह मास भी हानिप्रद ही होगा, कोई भी कार्य उलझन के बिना सिद्ध नही होगा, शरीर सुख मध्यम रहेगा, धन निरर्थक खर्च होगा।

नवम्बर मास के अशुभ दिनः— 1, 2, 10, 11, 19, 20, 28, 29

दिसम्बरः— हर प्रकार से सुख और शान्ति का मास है, अच्छे पुरुषों से मिलाप, आदर व मान का योग, आमदनी के लिए यह मास उत्तम है ।

दिसम्बर मास के अशुभ दिनः— 7, 8, 9, 16, 17, 25, 26, 27

जनवरी (ई. 2001):— मानसिक चंचलता रहेगी, आमदनी उत्तम परन्तु खर्च अधिक। घर में अतिथियों का आगमन और दौड़–धूप अधिक ।

जनवरी मास के अशुभ दिनः— 4, 5, 12, 13, 21, 22, 23, 31

फरवरीः— घर बैठे लाभ का योग, आमदनी के लिये यह मास उत्तम है, शरीर सुख मध्यम होगा आदर–मान के लिये उत्तम मास ।

फरवरी मास के अशुभ दिनः— 1, 2, 9, 10, 18, 19, 28

मार्चः— संघर्ष के होते हुए भी प्रायः प्रत्येक काम में सफलता, अकस्मात् कोई शुभ सन्देश मिले, मित्रों से मिलाप, आदर व मान अधिक ।

*मार्च मास के अशुभ दिनः—*1, 8, 9, 17, 18

सिंह राशि का मासिक फल

अप्रेलः— यह मास आमदनी की दृष्टि से उत्तम रहेगा, शरीर–सुख उत्तम, हर आरम्भ किये हुए कार्य में सफलता, आदर मान उत्तम ।

अप्रेल मास के अशुभ दिनः— 8, 9, 16, 17, 26, 27

मईः— अकस्मात् लाभ का योग है, गृहस्थपक्ष से मानसिक शान्ति रहेगी, अच्छे कामों में धन का सार्थक खर्च, कोई शुभ सन्देश मिले ।

मई मास के अशुभ दिनः— 5, 6, 14, 15 23, 24 30

जूनः— अकस्मात् शरीर कष्ट अथवा घर के किसी सदस्य की ओर से अकस्मात् परेशानी, प्रत्येक काम में उलझन के बाद ही सफलता, आमदनी कम, खर्च अधिक ।

जून मास के अशुभ दिनः— 1, 2, 10, 11, 19, 20, 21, 29, 30

जुलाईः— इस मास में दौड़–धूप अधिक रहेगी और लाभ मध्यम होगा। कोई नया कार्य आरम्भ करने का विचार, यात्रा की सम्भावना, मानसिक चंचलता रहेगी ।

जुलाई मास के अशुभ दिनः— 7, 8, 16, 17, 18, 26, 27

अगस्तः— घर बैठें लाभ मिले, प्रत्येक कार्य में सफलता, घर में कोई उत्सव मनाने का परोग्राम, खानपान में धन खर्च ।

अगस्त मास के अशुभ दिनः— 3, 4, 5, 13, 14, 15, 23, 24

सितम्बरः— घरेलू चिन्ता का योग है, भाई

बन्धुओं से अचानक नाराज़गी, दोस्त दुश्मन बनने का कुयोग है । इस मास का अन्तिम सप्ताह विशेष रूप से हानिकारक रहेगा ।

सितम्बर मास के अशुभ दिनः – 1, 9, 10, 19, 20, 27, 28

अक्टूबरः – हर प्रकार से सुख और शान्ति का मास है, आमदनी अधिक खर्च भी अधिक, इस मास का अन्तिम सप्ताह विशेष लाभदायक रहेगा।

अक्टूबर मास के अशुभ दिनः – 7, 8, 16, 17, 25, 26

नवम्बरः –मानसिक शान्ति, अच्छे-अच्छे पुरुषों से मिलाप, आदर व मान, हर काम में सिद्धि, इस मास का दूसरा सप्ताह हानिकारक ही होगा ।

नवम्बर मास के अशुभ दिनः – 3, 4, 12, 13, 21, 22, 30

दिसम्बरः – अकस्मात् लाभ मिले, अकस्मात तरक्की का भी योग, आमदन के लिए यह मास विशेष लाभदायक रहेगा, कोई नया कार्य आरम्भ करने का विचार, शरीर का सुख उत्तम ।

दिसम्बर मास के अशुभ दिनः – 1, 2, 10, 11, 18, 19, 28, 29

जनवरी (ई. 2001): – अकस्मात लाभ मिलने का योग है, मित्रों से मिलाप तथा लाभ, प्रत्येक आरम्भ किये हुए कार्य में सफलता होगी।

जनवरी मास के अशुभ दिनः – 6, 7, 14, 15, 16, 24 25

फरवरी: – अच्छे-अच्छे कामों में धन का सार्थक खर्च, बिना परिश्रम के लाभ, मित्रों तथा रिश्तेदारों से मिलाप ।

फरवरी मास के अशुभ दिनः – 3, 4, 11, 12, 20, 21, 22

मार्चः – शरीर कष्ट, गृहस्थपक्ष से परेशानी, धन निरर्थक खर्च, हानि की सम्भावना, मित्रों अथवा रिश्तेदारों से अचानक नाराज़गी ।

मार्च मास में अशुभ दिनः – 2, 3, 10, 11, 19, 20, 21

कन्या राशि का मासिक फल

अप्रेलः– संघर्ष अधिक, किसी मित्र अथ्वा रिश्तेदार से बिगाड़, आमदनी कम खर्च अधिक, मातृपक्ष से मानसिक अशान्ति, यह मास हर प्रकार से हानि–कारक होगा ।

अप्रेल मास के अशुभ दिनः– 10, 11, 18, 19, 20, 28, 29, 30

मईः– हर आरम्भ किये हुए काम में लाभ तथा सफलता, अच्छे–अच्छे कामों में दिलचस्पी मंगलवार को सफर न करें । इस मास का पहला सप्ताह विशेष लाभदायक रहेगा ।

मई मास के अशुभ दिनः– 7, 8, 16, 17, 25, 26, 27

जूनः– किसी प्रेमी से संयोग, सन्तानपक्ष अथवा मातृपक्ष से कोई शुभ सन्देश मिले, आमदनी उत्तम, खर्च का योग भी अधिक है ।

जून मास के अशुभ दिनः– 3, 4, 12, 13, 22, 23

जुलाईः– हर काम में रुकावट, धन निरर्थक खर्च, नुकसान की सम्भावना, भाई बन्धुओं से नाराज़गी, इस मास का अन्तिम सप्ताह हानिकारक रहेगा ।

जुलाई मास के अशुभ दिनः– 1, 2, 9, 10, 18, 19, 20, 28, 29

अगस्तः– शत्रुओं का भय, कारोबार अथवा नौकरी में रुकावट, इस मास के अन्तिम तीन दिन विशेष हानिकारक रहेंगे, प्रायः हर शनिवार को अंगहीन को भोजन से तृप्त करें ।

अगस्त मास के अशुभ दिनः– 6, 7, 16, 17, 25, 26

सितम्बरः – यह मास दौड़-धूप का होगा, घरेलू परेशानियों का ज़ोर रहेगा, आमदनी अधिक होने पर भी धन का खर्च अधिक ही होगा ।

सितम्बर मास के अशुभ दिनः – 2, 3, 11, 12, 13, 21, 22, 29, 30

अक्टूबरः – शरीर कष्ट, परेशानियां, आमदनी कम, खर्च अधिक इस मास में अवश्य वैष्णव रहें

अक्टूबर मास के अशुभ दिनः – 1, 9, 10, 11, 18, 19, 27, 28

नवम्बरः – लाभ के लिये यह मास उत्तम है, बिना किसी कारण के मानसिक चंचलता, धर्म की ओर अल्प प्रवृत्ति, हानि की भी सम्भावना ।

नवम्बर मास के अशुभ दिनः – 5, 6, 7, 14, 15, 16, 23, 24

दिसम्बरः – यह मास सुख और शान्ति का होगा । प्रत्येक कार्य में सफलता होगी, अकस्मात कोई शुभ सन्देश मिले ।

दिसम्बर मास के अशुभ दिनः – 3, 4, 12, 13, 20, 21, 30, 31

जनवरी (ई. 2001)ः – यह मास संघर्ष का होते हुए भी सफलता का होगा, हाथ में लिया हुआ काम बिगडने की सम्भावाना, आमदनी और खर्च एक जैसा रहेगा ।

जनवरी मास के अशुभ दिनः – 8, 9, 17, 18, 26, 27, 28

फरवरीः – इस मास का पहला सप्ताह लाभदायक होगा, दूसरे सप्ताह में हानि, तीसरे में शरीर कष्ट, चौथे सप्ताह में किसी मित्र या प्रेमी से नाराज़गी हो सकती है

फरवरी मास के अशुभ दिनः – 5, 6, 13, 14, 23, 24

मार्चः – कोई नया कार्य आरम्भ करने का विचार, प्रत्येक कार्य में सफलता, यात्रा की सम्भावना,

मार्च मास के अंशुभ दिनः – 4, 5, 12, 13, 14, 22, 23

तुला राशि का मासिक फल

अप्रेल: – यह मास अशान्ति तथा दौड़ धूप का ही होगा, शुत्रुओं का ज़ोर रहेगा, क्रोध की मात्रा अधिक, लाभ उत्तम, खर्च अधिक ।

अप्रेल मास के अशुभ दिन: – 12,13, 21, 22

मई: – अकस्मात् झगड़े, आमदनी मध्यम, निरथर्क खर्च, गृहस्थपक्ष से चिन्ता रहेगी ।

मई मास के अशुभ दिन: – 1, 2, 9, 10, 18, 19, 20, 28, 29

जून: – कोई नया कार्य आरम्भ करने का विचार जिस में असफलता की सम्भावना है, अच्छे कामों में धन खर्च, आमदनी मध्यम रहेगी

जून मास के अशुभ दिन: – 5, 6, 14, 15, 16, 24, 25, 26

जुलाई: – यह मास लाभ का है, हर प्रकार से मानसिक शान्ति रहेगी, प्रत्येक आरम्भ किये हुए कार्य में सफलता अवश्य होगी ।

जुलाई मास के अशुभ दिन: – 3, 4, 12, 13, 22, 23, 30, 31

अगस्त: -- शुत्रुओं का ज़ोर रहेगा, आमदनी की दृष्टि से यह मास उत्तम नहीं है, घर में कोई उत्सव मनाने का परोग्राम, अच्छे कार्यों में खर्च ।

अगस्त मास के अशुभ दिन: – 8, 9, 18, 19, 27, 28,

सितम्बर: – हर प्रकार से सुख और शान्ति का मास है । हर काम में सफलता होगी, घर के किसी सदस्य की ओर से कोई शुभ सदेश मिलेगा।

सितम्बर मास के अशुभ दिन: – 4, 5, 6, 14, 15, 16, 23, 24

अक्टूबर: – बुहत समय से रुके कामों में

सफलता, अकस्मात लाभ, आमदनी उत्तम ।

अक्टूबर मास के अशुभ दिनः– 2, 3, 12, 13, 20, 21, 29, 30, 31

नवम्बरः– आमदन खर्च एक जैसा रहेगा, आदर–मान में वृद्धि, अकस्मात तरक्की का योग बनेगा ।

नवम्बर मास के अशुभ दिनः– 8, 9, 17, 18, 25, 26, 27

दिसम्बरः– हर आरम्भ किये हुए कार्य में रुकावट, आमदनी के लिये हानि कारक, कोई नया कार्य इस मास में आरम्भ न करें, हानि की सम्भावना है, बिना किसी कारण के मानसिक परेशानी रहेगी। नित्यप्रति "विजयेश्वर जन्त्री" में प्रकाशित इन्द्राक्षी का पाठ अवश्य किया करें ।

दिसम्बर मास के अशुभ दिनः– 5, 6, 14, 15, 23, 24

जनवरी (ई. 2001):– यह मास आप के लिये विपरीत तथा विस्मयकारी फल वाला होगा, अकस्मात् लाभ, अकस्मात हानि, अकस्मात परेशानी तथा अकस्मात शुभ सन्देश ।

जनवरी मास के अशुभ दिनः– 2, 3, 10, 11, 19, 20, 29, 30

फरवरीः– हर प्रकार से मानसिक शान्ति रहेगी, हर आरम्भ किये हुए कार्य में सफलता, इस मास का अन्तिम सप्ताह हानिकारक होगा ।

फरवरी मास के अशुभ दिनः– 7, 8, 15, 16, 17, 25, 26, 27

मार्चः– खर्च की अधिकता परन्तु आमदनी में वृद्धि की जगह कमी आयेगी, शरीर सुख उत्तम रहेगा, गृहस्थपक्ष से चिन्ता रहेगी । घर में कोई उत्सव मनाने का परोग्राम, खानपान में धन खर्च।

मार्च मास के अशुभ दिनः– 6, 7, 15, 16, 24, 25

वृश्चिक राशि का मासिक फल

अप्रेल:– यह मास हर प्रकार सुख और शान्ति का होगा, जिस कार्य में आप का हाथ होगा सफलता अवश्य होगी, आमदनी और खर्च एक जैसा रहेगा ।

अप्रेल मास के अशुभ दिन:– 14, 15, 23, 24, 25,

मई:– अकस्मात कोई लाभ मिलेगा, आमदनी के लिये उत्तम, खर्च मध्यम, अच्छे-अच्छे कामों में धन का सार्थक खर्च होगा ।

मई मास के अशुभ दिन:– 3, 4, 11, 12, 13, 21, 22, 30, 31

जून:– घर बैठे लाभ या उन्नति का योग है, प्रत्येक कार्य में सिद्धि, शरीर स्वस्थ रहेगा, मास का अन्तिम सप्ताह विषेश लाभदायक रहेगा।

जून मास के अशुभ दिन:– 7, 8, 9, 17, 18, 27, 28 ।

जुलाई:– इस मास में दौड-धूप अधिक रहेगी, किसी रिश्तेदार या मित्र के द्वारा अकस्मात धोखा मिले, आमदनी और खर्च बराबर रहेगा ।

जुलाई मास के अशुभ दिन:– 5, 6, 14, 15, 24, 25

अगस्त:– यात्रा की सम्भावना, धन अधिक खर्च होगा परन्तु साथ-साथ आमदनी का योग भी उत्तम है, शरीर सुख उत्तम रहेगा ।

अगस्त मास के अशुभ दिन:– 1, 2, 10, 11, 12, 20, 21, 22 29, 30

सितम्बर:– इस मास में अकस्मात हानि होने की सम्भावना है, गृहस्थ की ओर से भी परेशानी रहेगी हर आरम्भ किये हुये कार्य में रुकावट ।

सितम्बर मास के अशुभ दिन:- 7, 8, 17, 18, 25, 26

अक्टूबर:- यह मास भी परेशानी का होगा, अकस्मात हानि, घरेलू परेशानी अधिक, मास का अन्तिम सप्ताह विशेष रूप से हानिकारक ।

अक्टूबर मास के अशुभ दिन:- 4, 5, 6, 14, 15, 22, 23, 24

नवम्बर:- दौड़धूप अधिक, आमदनी उत्तम, परन्तु गृहस्थ की ओर से चिन्ता, धन निरर्थक खर्च होगा ।

नवम्बर मास के अशुभ दिन:- 1, 2, 10, 11, 19, 20, 28, 29

दिसम्बर:- बिना किसी परिश्रम के लाभ का योग है। मातृपक्ष अथवा सन्तानपक्ष से अशान्ति, आमदनी उत्तम रहेगी ।

दिसम्बर मास के अशुभ दिन:- 7, 8, 9, 16, 17, 25, 26, 27

जनवरी (ई. 2001):- कोई नया काम आरम्भ करने का विचार, नौकरी पेशा होने पर तबदीली का योग लाभ उत्तम, धन अधिक खर्च होने की सम्भावना ।

जनवरी मास के अशुभ दिन:- 4, 5, 12, 13, 21, 22, 23, 31

फरवरी:- मानसिक परेशानी, हर कार्य में रुकावट, आमदनी में भी रुकावट, निरर्थक खर्च, शरीर कष्ट ।

फरवरी मास के अशुभ दिन:- 1, 2, 9, 10, 18, 19, 28

मार्च:- हर प्रकार से सुख और शान्ति का मास है, प्रत्येक काम में सफलता होगी, अच्छे कामों में धन खर्च होगा ।

मार्च मास के अशुभ दिन:- 1, 8, 9, 17, 18

धनु राशि का मासिक फल

अप्रेलः — यह मास हर दृष्टि से हानिकारक रहेगा, अकस्मात कोई परेशानी, आमदनी में रुकावट, जन्त्री में प्रकाशित इन्द्राक्षी का पाठ नित्यप्रति किया करें ।

अप्रेल मास के अशुभ दिनः — 8, 9, 16, 17, 26, 27

मईः — यह मास भी हानिकारक ही होगा, किसी भी कार्य में दिलचस्पी नही रहेगी, आमदनी कम खर्च अधिक होगा। भगवान शंकर पर जल चढाया करें शान्ति बनी रहेगी ।

मई मास के अशुभ दिनः — 5, 6, 14, 15 23, 24

जूनः — हर आरम्भ किये हुए कार्य में रुकावट, आमदनी के लिए भी यह मास हानिकारक रहेगा, धन निरर्थक खर्च होगा शरीर सुख मध्यम रहेगा ।

जून मास के अशुभ दिनः — 1, 2, 10, 11, 19, 20, 21, 29, 30

जुलाईः — हर प्रकार से सुख और शान्ति का मास है, हर आरम्भ किये हुए कार्य में सफलता होगी, अच्छे-अच्छे पुरुषों से हाथ मिलाने का तथा सहायता एवं प्रेरण मिलने का योग है ।

जुलाई मास के अशुभ दिनः — 7, 8, 16, 17, 18, 26, 27

अगस्तः — घर में कोई मंगल उत्सव होगा, आमदनी और खर्च एक जैसा रहेगा, आदर और मान के लिए यह उत्तम मास है, मित्रों से मिलाप होगा

अगस्त मास के अशुभ दिनः — 3, 4, 5, 13, 14, 15, 23, 24

सितम्बरः — सन्तान अथवा माता की ओर से

परेशानी, आमदनी उत्तम, खर्च अधिक, यात्रा का योग बने, स्वास्थ्य ठीक रहेगा ।

सितम्बर मास के अशुभ दिन:– 1, 9, 10, 19, 20, 27, 28

अक्टूबर:– शरीर कष्ट अथवा चोट का भय, हानि की सम्भावना, धन निरर्थक खर्च होगा, आमदनी में रुकावट

अक्टूबर मास के अशुभ दिन:– ·, 8, 16, 17, 25, 26

नवम्बर:– अच्छे–अच्छे कामों में धन खर्च करने की योजना, घर में किसी सदस्य की परेशानी, आदर और मान उत्तम रहेगा ।

नवम्बर मास के अशुभ दिन:– 3, 4, 12, 13, 21, 22, 30

दिसम्बर:– अकस्मात हानि की सम्भावना, हर आरम्भ किये हुए कार्य में रुकावटें आएगी ।

दिसम्बर मास के अशुभ दिन:– 1, 2, 10, 11, 18, 19, 28, 29

जनवरी (ई. 2001):– इस मास में घर बैठे लाभ मिलेगा, जिस काम में आप का हाथ होगा सफलता अवश्य होगी, अच्छे–अच्छे पुरुषों से मिलाप बनेगा ।

जनवरी मास के अशुभ दिन:– 6, 7, 14, 15, 16, 24 25

फरवरी:– हर काम में सफलता, अकस्मात कोई शुभ सन्देश मिले, आमदनी के लिए यह मास उत्तम रहेगा, साथ ही खर्च का योग भी प्रबल है।

फरवरी मास के अशुभ दिन:– 3, 4, 11, 12, 20, 21, 22

मार्च:– मानसिक चंचलता अधिक, हर काम में रुकावट, हाथ में आया हुआ काम हाथ से जाता रहेगा, इस मास में वैष्णव रहना लाभदायक रहेगा

मार्च मास के अशुभ दिन:– 2, 3, 10, 11, 19, 20, 21

मकर राशि का मासिक फल

अप्रेल: – आमदनी के लिए यह मास मध्यम होगा शरीर सुख भी कुछ कमज़ोर रहेगा, अकस्मात मित्र भी शत्रु बनेंगे, रिश्तेदारों से नाराज़गी बढ़ेगी।

अप्रेल मास के अशुभ दिन: – 10, 11, 18, 19, 20, 28, 29, 30

मई: – अकस्मात लाभ, हर काम में सफलता, आमदनी उत्तम, खर्च अधिक, स्त्रीपक्ष से मानसिक अशान्ति रहेगी ।

मई मास के अशुभ दिन: – 7, 8, 16, 17, 25, 26, 27

जून: – कोई नया काम आरम्भ करने का विचार, नौकरी में तरक्की का योग, आमदनी उत्तम, खर्च अधिक, शरीर सुख मध्यम ।

जून मास के अशुभ दिन: – 3, 4, 12, 13, 22, 23

जुलाई: – लाभ के लिए यह मास उत्तम रहेगा, गृहस्थपक्ष से परेशानी रहेगी, क्रोध की अधिकता, शरीर कष्ठ रहने की सम्भावना हैं ।

जुलाई मास के अशुभ दिन: – 1, 2, 9, 10, 18, 19, 20, 28, 29

अगस्त: – अकस्मात लाभ, अकस्मात कोई शुभ सन्देश मिले, अच्छे कामों में धन का सार्थक खर्च होगा । इस मास के अन्तिम सप्ताह में किसी मित्र या प्रेमी से नाराज़गी हो सकती है

अगस्त मास के अशुभ दिन: – 6, 7, 16, 17, 25, 26

सितम्बर:– यह मास हर प्रकार से हानिकारक होगा, हर कार्य में असफलता और हानि की सम्भावना है । कोई नया काम आरम्भ करने का विचार इस मास में न करें ।

सितम्बर मास के अशुभ दिनः– 2, 3, 11, 12, 13, 21, 22, 29, 30

अक्टूबरः– घर बैठे हर एक काम सुधर जाएगा आदर मान के लिये यह उत्तम मास है, भाई–बन्धुओं की ओर से मानसिक शान्ति रहेगी।

अक्टूबर मास के अशुभ दिनः– 1, 9, 10, 11, 18, 19, 27, 28

नवम्बरः– आमदनी के लिए उत्तम मास होने पर भी खर्च का योग बलवान है, घर के किसी सदस्य की ओर से परेशानी रहेगी, शरीर सुख भी मध्यम ही रहेगा।

नवम्बर मास के अशुभ दिनः– 5, 6, 7, 14, 15, 16, 23, 24

दिसम्बरः– तामीरी काम अथवा किसी उत्सव का परोग्राम बनेगा, धन का सार्थक खर्च होगा, मित्रों तथा रिश्तेदारों से मिलाप होगा।

दिसम्बर मास के अशुभ दिनः– 3, 4, 12, 13, 20 21, 30, 31

जनवरी (ई. 2001):– अच्छे–अच्छे पुरुषों से मिलाप, आदर मान के लिए यह मास उत्तम रहेगा, पर गृहस्थपक्ष से मानसिक अशान्ति रहेगी।

जनवरी मास के अशुभ दिनः– 8, 9, 17, 18, 26, 27, 28

फरवरीः– शरीर सुख उत्तम रहेगा, अकस्मात किसी अच्छे पुरुष से नाराज़गी, आमदनी के लिए यह मास मध्यम रहेगा।

फरवरी मास के अशुभ दिनः– 5, 6, 13, 14, 23, 24

मार्चः– शरीर सुख उत्तम, आर्थिक लाभ, अकस्मात किसी मित्र या महात्मा से मिलाप, इस मास का दूसरा सप्ताह हानिकारक ही होगा, धार्मिक कामों की ओर विशेष प्रवृत्ति बढ़ेगी।

मार्च मास के अशुभ दिनः– 4, 5, 12, 13, 14, 22, 23

मकर राशि का मासिक फल

अप्रेलः— आमदनी के लिए यह मास मध्यम होगा शरीर सुख भी कुछ कमज़ोर रहेगा, अकस्मात मित्र भी शत्रु बनेंगे, रिश्तेदारों से नाराज़गी बढ़ेगी।

अप्रेल मास के अशुभ दिनः— 10, 11, 18, 19, 20, 28, 29, 30

मईः— अकस्मात लाभ, हर काम में सफलता, आमदनी उत्तम, खर्च अधिक, स्त्रीपक्ष से मानसिक अशान्ति रहेगी।

मई मास के अशुभ दिनः— 7, 8, 16, 17, 25, 26, 27

जूनः— कोई नया काम आरम्भ करने का विचार, नौकरी में तरक्की का योग, आमदनी उत्तम, खर्च अधिक, शरीर सुख मध्यम।

जून मास के अशुभ दिनः— 3, 4, 12, 13, 22, 23

जुलाईः— लाभ के लिए यह मास उत्तम रहेगा, गृहस्थपक्ष से परेशानी रहेगी, क्रोध की अधिकता, शरीर कष्ठ रहने की सम्भावना हैं।

जुलाई मास के अशुभ दिनः— 1, 2, 9, 10, 18, 19, 20, 28, 29

अगस्तः— अकस्मात लाभ, अकस्मात कोई शुभ सन्देश मिले, अच्छे कामों में धन का सार्थक खर्च होगा। इस मास के अन्तिम सप्ताह में किसी मित्र या प्रेमी से नाराज़गी हो सकती है

अगस्त मास के अशुभ दिनः— 6, 7, 16, 17, 25, 26

सितम्बरः– यह मास हर प्रकार से हानिकारक होगा, हर कार्य में असफलता और हानि की सम्भावना है। कोई नया काम आरम्भ करने का विचार इस मास में न करें।

सितम्बर मास के अशुभ दिनः– 2, 3, 11, 12, 13, 21, 22, 29, 30

अक्टूबरः – घर बैठे हर एक काम सुधर जाएगा आदर मान के लिये यह उत्तम मास है, भाई-बन्धुओं की ओर से मानसिक शान्ति रहेगी।

अक्टूबर मास के अशुभ दिनः– 1, 9, 10, 11, 18, 19, 27, 28

नवम्बरः – आमदनी के लिए उत्तम मास होने पर भी खर्च का योग बलवान है, घर के किसी सदस्य की ओर से परेशानी रहेगी, शरीर सुख भी मध्यम ही रहेगा।

नवम्बर मास के अशुभ दिनः– 5, 6, 7, 14, 15, 16, 23, 24

दिसम्बरः – तामीरी काम अथवा किसी उत्सव का परोग्राम बनेगा, धन का सार्थक खर्च होगा, मित्रों तथा रिश्तेदारों से मिलाप होगा।

दिसम्बर मास के अशुभ दिनः– 3, 4, 12, 13, 20 21, 30, 31

जनवरी (ई. 2001): – अच्छे-अच्छे पुरुषों से मिलाप, आदर मान के लिए यह मास उत्तम रहेगा, पर गृहस्थपक्ष से मानसिक अशान्ति रहेगी।

जनवरी मास के अशुभ दिनः– 8, 9, 17, 18, 26, 27, 28

फरवरीः – शरीर सुख उत्तम रहेगा, अकस्मात किसी अच्छे पुरुष से नाराज़गी, आमदनी के लिए यह मास मध्यम रहेगा।

फरवरी मास के अशुभ दिनः– 5, 6, 13, 14, 23, 24

मार्चः – शरीर सुख उत्तम, आर्थिक लाभ, अकस्मात किसी मित्र या महात्मा से मिलाप, इस मास का दूसरा सप्ताह हानिकारक ही होगा, धार्मिक कामों की ओर विशेष प्रवृत्ति बढ़ेगी।

मार्च मास के अशुभ दिनः– 4, 5, 12, 13, 14, 22, 23

कुम्भ राशि का मासिक फल

अप्रेलः– यह मास हर प्रकार से हानिकारक होगा प्रायः प्रत्येक आरम्भ किये कार्य में रुकावट, आमदनी मध्यम और खर्च अधिक ।

अप्रेल मास के अशुभ दिनः– 12,13, 21, 22

मईः– शरीर सुख उत्तम रहेगा, अच्छे पुरुषों से मिलाप, आदर–मान, आमदनी उत्तम और खर्च अधिक होगा ।

मई मास के अशुभ दिनः– 1, 2, 9, 10, 18, 19, 20, 28, 29

जूनः– घर बैठे लाभ मिले, हर काम में सफलता होगी, शरीर सुख उत्तम, इस मास का अन्तिम सप्ताह हानिकारक होगा ।

जून मास के अशुभ दिनः– 5, 6, 14, 15, 16, 24, 25, 26

जुलाईः– अच्छे–अच्छे कामों में धन का सार्थक खर्च होगा, शरीर सुख उत्तम, आदर व मान के लिए भी यह मास उत्तम है ।

जुलाई मास के अशुभ दिनः– 3, 4, 12, 13, 22, 23, 30, 31

अगस्तः– अकस्मात कोई शुभ सन्देश मिले, तरक्की का योग है, आदर व मान बढ़ेगा, स्त्री सुख व मित्रों से मिलाप ।

अगस्त मास के अशुभ दिनः– 8, 9, 18, 19, 27, 28

सितम्बरः– अकस्मात किसी सदस्य की परेशानी बनी रहेगी, आमदनी मध्यम,धन निरर्थक खर्च, पहला सप्ताह विषेश हानिकारक होगा ।

सितम्बर मास के अशुभ दिनः– 4, 5, 6, 14, 15, 16, 23, 24

अक्टूबर:– हर आरम्भ किये हुए काम में सफलता, शरीर सुख उत्तम, अच्छे कामों में धन का सार्थक खर्च, आमदनी उत्तम ।

अक्टूबर मास के अशुभ दिन:– 2, 3, 12, 13, 20, 21, 29, 30, 31

नवम्बर:– अकस्मात कोई परेशानी बनी रहेगी, आमदनी के लिए यह मास मध्यम है और खर्च का योग भी मध्यम है, शरीर कष्ट रह सकता है।

नवम्बर मास के अशुभ दिन:– 8, 9, 17, 18, 25, 26, 27

दिसम्बर:– अकस्मात कोई लाभ मिले, अकस्मात शुभ सन्देश मिले, अच्छे उत्सवों में धन का खर्च, शरीर सुख ।

अशुभ दिनों की सूची:– 5, 6, 14, 15, 23, 24

जनवरी (ई. 2001):– यह मास आप के लिए लाभदायक रहेगा परन्तु शरीर कष्ट की सम्भावना है, मित्रों से मिलाप लाभदायक रहेगा, बिना किसी कारण से मानसिक परेशानी भी रह सकती है, नित्यप्रति विजयेश्वर जन्त्री में प्रकाशित शंकर प्रार्थना का पाठ किया करें ।

जनवरी मास के अशुभ दिन:– 2, 3, 10, 11, 19, 20, 29, 30

फरवरी:– अचानक चिन्ता, हर काम में रुकावट, भाई बन्धुओं से नाराज़गी, आमदनी कम खर्च अधिक ।

फरवरी मास के अशुभ दिन:– 7, 8, 15, 16, 17, 25, 26, 27

मार्च:– शरीर सुख उत्तम, आर्थिक लाभ, प्राय: प्रत्येक कार्य में सफलता परन्तु सावधान रहें चोट आदि लगने की सम्भावना है ।

मार्च मास के अशुभ दिन:– 6, 7, 15, 16, 24, 25

मीन राशि का मासिक फल

अप्रेल:– यह मास उलझनों का ही रहेगा, हर आरम्भ किये कार्य में हानि की सम्भावना है, कोई नया कार्य इस मास में आरम्भ न करें।

अप्रेल मास के अशुभ दिन:– 14, 15, 23, 24, 25,

मई:– जिस काम में आपका हाथ होगा सफलता कुछ समय के बाद ही होगी, शरीर सुख उत्तम, आमदनी उत्तम, खर्च मध्यम, आदर व मान उत्तम रहेगा।

मई मास के अशुभ दिन:– 3, 4, 11, 12, 13, 21, 22, 30, 31

जून:– आमदनी के लिए यह मास मध्यम रहेगा, खर्च के नए मार्ग निकल आयेंगे, घरेलू चिन्तायें अधिक रहेंगी, शरीर सुख मध्यम रहेगा।

जून मास के अशुभ दिन:– 7, 8, 9, 17, 18, 27, 28

जुलाई:– अच्छे कार्यों में धन का खर्च, किसी खास मित्र से मिलाप और उस से विशेष लाभ मिलेगा, इस मास का दूसरा सप्ताह हानिकारक रहेगा।

जुलाई मास के अशुभ दिन:– 5, 6, 14, 15, 24, 25

अगस्त:– हाथ में आया हुआ काम रुक जायेगा, धन की कमी के कारण मानसिक अशान्ति रहेगी। घर के किसी सदस्य से नाराज़गी बढ़ेगी।

अगस्त मास के अशुभ दिन:– 1, 2, 10, 11, 12, 20, 21, 22 29, 30

सितम्बर:– दौड़–धूप अधिक, भाई बन्धुओं से मिलाप, धन अधिक खर्च, घर में आनन्द

परन्तु मंगलवार को यात्रा न करें ।

सितम्बर मास के अशुभ दिनः– 7, 8, 17, 18, 25, 26

अक्टूबरः– मानसिक चंचलता, नौकरी अथवा कारोबार की चिन्ता, कोई नया काम चालू करने का विचार और उस में रुकावट, इस मास का दूसरा सप्ताह हानिकारक रहेगा ।

अक्टूबर मास के अशुभ दिनः– 4, 5, 6, 14, 15, 22, 23, 24

नवम्बरः– हर प्रकार से सुख और शान्ति का मास है, हर आरम्भ किये हुए कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी ।

दिसम्बरः– संघर्ष अधिक लाभ मध्यम, शरीर सुख मध्यम रहेगा । इस मास में मित्रों से सावधान ही रहें कोई भी धोखा दे सकता है ।

दिसम्बर मास के अशुभ दिनः– 7, 8, 9, 16, 17, 25, 26, 27

जनवरी (ई. 2001):– हर काम में रुकावटों के बाद ही सफलता होगी, आमदनी का योग भी साधारण ही है, इस मास का अन्तिम सप्ताह लाभदायक रहेगा ।

जनवरी मास के अशुभ दिनः– 4, 5, 12, 13, 21, 22, 23, 31

फरवरीः– माता-पिता अथवा सन्तानपक्ष से मानसिक शान्ति रहेगी, अच्छे-अच्छे कामों में धन का सार्थक खर्च होगा ।

फरवरी मास के अशुभ दिनः– 1, 2, 9, 10, 18, 19, 28

मार्चः– कोई नया कार्य आरम्भ करने का विचार करें सफलता अवश्य होगी, गृहस्थपक्ष से मानसिक शान्ति, आमदनी कम खर्च अधिक, शरीर सुख उत्तम रहेगा ।

मार्च मास के अशुभ दिनः– 1, 8, 9. 17,18

साढ़ सती

मेष वृष मिथुन मीन

मेष

मेष राशि वालों की साढ़-सत्ती 17 फरवरी 1996 से आरम्भ होकर 7 अप्रेल 2003 को समाप्त होगी । इस वर्ष 7 जून 2000 ईस्वी को वृष राशि में शनि के प्रवेश से साढ़-सत्ती का पाद अर्थात पैरों पर निवास होगा । इस तरह वृष में शनि के प्रवेश से शनि आप के चौथे, आठवें तथा ग्यारहवें भाव को देख रहा है, जिस के प्रभाव से शारीरिक पीड़ा, व्यापार में हानि, मानिसक चंचलता, मातृपक्ष से परेशानी तथा आर्थिक स्थिति कमज़ोर होने की संभावना है ।

वृष

7 जून ईस्वी को शनि वृष राशि में प्रवेश करने से वृष वालों की साढ़-सत्ती का निवास हृदय पर होगा । साढ़-सत्ती का निवास हृदय पर लाभदायक ही रहेगा परन्तु शनि ग्रह का जातक की जन्म कुण्डली में अच्छी स्थिति में होना आवश्यक है, यदि आप का शनि तीसरे, छटे, दसवें अथवा ग्यारहवें भाव में हो तो समय आप के लिए सफलता और लाभ का ही होगा, हर आरम्भ किये हुये कार्य में सफलता मिलेगी । यदि शनि अच्छी स्थिति में न हो विशेषत: लग्न, चौथे, सातवें भाव में हो तो यह समय आप के लिए परेशानी का होगा । घरेलू चिन्ताऐं, धन निरथर्क खर्च, शरीर कष्ट भी होने की संभावना है । उपाय के रूप में शनिवार को तेल का दान किया करें ।

मिथुन

7 जून 2000 ईस्वी को वृष में शनि के प्रवेश से मिथुन राशि वालों की साढ़-सत्ती आरम्भ होगी । प्रथम चरण में साढ़-सत्ती का निवास मस्तक पर होगा जिस के प्रभाव से शरीर कष्ट, घरेलू परेशानियाँ आमदनी कम और खर्च अधिक रहने की संभावना है परन्तु संघर्ष मय समय होते हुये भी आप को हर काम में सफलता होगी, उपाय के लिए साढ़-सत्ती के आरम्भ होते ही वैष्णव रहने का व्रत लें तथा महादेव का ध्यान नित्य प्रति किया करें ।

मीन

इस वर्ष 7 जून 2000 ई. को मीन राशि वाले जातकों की साढ़-सत्ती समाप्त हो रही है फलस्वरूप वर्ष के यह तीन मास मीन राशि वालों के लिए हानिकारक ही सिद्ध होगें ।

ढैया

कन्या **तुला** **मकर** **कुम्भ**

कन्या तथा *मकर* राशि वाले जातकों की ढ़ैया इस वर्ष 7 जून 2000 ईस्वी को समाप्त हो रही है । यह तीन मास आप के लिए दौढ़-धूप के वातावरण में ही गुज़रेगा । शनि के कुप्रभाव को कम करने के लिए नित्य-प्रति भगवान शंकर का ध्यान किया करें ।

7 जून 2000 ईस्वी को वृष में शनि के प्रवेश से *तुला* तथा *कुम्भ* राशि वाले जातकों की ढ़ैया आरम्भ हो रही है । शनि के आठवें भाव में होने से यह *तुला* राशि वालों के लिए नौकरी या व्यापार तथा स्वासथ्य को प्रभावित कर सकता है। *कुम्भ* राशि वालों के लिए भी यह वर्ष संघष मय ही रहेगा क्योकि शनि का चौथे भाव में होना अशुभ ही माना जाता है ।

मास फल

विक्रमी २०५७ के लिए

चैत्र

चैत्र शुक्ल पक्ष से आरम्भ होने वाले वर्ष के प्रारम्भ में धान्य आदि पदार्थों के भावों में तेज़ी रहेगी । सोना, चाँदी, पीतल आदि के दामों में भी तेज़ी रहेगी । इस मास के अन्त में धान्य आदि सब सस्ता हो सकता है ।

वैशाख

कपास का भाव अधिक हो सकता है । रस वाले सभी पदार्थों में तेज़ी रह सकती है । धान्य आदि खाद्य चीज़ें सस्ती होंगी । क्षेत्रीय राजनीति के क्षेत्र में कुछ प्रदेशों में राजनैतिक अन्तर्कलह होने की आशंका है । इस मास में सूर्य का ताप भी अधिक होगा ।

ज्येष्ठ

इस मास का फल ज्योतिष दृष्टिकोण से उत्तम ही है। धान्य के भाव में सन्तुलन बना रहेगा पर शुक्ल पक्ष में भावों में तेज़ी होने की आशंका है । भारत के उत्तर और पूर्वी प्रातों में भीषण गर्मी होने की सम्भावना है । कहीं कहीं पर हैज़े का भी प्रकोप हो सकता है । कपास की खेती जिन प्रातों में की जाती है वे सावधान रहें हानि हो सकती है ।

आषाढ

इस मास के शुक्ल पक्ष में पंचमी तथा गुरुवार के योग से भारत के पश्चिमी क्षेत्रों में आँधी तूफान आने की सम्भावना है । इस मास का चन्द्र ग्रहण (16 जुलाई 2000) अनिष्ट फलदायक है ।

श्रावण

इस मास में धान्य आदि का भाव मंदा ही रहेगा । वर्षा के स्वामी बुध होने से भारत के सभी प्रातों में उत्तम वर्षा रहेगी । शुक्ल पक्ष सप्तमी को स्वाति नक्षत्र का योग प्रजा के लिए सुखदायक ही माना जा सकता है ।

भाद्र

धान्य आदि के भाव में अस्थिरता रहेगी परन्तु कपास (रूई) का भाव सस्ता रहेगा । रस वाले सभी पदार्थों के भाव में तेज़ी का रुख होगा । अधिक वर्षा से खेती को हानि हो सकती है ।

आश्विन

इस मास में शुक्ल पक्ष के मधय में धान्य, तेल, घी की कीमतों में तेज़ी रहेगी । कुछ प्रातों में प्राकृतिक आपदाओं का सामना प्रजा को करना पड़ेगा ।

कार्तिक

इस मास के कृष्ण पक्ष में धान्य की कमी हो सकती है पर शुक्ल पक्ष में सभी वस्तुयें भरपूर मात्रा में उपलब्ध रहेगी, रस वाले पदार्थ, धी, तेल, जैसी वस्तुओं में तेज़ी का रुख रह सकता है ।

मार्ग

इस मास में धान्य आदि का भाव मंदा होगा । कपास (रूई) का भाव भी सस्ता हो सकता है । रस, नमक, गेहूँ, चावल जैसे पदार्थों का भाव भी नरम रहने की आशंका है । भारत के उत्तर पूर्वी भागों में भारी हिमपात होने की सम्भावना है ।

पौष

इस मास में कहीं -कहीं भीष्ण अग्निकाण्डों या यातायात सम्बन्धित भीष्ण दुर्धटनायें होने की सम्भावना है। सोने चांदि के भावों में तेज़ी का रुख रहेगा, सर्दी का प्रकोप बड़ेगा । भारत का उत्तरी क्षेत्र भीष्ण शीत लहर की चपेट में रहेगा ।

माघ

धान्य आदि का भाव- इस मास में मंदा रहेगा । अन्न की उपज उत्तम ही रहेगी । रूई और गेहूँ का भाव भी तेज़ रहेगा पर मास के अन्त में बाज़ार में नरमी का रुख रहेगा ।

फाल्गुन

इस मास में खेती की उपज अच्छी लेकिन कहीं-कहीं रेली लगने से फसल की हानि हो सकती है । फिर भी अन्नोत्पति उत्तम ही होगी । रस, घी जैसी वुस्तुयें मंहगी होने की संभावना है ।

चैत्र

इस पक्ष में धान्य आदि के भाव में नरमी का रुख रहेगा । तेल, वस्त्र, कपास, रस वाले पदार्थ मंहगे होने की आशंका है । पीत वर्ण वाली वस्तुएँ महंगी हो सकती है ।

नोट :

स्थूल और सूक्ष्म गणित में अन्तर आना स्वभाविक है। कम्प्यूटर प्रणाली द्वारा क्रास चक किये जाने पर यह अन्तर और स्पष्ट हो जाता है।

इस वर्ष *माघ कृष्ण पक्ष षष्ठी अथवा सप्तमी* में से तिथि के क्षय का निर्धारण करना स्वल्पान्तरण प्रक्रिया से ही संभव है, क्योंकि इस दिन जम्मू के अक्षांश पर किरण वक्री भवन रहित (Correction for Refraction) कैन्द्रिक सूर्योदय प्रात: 7 बजे 38 मि. तथा 2 सकेंड (≅7:38) आता है। अत: स्वल्पान्तरण प्रक्रिया (Rounding off truncations) के प्रयोग से *माघ कृष्ण पक्ष सप्तमी* का क्षय ही समुचित है।

सम्पादक



Vijayeshwer Jantrie

॥ ओ३म् ॥

Owned by : Vijayeshwer Jyotish Karyalay (Regd.)
Editor : **Dr. Manmohan Jyotshi**
Publisher : **Puneet Jyotshi** for and on behalf of,
Vijayeshwer Jyotish Karyalay
Printed by : Lakshmi Printing Works, Delhi-6
Published from : Vijayeshwer Jyotish Karyalay Bhori Patta,
Chungi (Near Matador Stand) Jammu-180002
 : 0191-552625

जन्मदिन पूजा विधि

प्रातःकाल स्नान करें। नये अथवा स्वच्छ वस्त्र धारण करें। पवित्र आसन इस प्रकार बिछायें कि बैठने पर आप का मुख पूर्व दिशा की ओर रहे। एक थाली में साफ चावल, नमक तथा दक्षिणा सजा कर रखें। नया यज्ञोपवीत (जनेऊ), सात गाँठ लगा हुआ नारीवन, अर्घ्य, पुष्प, धूप, तिलक (संभव हो तो केसर का) थोड़ा सा दूध और दही, स्वच्छ जल से भरा पानी का लोटा, एक खाली थाली और एक दो कटोरियाँ आसन पर तैयार रखें। पवित्र या अंगूठी अथवा दर्भ के दो तिनके भी रखें। पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें, रत्नदीप और धूप जलायें। नया यज्ञोपवीत (जनेऊ) धोते हुए गायत्री मन्त्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियोयो नः प्रचोदयात्

तीन बार पढ़े। फिर इसे गले में डालते हुए पढ़ें

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्, आयुष्यं अग्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं। बलमहतु तेजः, यज्ञोपवीतं असि यज्ञस्यत्वा उपवीतेन उपनह्यामि।

इसके बाद पढ़ें

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्याये सर्व-विघ्नोपशान्तये।।
अभिप्रेतार्थ-सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरैर्-अपि। सर्व-विघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः।

गुरुब्रह्म गुरु विष्णु गुरु साक्षात् महेश्वरः। गुरुरेव जगत् सर्वम् तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

पानी की छीटें (लवह) हृदय और मुख को छिड़कते हुए पढ़ें

तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति। मा नः शंसे अररुषो धूर्ति :

प्राणङ्. मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते

अनामिका उंगली में पवित्र या अंगूठी या दर्भ के दो तिनके या कोई फूल धारण करके अपने आप को अर्घ्य और फूल लगाते हुए पढ़ें ।

परमात्मने पुरुषोतमाय पंचभूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः

रत्नदीप और धूप को तिलक, अर्घ्य और पुष्प अर्पण करें। सूर्य भगवान का ध्यान करते हुए तिलक, अर्घ्य और फूल अर्पण करते हुए पढ़े।

नमो धर्म-निधानाय नमः स्वकृतसाक्षिणे। नमः प्रत्यक्षदेवाय श्री भास्कराय नमो नमः।

खाली रखी हुई थाली में नारीवन को रखें और उस पर कटोरी से जल की धारा डालते हुए पढ़ें

यत्रास्ति-माता न पिता न बन्धु-र्भ्रातापि नो यत्र सुहृत्-ज्जन्श्च न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रि-स्तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय-आधारशक्त्यै धूपदीपसङ्.-कल्पात् सिद्धिर्-अस्तु धूपो नमः दीपो नमः ।।

कटोरी में जल डालें और उसमें तिलक और पुष्प डालते हुए पढ़ें

सं वः सृजामि हृदयं, संसृष्टं मनो अस्तु वः, संसृष्टः तन्वः सन्तु वः, संसृष्टः प्राणः अस्तु वः, संयावः प्रियास्तन्वः, संप्रिया हृदयानि वः। आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियस्तन्वो मम।

अब इस कटोरी में रखा हुआ जल नारीवन पर डालते हुए पढ़ें

अश्विनोः प्राणस्तो ते प्राणं दत्तां तेन जीव। बृहस्पते प्राणः सते प्राणं ददातु तेन जीव जन्मोत्सव देवताभ्यः जीवादानं परिकल्पयामि नमः।

चावल के साथ दर्भ के दो तिनके या दो फूल हाथ में रखते हुए तीन बार गायत्री मन्त्र पढ़ें

ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितु वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

ॐ जन्मोत्सव देवतानां अर्चाम् अहं करिष्ये ॐ कुरूष्व

हाथ में लिए हुए फूल या दर्भ आदि निर्माल्य में डालें। पुनः नारीवन के सामने दो पुष्प डालते हुए पढ़ें

सप्तजन्मोत्सव देवतानां आसनं नमः

हाथ में चावल सहित दर्ग या फूल लें और फिर कन्धों से सिर्फ चावल फैंकते हुए पढ़ें।

सप्तजन्मोत्सव देवताभ्यः युष्मान् पूजयामि ॐ पूजय

दो फूल हाथ में पकड़ते हुए पढ़ें

सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिम् विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठत् दशांगुलम् जन्मोत्सव देवताः आवाहयिष्यामि ॐ आवाहय ।

पहले से रखे हुए दर्भ के दो तिनके निर्माल्य में डालकर नारीवन पर फूल डालते हुए तीन बार पढ़ें

भगवन् पुण्डरीकाक्ष भक्तानुग्रह कारक अस्मत् दयानुरोधेन सन्निधानं कुरू प्रभो।

अपने दोनों कन्धों के ऊपर चावल फैंक कर प्राणायाम करें। फिर कटोरी में जल डालते हुए पढ़ें

पाद्यर्थम् उदकम् नमः शन्नो देवीरभिष्ठय आपो भवन्तु पीतये। शंयोर अभिस्नवन्तु नः ।

फ़ूल, दूध, तिलक, दर्भ तथा जल कटोरी में डालकर नारीवन पर यह सब मिश्रण डालते हुए पढ़ें

अश्वत्थामने बलये व्यासाय हनुमते कृपाचार्याय मार्काण्डेयाय परशुरामाय सप्तचिरजीवेभ्यः पाद्यं नमः

कटोरी में बचा हुआ मिश्रण निर्माल्य में डालें। दुबारा कटोरी में पानी डालते हुए पढें

शन्नो देवीर् अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये। शंयोर् अभिस्नवन्तु नः

दूध, दही, जल, घी, तिलक़, चावल और दर्भ कटोरी में डालें और यही मिश्रण नारीवन पर डालते हुये पढ़ें

अश्वत्थामन् बले व्यास हनुमन् कृपाचार्य मार्काण्डेय परशुराम सप्तचिरजीविनः इदं वो अर्घ्य नमः

केवल पानी डालते हुए पढ़ें

प्रजापते जन्मोत्सव देवताभ्य: आचमनीयं नमः

दूध, जल, अर्घ्य और पुरुष आदि का मिश्रण डालते हुए पढ़ें

तद्विष्णोः परमं पंद सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुराततम् तत् विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत् परमं पदम्। प्रजापति जन्मोत्सव देवताभ्यः स्नानं नमः।

किसी अन्य कटोरी में नारीवन के लिए आसन फूलों से बनाते हुए पढ़ें

आसनाय नमः गरूडासनाय नमः पद्मा-सनाय नमः शतदल-पद्मा-सनाय नमः, सहस्त्रदल-पद्मासनाय नमः। किमासनं ते गरुढासनाय, किं भूषणं कौस्तुभ-भूषणाय, लक्ष्मीकलत्राय, किम्-अस्ति, देयं-वागीश किं ते वचनीयम्-अस्ति।।

नारीवन को आसन पर बिठाते हुये पढ़ें :- **उत्तिष्ठ भगवन् विष्णो उत्तिष्ठ कमलापते। उत्तिष्ठ त्रिजगन्नाथ! त्रैलोकी मंगलं कुरु।।**

नारीवन के सात गांठो को तिलक लगाते हुये पढ़े :-

अश्वत्थाम्ने, बलये, व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय मार्काण्डेयाय परशुरामाय सप्तचिर-जीवेभ्यः समालभनं गन्धो नमः।

इन्ही सात नामों का उच्चारण करते हुये नारीवन पर अर्घ्य और पुष्प चढ़ाते हुये पढ़े:-

अश्वत्थामने बलये व्यासाय हनुमते कृपाचार्याय मार्कण्डेयाय परशुरामाय सप्तचिर जीवेभ्य: अर्घो नमः पुष्पं नमः

रत्नदीप और धूप नारीवन के इर्द-गिर्द घुमाते हुए (आलहनाव) पढ़ें

तेजसो शुक्रमसि ज्योतिरसि धामसि प्रियं देवानाम अनादृष्टं देवयजनं देवताभ्यस्तवा देवताभ्यो गृहणामि यज्ञेभ्यस्त्वा यज्ञिभ्यो गृहणामि जन्मोत्संव देवताम्यः रत्नदीपं कर्पूरं च परिकल्पयामि नमः

नारीवन को नमस्कार करते हुए पढ़ें

जय नारायण जय पुरुषोत्तम जय वामन कंसारे, उद्धर मामसुरेशविनाशिन् पतितोहं संसारे। घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं, माम् - अनुकम्पय दीनम्- अनांथ कुरु भवसागरपारम् । १। जय जय देव जयासुर सूदन जय केशव जय विष्णो। जय लक्ष्मीमुख-कमलमधुव्रत जय दशकन्धरजिष्णो घोरं हर० ।२। यद्यपि सकलम् अहं कलयामि हरे नहि किम्-अपि स सत्वम् । तत्-अपि न मुञ्चति मामिदम् - अच्युत पुत्रकलत्र ममत्वं घोरं हर० ।३। पुनर् - अपि जननं पुनर् - अपि मरणां पुनर् - अपि गर्भनिवासम्। सोढुम् - अलंपुनर् - अस्मिन्माधव माम्-उद्धर निजदासम् घोरं हर० ।४। त्वं जननी जनकः प्रभुर् - अच्युत त्वं सुहृत् - कुलमित्रम् । त्वं शरणां शरणागतवत्सल

त्वं भवजलभि - वहित्रं घोरं हर० ।५। जनक-सुतापति-चरण-परायण शंकर-मुनिवरगीतं धारय मनसि कृष्णपुरुषोत्तम् वारय संसृतिभीत्तिम् घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं-माम्-अनुकम्पय-दीनम्-अनार्थ कुरुभव-सागर-पारम् ।६। भगवते वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाया सप्तजन्मोत्सव देवताभ्य: चामरं छत्रं परिकल्पयामि नमः

नारीवन पर फूल चढ़ाते हुए पढ़ें

ध्येयं सदा परिभवहनम् अभीष्टदोहं तीर्थास्पदं शिव विरञ्चि नुतं शरण्यम्। भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं। वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्

नारीवन को नमस्कार करते हुए पढ़ें

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा च अष्टांग-नमस्कारं करोमि नमः ।

कटोरी में थोड़ा दूध, शहद, या खाण्ड रख कर अर्पण करते हुये पढें

वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय प्रजापति-जन्मोत्सवदेवताभ्य: मात्रामधुपर्क ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः ।

नारीवन पर दक्षिणा डालते हुये पढें:- **जन्मोत्सव देवताभ्य: दक्षिणायै तिल हिरण्य रज़त निष्कर्ष ददानि।**

फिर से दक्षिणा अर्पण करते हुये पढ़े

एता देवता: सदक्षिणान्नेन प्रीयन्तां प्रीता: सन्तु।।

फूल चढ़ाते हुये पढ़ें :-

उों तद्विष्णोः परम पदं सदापश्यन्ति-सूरयः दिवीव चक्षुर्-आततम्। तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम्।

अब नैवेद्य तहर या क्षीर थाली में लाकर एक पात्र मे अलग चटू और पांच म्यचियाँ रखें, नैवेद्य के साथ ही मिसरी भी रखें। नैवेद्य की थाली को दोनों हाथों से पकड़कर सारा प्रोप्पुन पढ़ें।

आज्ञा मांगते हुये पढें:-

आज्ञा मे दीयतां नाथ नैवेद्यस्यास्य भक्षणे। शरीरयात्रा सिद्ध्यर्थं भगवन् क्षन्तुम अर्हसि।।

नारीवन पर पुष्प चढ़ाते हुए पढ़ें

आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा। भगवंस्त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणा-गतम्।

पवित्र निकालकर दाईं कलाई में नारीवन बांधिए। चटू को बाहर कही साफ स्थान पर रखें। निर्माल्य को नदी या पेड़ के नीचे डालकर नैवेद्य के साथ दही, मिश्री या चीनी दाईं हथेली में रखकर मुँह में डालते हुए पढ़ें।

माकार्डण्डेय नमस्तुभ्यं सप्तकल्पान्त जीवन, आयुर्-आरोग्य सिद्ध्यर्थं प्रसीद भगवन् मुने। मार्काण्डेय महाभाग सप्तकल्पान्त-जीवन, चिरन्जीवी यथा त्वं तु मुनीनां प्रवरद्विज, कुरुष्व मुनिशार्दूल, तथा मां चिरजीविनम्।।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे,

भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे, ॐ जय जगदीश हरे

जो ध्यावे फल पावे दुःखविनशे मन का

सुख सम्पत्ति घर आये कष्ट मिटे तन का, ॐ जय जगदीश हरे

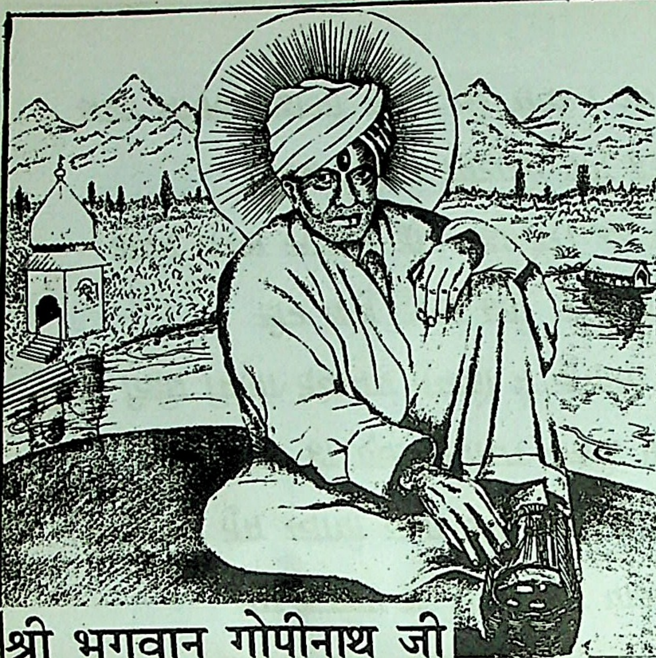
मात पिता तुम मेरे शरण पड़ों किसकी

तुम बिन और न दूजा आस करूँ जिसकी ।। ॐ जय जगदीश हरे

तुम-पूरण-परमात्मा तुम अन्तर्यामी

पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी। ॐ जय जगदीश हरे

तुम-करुणा के सागर तुम पालन कर्त्ता
मैं सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्त्ता। ॐ जय जगदीश हरे
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति
किस विधि मिलों दयामय तुमको मैं कुमति। ॐ जय जगदीश हरे
दीन बन्धु दुःख हर्ता रक्षक तुम मेरे
अपने चरण लगावो द्वार पड़ा तेरे। ॐ जय जगदीश हरे
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा । ॐ जय जगदीश हरे।



श्री भगवान गोपीनाथ जी

आरती

१ भावॅ सान लोला भरिव सत् ग्वरॅसॅय
भगवान बबसॅय करिव प्रणाम ।
भावॅ सान लोला भरिव सत् ग्वरॅसॅय
भगवान बबसॅय करिव प्रणाम ॥

२ ज़न्मा दोर तम्य हारॅ जूनॅ पछिसॅय
त्यथ आस बाह ब्ययि भार्गववार ।
1898 ईस्वी सन् सॅय
भगवान बबॅसॅय कॅरिव प्रणाम ॥

३ हारॅमाल माता आयि वौलसनसय
नाराण बबॅनॅय बोर क्याह लोल
मान तॅम्य कॅरनय सॉत्य सिद्धार्थसय
भगवान बबॅसय करिव प्रणाम ।

४ बालक्रीड़ा करॅन मंज़ भानमॅससॅय
घरॅसयि मंज़ तस ओस वैराग ।
त्यॉगिथ सोरुय छ़ाँडॉन शिवसय
तस त्यागशीलसॅय करिव प्रणाम ॥

५ जायि जायि छाँडान ओस सद् ग्वरॅसॅय
कर दियम दर्शुन बन्यम अनुग्रह ।
अभिलाष पूरॅ गव तस साधुशीलॅसॅय
तस निष्कामसॅय करिव प्रणाम ।।
६ साफा बबस ओस प्यठ मस्तकसॅय
तनि प्यठ फ्वरना ओस शूभान ।
सोऽहं सोऽहं बबस ओस मनसॅय
तस स्थिर मनसय करिव प्रणाम ।।
७ दोहन तॅ रॉचुन लॅगिथ उपवाससॅय
केवल चिलमा ऑस ज़ोतान ।
ॐ शब्द मोहरा बबस प्ययि मनसय
तस अवधूतॅ सॅय करिव प्रणाम ।।
८ शुद्ध मन भक्ति-भाव लगान यज्ञसॅय
धून्या ब्रोंठकनि शोलॅ मारान ।
देवता ति प्रारान हवन बॉग्यसॅयि
तस यागशीलसॅय करिव प्रणाम ।।
९ आव यलि संकट कश्यप प्रान्तसॅय
योगाग्नि [illegible] ।

अद्वैत ऑसिथ लॅगिथ कर्मयोगॅसॅय
योगाभ्यासियस करिव प्रणाम ।।
१० खबरा न्यबर गयि कश्मीर प्रान्तसॅय
गोपी भगवान गॅय निर्वाण ।
निर्लोभ निष्काम सायंकालसॅय
ध्यानेश्वरसॅय कॅरिव प्रणाम ।।
११ ज़्येठॅ द्वयि भोमवारि जूनयपछिसॅय
मृगशिर निछतुर ओस चमकान ।
1968 ईस्वी सनॅसॅय
निर्वाणशीलसॅय कॅरिव प्रणाम ।।
१२ भखॅत्य आयि लारान तोत हा दर्शनसय
अशि कनि मोख्तय ऑस्य हारान ।
आरती लोलॅ सान कॅरॅख यूगीश्वरसॅय
ब्रह्मस्वरूपसॅय कॅरिव प्रणाम ।।
१३ क्याह करन कर्म तस कर्मातीतसॅय
हृदयस मंज़ यस ओस सोऽहम ।
जूत्य गॅयि मीलिथ ज्योतिस्वरूपसॅय
जीवनमुक्तसॅय [illegible] करिव प्रणाम ।

१४ कति ऑस्य धर्नॅ तॅ द्वार तस निर्लोभसॅयि।
लक्ष्मी ब्रोंठकनि कान तस वास ।
कन कर्यम कृपा दियम म्य दानसॅय
तस दानॅशीलसॅय करिव प्रणाम ।।
१५ पीठा वुन्नक्यन तस पीठेश्वरसय
वैखुरी यारय क्याह शूबान ।
कृपा बबसंज़ विश्व-मंडलॅसॅय
भगवत्रूपसॅय करिव प्रणाम ।।
१६ वर्णन क्याह करव तस गुणातीतसॅय
युस ओस निर्लोभ ब्ययि निर्गुण ।
नमो नम: बबसॅन्दिस गुप्तय तपसॅय
कर्मातीतसॅय कॅरिव प्रणाम ।।
१७ गुरु संज़ अस्तुति स्वरि युस मनसॅय
तस् कति पोरिय यम सुन्द भय ।
कॅह न स तार छय तस म्वकलनसॅय
भगवान बबसॅय कॅरिव प्रणाम् ।।
भावॅ सान लोला भरिव सद्ग्वरॅसॅय
[illegible] करिव प्रणाम ।

संसारे भारतं सारं तत्रापि च हिमालम् । तत् मध्येच काश्मीरं तत्रापि च विजयेश्वरम् ॥



आद्य सम्पादक

स्व. ज्यो. आप्ताभ शर्मा





कार्यालय संस्थापक

स्व. काशीनाथ ज्योतिषी

विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय (रजि.)

कार्यालय:- बोहड़ी पट्टा, चुंगी, (समीप मैटाडोर स्टैण्ड)
जम्मू-180002

निवास:- अजीत कालौनी, गोल गुजराल, जम्मू

दूरभाष:- 0191-552625